|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||

|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

# शाश्वत धर्म


संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | जुलाई-2021

दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

श्री जयंतसेन म्युजियम (श्री मोहन खेड़ा तीर्थ) का अवलोकन करते हुए तेरापंथ स्थानकवासी समुदाय के प्रखर आचार्य श्री महाश्रमणजी म. एवं समण समुदाय। उन्हें जयंतसेन साहित्य भेंट किया गया।

## चातुर्मास प्रवेश :

- 19 जुलाई 2021 जालोर (राज.) पूज्य गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा।
- 20 जुलाई 2021 श्री भांडवपुर तीर्थ (राज.) पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा।

# विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, नैनावा (गुजरात)
10. श्री जैन श्वे., त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
11. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
12. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला– जालोर (राज.)
13. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला– रतलाम (म.प्र.)
14. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा म.प्र.)
15. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
16. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

## हमारे गौरव

दूदसीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

### राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

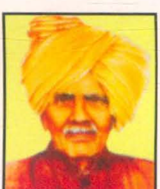

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

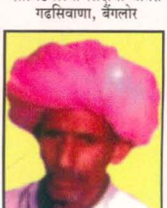

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

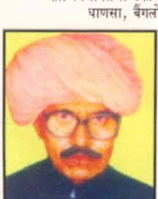

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

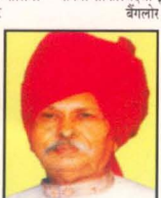

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

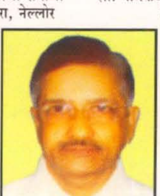

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

# हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

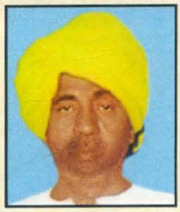

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

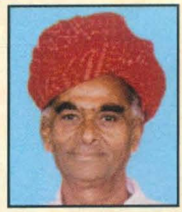

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

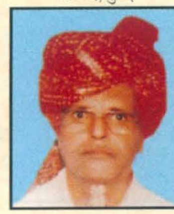

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

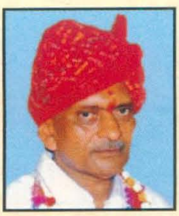

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

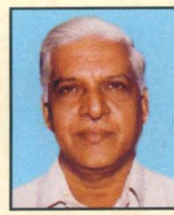

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शाा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

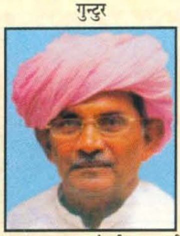

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

36173

# हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

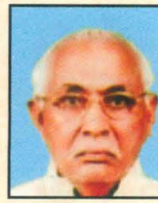
श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

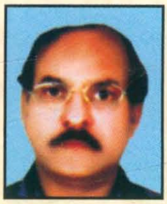
श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

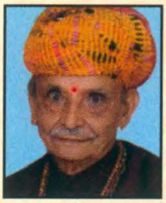
स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

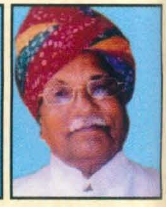
सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

# हमारे गौरव

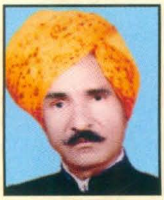
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

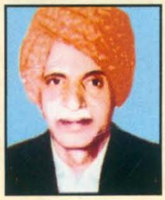
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

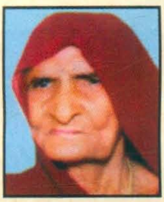
पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

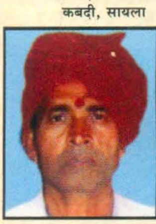
श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

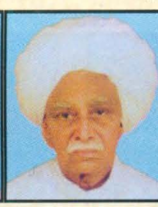
शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

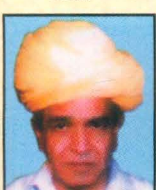
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

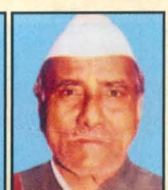
दलाल स्व. श्री बाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

# हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

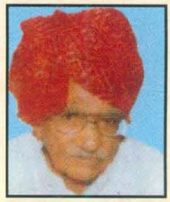

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

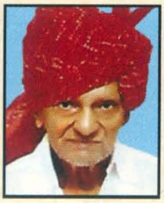

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

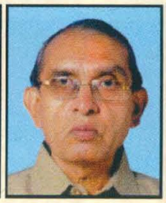

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

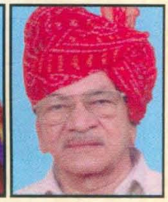

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

## गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

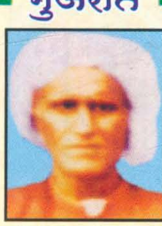

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

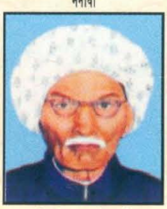

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

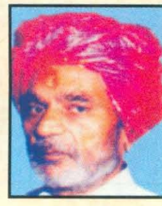

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

# हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

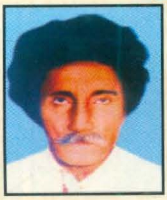
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

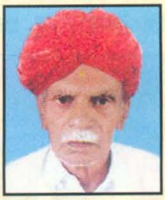
श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

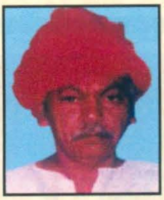
अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

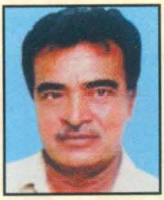
श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

## मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

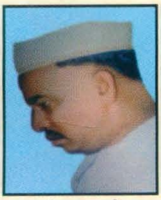
श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

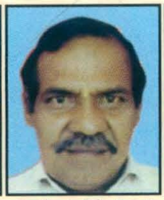
श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

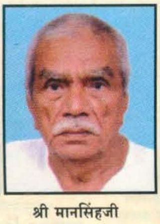
श्री मानसिंहजी
राजगढ़

स्व. श्री कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

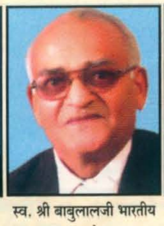
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

# हमारे गौरव

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

स्व.श्री रितेशकुमार
शांतिलालजी डुंगरवाल, इन्दौर

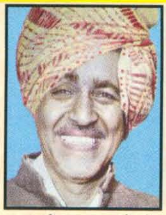

स्व.श्री सागरमल भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

स्व.श्रीमती चन्द्रकान्ता
सागरमलजी भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

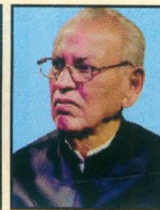

समाज गौरव
श्री शांतीलाल सकलेचा
रानापुर

## कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

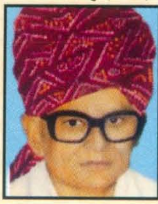

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मैंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मैंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कवदी, बीजापुर (कर्नाटक)

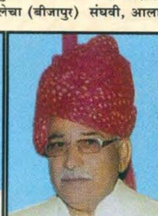

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

।। विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ।।


धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
जुलाई 2021 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 69 अंक 6
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं. 109 विक्रम सं. 2078

| | | |
|---|---|---|
| इस अंक का मूल्य | - | 15 रु. |
| एक वर्ष का शुल्क | - | 150 रु. |
| पांच वर्ष का शुल्क | - | 600 रु. |
| दस वर्ष का शुल्क | - | 1100 रु. |



शाश्वत धर्म संचालन समिति

| | |
|---|---|
| श्री शांतिलाल रामानी | (संयोजक) |
| श्री रमेशभाई धरू | (परिषद अध्यक्ष) |
| श्री सुधीर लोढ़ा | (महामंत्री) |
| श्री ओ.सी. जैन | (न्यासी) |
| श्री विनोद संघवी | (न्यासी) |
| आदि | |



भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम


प्रेरक प्रसंग

## तपस्या में भी माया रखने से वैसा बंध हुआ

छहों मित्रों ने महाबल मुनि से कहा-

'आप जो तप करेंगे, वही तप हम भी उसी दिन रखेंगे।'

'सर्वश्रेष्ठ ! मैं बराबर आपको बताता रहूंगा।'

लेकिन महाबल मुनि को माया सूझी। वे अपने साथियों से छिपा कर भी तप करने लगे। कोई बहाना बनाकर जैसे सभी उपवास करते, वे चुपचाप छट्ठ कर लेते थे। तपस्या से शुभ कर्मों का बंध हुआ लेकिन इस माया के कारण स्त्रीवेद का बंध किया।

पश्चिम महाविदेह क्षेत्र के वीतकोशा नगर में महाबल राजा का राज्य था। उसके छह और मित्र थे। सभी में घनिष्ठता थी तथा साथ रहते थे। सातों ने दीक्षा ले ली।

महाबल मुनि के कहे अनुसार सभी चलते थे लेकिन महाबल मुनि के मन में कपट उत्पन्न हो गया। वे सभी से ज्यादा तपस्या करने लगे। उनने बीस स्थानक तप की आराधना कर तीर्थंकर नाम कर्म का बंध किया, लेकिन माया से तपस्या के कारण स्त्रीवेद का बंध हुआ। सातों की मृत्यु के बाद उनने जयंत नामक अनुत्तर विमान में जन्म लिया। वहाँ से सभी मनुष्यलोक में आये।

छह मित्रों का जन्म साकेतनगर, अंगदेश, कुणालदेश, काशी, कुरू तथा पांचाल में हुआ वे इनके राजा बने लेकिन तीर्थंकर मौन का बंध होते हुए भी माया से तपस्या करने के कारण महाबल का जीव विदेह देश में मिथिला नगरी के कुंभ राजा की प्रभावती रानी से पुत्री के रूप में जन्मा जिनका नाम रखा गया। मल्लीकुमारी

– सुरेन्द्र लोढ़ा

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | यतीन्द्रसूरि वचनामृत | 09 |
| 2. | तंत्र-मंत्र साधना | 10 |
| 3. | प्रवचन ( श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.) | 11 |
| 4. | संपादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा) | 13 |
| 5. | होनी तो होकर रहे (आचार्यश्री भद्रगुप्तसूरीश्वरजी म.सा.) | 15 |
| 6. | पूर्णतः आध्यात्मिक उपासना पद्धति है प्रतिक्रमण (शान्तिलाल सगरावत) | 17 |
| 7. | चिन्तन का चित्रांकण (गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.) | 19 |
| 8. | 'श्री' का महात्मय (श्री शांतीलाल कवाड) | 20 |
| 9. | उत्तम आहार - शाकाहार (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.) | 22 |
| 10. | अध्यक्षीय पाती (श्री वाघजीभाई वोरा) | 23 |
| 11. | अध्यक्षीय संदेश (श्री रमेशभाई धरू) | 24 |
| 12. | जैन दर्शन की तात्विक कुंजी तत्वार्थ सूत्र (श्री बी.एल. आच्छा) | 25 |
| 13. | तीर्थंकर - तारेश(2) (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.) | 27 |
| 14. | सच्चाई के सर्वोत्कृष्ट सिद्धान्त | 28 |
| 15. | गणधरवाद ( श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.) | 31 |
| 16. | श्री नवकार कल्पद्रुम (मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.) | 33 |
| 17. | काउस्सग्ग (श्री सुरेन्द्र कुमार गंग) | 35 |
| 18. | जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.) | 36 |
| 19. | श्री जयंतसेन जयनाद (मुनि श्री प्रसमसेनविजयजी म.सा.) | 37 |
| 20. | स्मृति सुमन (डॉ. कोकिला भारतीय) | 41 |
| 21. | किस्मत की बात ( श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.) | 43 |
| 22. | जैनों की घटती जनसंख्या की समस्या (जैन जसराज देवड़ा) | 45 |
| 23. | सेहत शाश्वत | 47 |
| 24. | जातिवाद का जहर फैलाने वाला 'अनूप मण्डल' (श्री उत्तम डामराणी जैन) | 49 |
| 25. | आत्मिय निवेदन | 50 |
| 26. | प्रियदर्शी बिगुल बजाना है (श्री कुलदीप पारदर्शी) | 51 |
| 27. | गुजराती संभाग | 52 |
| 28. | कुमकुम सने पगलिये | 68 |
| 29. | परिषद प्रांगण से | 78 |
| 30. | श्री संघ सौरभ | 81 |
| 31. | जैन विश्व | 90 |
| 32. | शाश्वत धर्म के संरक्षक | 91-92 |

## यतीन्द्रसूरि वचनामृत

# मनुष्य के उद्देश्य अच्छे हों

(व्याख्यान वाचस्पति स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.)

● शारीरिक व्याधियों को मिटाने के लिये अच्छे विचारों के अतिरिक्त कोई अन्य औषधी नहीं है। शोक और दुःख को मिटाने के लिये नेक नियती से बढ़कर कोई चीज नहीं है। दूसरों के साथ ईर्ष्या करना और ऐसे ही अन्य कुविचारों में डूबे रहना मानों अपने हाथों से अपने जीवन को नष्ट करना है। सबका भला चाहना, सबको अपनाना और उनके उत्तम गुणों पर अनुराग रखना इस प्रकार के विचार शान्ति और सुख के स्रोत हैं। प्रत्येक जीव के विषय में मैत्री रखना, उनके हित का चिन्तन करना सुखमय जीवन को प्राप्त करने का सच्चा उपाय है। अगर तुम शरीर की रक्षा चाहते हो तो मन को वश में रखो, उसको जीवन देना हो तो मन सुन्दर कर लो। मत्सरता, द्वेष, निरुत्साह और निराशा के विचार स्वास्थ्य और सौन्दर्य का नाश करते हैं। जीवन में सुख और सफलता प्राप्त करने के लिये सबसे पहली आवश्यकता है कि मनुष्य के अच्छे उद्देश्य होना चाहिये। बिना सदुद्देश्यों के कोई काम न होकर जीवन दुःख-अशान्ति से व्यतीत होगा। नियमानुसार काम करने से शक्ति और योग्यता बढ़ती है और मन को वश में रखने से बल और आनन्द मिलता है।

● जिस जाति में पहले से ही अच्छे संस्कार होते हैं वह पतित हो जाने पर भी उसमें किसी एक अच्छे संस्कार की वासना विद्यमान रहती है और वह उसकी पूर्व सभ्य-संस्कारिता को पतितावस्था में भी कायम रखती है। छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के आसपास के जंगलों में कमारजाति बसी हुई है जो द्राविड वंशियों की एक शाखा जाति है। इस जाति में मासिक धर्म आने के समय स्त्री आठ दिन तक अशुद्ध रहती है। इस अवस्था में स्त्री केवल घर को साफ-सूफ या लीपपोत सकती है, किन्तु वह न तो भोजन बना सकती है और न पानी भर सकती है। रात में वह जमीन पर सोती है और सवेरे उठ कर सोने के स्थान को गोबर से लीप देती है। इस जाति का विश्वास है कि यदि पति रजस्वला पत्नी का स्पर्श भी करेगा तो कुलदेव उसका सर्वनाश कर देंगे। पुत्रजन्म के ढाई तथा कन्याजन्म के तीन महिना तक जन्मदातृ न तो पानी ला सकती है और न भोजन बना सकती है। ◆◆◆

# सुशील वाणी : बीज मंत्रों का महत्व

सृष्टि में बीज का बहुत महत्व है। एक छोटा-सा बीज सारी सृष्टि को हराभरा कर देता है। विशाल वट वृक्ष को तैयार कर देता है। वृक्षों से फल और फूल मिलते हैं। इसी तरह से मंत्रों में बीज मन्त्र का सर्वाधिक महत्व है।

बीज मन्त्र में अपार संभावनाएं निहित होती हैं। बीज मन्त्र से इस लोक और परलोक की सिद्धि प्राप्त होती है। संसार में मन्त्र तो बहुत हैं। अलग -अलग मन्त्र अलग-अलग फल देते हैं। जिस तरह से टेलिफोन का एक नम्बर भी गलत हो जाये तो बात नहीं हो सकती है। इसी तरह से बीज मन्त्र का सही तरह से प्रयोग सिद्ध किया जाता है। बीज अक्षरों से मन्त्र परिपूर्ण और जल्दी सिद्ध होता है। ये बीज मन्त्र हमारे शरीर के भीतर के सात चक्रों को ही नहीं बल्कि पूरे ब्रह्माण्ड को प्रभावित करते हैं ।

| बीज मंत्र | दिशा | रंग | लाभ |
|---|---|---|---|
| दं | पूर्व | पीला | शत्रु दमन, सुरक्षा, स्वास्थ्य |
| क्रीं | उत्तर | लाल | स्वास्थ्य, लाभ |
| श्रौं | उत्तर | लाल | पराक्रम, सर्व रक्षा |
| ह्रौं | उत्तर | सफेद | अकाल मृत्यु |
| ह्रीं | पूर्व | लाल | सुरक्षा, पराक्रम, कृपा |
| गं | उत्तर | हरा | सर्व विघ्न निवारण के लिए |
| ऐं | पूर्व उत्तर | सफेद | बौद्धिक ज्ञान |
| क्लीं | पूर्व | लाल | सर्व कार्य सिद्धि |
| श्रीं | उत्तर | लाल | धन-संपत्ति, सुख |

## प्रयोग

इन मंत्रों को होली, अक्षय तृतीया, विजयादशमी और दीपावली वाले दिन सिद्ध किया जाता है। अलग-अलग मंत्रों का अलग-अलग मालाओं से जप करना विशेष महत्व रखता है। ◆◆◆

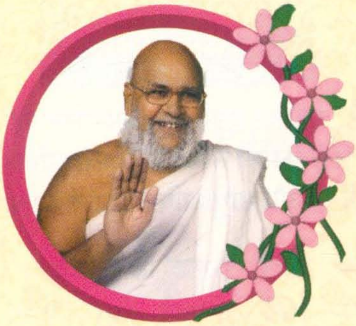

प्रवचन

# अन्य का कभी अपमान मत करो

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
**श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

अभिमान आँखों पर ऐसी पट्टी लगा देता है कि अभिमानी को अपने अतिरिक्त और कोई व्यक्ति दिखाई ही नहीं देता। वह एक प्रकार से अंधा हो जाता है- आँखों वाला अंधा।

विचार करने पर पता चलता है कि अभिमानी दो प्रकार के होते हैं। जो यह सोचते हैं कि दूसरों की सहायता पाये बिना हम अकेले अपना काम बखूबी चला सकते हैं, वे एक प्रकार के अभिमानी हैं। दूसरे प्रकार के अभिमानी वे, जो यह सोचते हैं कि हमारे बिना दूसरों का काम चल ही नहीं सकता, हमसे यह दुनिया है, दुनिया से हम नहीं।

पहले प्रकार के अभिमानी, दूसरे प्रकार के अभिमानी से कुछ हल्के दर्जे के हैं। पहले प्रकार के अभिमानियों से जगत का उतना नुकसान नहीं होता, जितना दूसरे प्रकार के अभिमानियों से हो सकता है। अभिमानी अंधे होते हैं, इसका एक प्रमाण यह कहा जा सकता है कि जब वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे होते हैं, तब उनके आगे-आगे चलने वाले नौकर-चाकर चिल्लाया करते हैं, हटो-हटो !

अभिमानी दूसरों के अपमान करने का कोई अवसर नहीं चूकते। वे भूल जाते हैं कि अभिमानी के अपमान की धार ऑपरेशन से भी तेजी होती है-

**Insult is more then operation.**

एक यहूदी धर्मग्रंथ के अनुसार लोगों के सामने किसी का अपमान करना, उतना ही बड़ा पाप है, जितना किसी का खून कर देना ।

मनुष्य बड़े से बड़ा कष्ट सह सकता है, परन्तु अपमान नहीं सह सकता। आदरणीय व्यक्ति को अपमान का कष्ट मृत्यु से भी अधिक असह्य लगता है।

सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ।। - गीता

मनुष्य की शोभा, यश और पौरुष उसके सम्मान पर ही निर्भर होते हैं। मानहानि होने पर ये सब नष्ट हो जाते हैं, अपमानित होकर जीने की अपेक्षा गौरवशाली पुरुष मरना अच्छा मानते हैं, क्योंकि मृत्यु का दुःख थोड़ी देर के लिए होता है, परन्तु अपमान का दुःख प्रतिदिन होता है।

वरं प्राणपरित्यागो, मानभंगेऽपि जीवनात् ।
मृत्योर्हि क्षणिकं दुःखं, मानभंगाद् दिने दिने ।।

स्वाभिमानी पुरुष अपमान के दुःख को समझता है, इसलिए दूसरों को अपमानित नहीं करता और स्वयं भी अपमान से बचता है, अर्थात् अपमान के कारणों से बचता है। स्त्री अधिक दिनों तक पीहर में रहे, पुरुष अधिक दिनों तक ससुराल में रहे और साधु अधिक दिनों तक एक ही स्थान पर रहे तो अपमानित होता है।

स्त्री पीहर नर सासरे, संजमियो थिरवास।
ए होवे अणखावणा, करताँ अधिक निवास ।।

यदि हम बराबर अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहें तो कोई हमें क्यों अपमानित करेगा? देव की आकृति वाले पत्थर का भी अपमान नहीं होता, फिर मनुष्यों की क्या बात?

देवाकारोपेतः पाषाणोपि नावमन्यते, तत्कि पुनर्मनुष्यः। - नीतिवाक्यामृतम् 7/30

यदि अभिमानवश व्यक्ति जिनका अपमान नहीं करना चाहिये, उनका भी अपमान कर बैठता है तो उसका दुष्परिणाम उसी को भोगना पड़ता है। साँप, अग्नि, सिंह और कुलीन युवक-ये बहुत तेजस्वी होते हैं, इसलिए विदुरजी का कथन है कि इनका कभी अपमान नहीं करना चाहिये।

सर्पश्चाग्निश्च सिंहश्च, कुलपुत्रश्च भारत !
नावज्ञेया मनुष्येण, सर्वे ह्येतेऽतितेजसः ।। - विदुरनीति : 5/61

जब बाल सफेद हो जाते हैं, आँखें भीतर धँस जाती हैं, नाक बाहर निकल आती है और चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, तब बुढ़ापे में शरीर के सौंदर्य का अभिमान समाप्त हो जाता है। बल का अभिमान बीमारी में नष्ट हो जाता है। धन का अभिमान अपने से बड़े धनवान को देखते ही नष्ट हो जाता है। विद्या और कुलीनता का अभिमान भी अवसर आने पर इसी प्रकार नष्ट हो जाता है। एक उदाहरण सुनिये -

एक राजकुमार था । उसे अपनी कुलीनता और धनुर्विद्या का बड़ा अभिमान था। एक दिन वह ससुराल गया। अपने साथ अंगरक्षक नहीं लिये। ससुराल से पत्नी को साथ लेकर जब वह लौटने लगा तब ससुरजी के बार-बार अनुरोध करने पर भी उसने सैनिक साथ रखने से इंकार कर दिया। अपने तूणीर में एक सौ पच्चीस बाण रखकर वह रथारूढ़ हुआ और अपने नगर की ओर चल पड़ा।

मार्ग में एक भील का सामना हो गया। वह एक डाकू था। उसके पास भी धनुष बाण थे. रथ का माल लूटने के लिए उसने अपने धनुष से बाण बरसाने शुरू कर दिये।

(क्रमशः)

◆◆◆

## सम्पादकीय

# योग साधना में सर्वोपरी- ध्यान

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

साधक की उत्कृष्ट स्थिति ध्यान में प्रवेश, उसमें स्थिरता, चित्त की शुभ अध्यवसाय की स्थिति की उपलब्धि तथा उसकी अपनी अन्तर्यात्रा है। ध्यान को योग के आठ अंगों में सातवां मान्य किया है अर्थात् ध्यान की प्राप्ति पूर्व के छह अंगों का अभ्यास किये जाने से संभव है। महात्मा गौतम बुद्ध ने कहा था कि करूणा ध्यान का फल है याने ध्यान लग जाए तथा करूणा का उदय नहीं हो तो समझना चाहिये कि कोई भूल हो गई है। श्री समवायांग सूत्र में एक ही वस्तु में अन्तमुहूर्त काल तक की चित्त की अवस्था को ध्यान सम्बोधित किया गया है। श्री हरिभद्रसूरिजी ने मोक्ष प्रापक धर्म व्यापार को (योग) ध्यान कहा है। आचार्य श्री शुभचन्द्र ने प्रतिपादित किया है कि मन को समाहित रखना, उसे विरक्त रखना तथा अपने को अगाध करूणासागर में निमग्न रखकर परमात्मा के सदृश्य अनुभूति करना ध्यान है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का कथन था कि ध्यान बस ठहर जाना है, प्रकम्पनों का बंद हो जाना है। ध्यान के मार्ग पर चलने से तात्पर्य है प्रकम्पनों से मुक्त होने का प्रयास करना और उनसे सर्वथा मुक्त हो जाना। एक अन्य चिंतक का कथन है कि ध्यान का मुख्य फल स्वभावोपलब्धि है याने स्वभाव-अस्तित्व का जागरण होना। जैनाचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी ने विवेचन किया था कि शुभ चिन्तन तथा शुभ अभ्यास के सतत् अभ्यास से प्राप्त स्थिति ध्यान है। जैन चिन्तक लिंचि का मानना था कि - मैं याने अहं का मिट जाना तथा विनम्रता की स्थिति ध्यान है।

ध्यान को मोक्ष की सीढ़ी माना गया है एवं दार्शनिको ने मैं से मुक्त होने को मोक्ष का आरोहण माना है। स्पष्टतः ध्यान की साधना अहंकार से मुक्त होना है। ध्यान में चेतना अन्तर्मुख होकर अन्तरात्म रूप में परिणित होती है। इस स्थिति में यह अहंकार रहित बनकर परमशुद्ध परमात्म स्वरूप में स्थिर होती है। यही वास्तविक ध्यान है। दूसरे शब्दों में ध्यान को अन्तर्यात्रा कहा गया है याने अपने बाह्य नेत्रों को मून्द कर अन्दर के नयनों को

खोलना, स्वयं को टटोलना, स्वयं को जानना, स्वयं की स्थिति का मूल्यांकन करना।

एक मत यह है कि ध्यान से तात्पर्य है अकर्म की साधना। हम अपने जीवन में प्रतिक्षण कोई न कोई कर्म करते रहते हैं। शरीर शांत होता है तो वचन से एवं वचन के मौन हो जाने पर मन से कोई न कोई सक्रियता निरंतर रहती है। यहाँ तक कि जाग्रत अवस्था में ही नहीं निद्रा में भी सक्रियता से हम दूर नहीं रह पाते हैं। कर्म से मुक्त होना, ध्यान की स्थिति है। ध्यान को क्रिया नहीं कहा जा सकता है, वह तो स्वतः प्रकट होता है। मन-वचन-कर्म की अकर्मता ध्यान की ओर अग्रसर करती है।

जैनाचार्य श्री कलापूर्णसूरिजी ने चिन्तन तथा भावना दोनों को ध्यान की पूर्व भूमिका में प्ररूपित किया है। शुभ चिन्तन तथा शुभ भावना के सतत् अभ्यास से स्थिर शुभ अध्यवसाय रूप ध्यान अवस्था को निष्कर्षण करती है। चिन्तन को विचारात्मक तथा भावना को आचारात्मक कहा गया है। शुभ ध्यान में धर्मध्यान व शुक्ल ध्यान माने गये हैं जबकि अशुभ ध्यान के अंतर्गत आर्त्तध्यान एवं रौद्रध्यान को समावेश किया गया है।

लोकसंत मनीषी जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज ने ध्यान को सरल भाषा में अभिव्यक्ति देते हुए परिभाषा दी है कि साधक की ज्ञानापूर्वक अपनी स्वयं या आत्मा की अनुभूति, आत्मा की पहचान या आत्मा में समा जाने की दक्षता को ध्यान कहेंगे। अपने स्वभाव में प्रतिष्ठित होना ध्यान है।

◆◆◆

## व्यसन मुक्ति

व्यसन मुक्ति - लेखक/सम्पादक-आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा., प्रकाशक- दिव्य सन्देश प्रकाशन मुंबई मो. 8484848451 तथा 9892069330 , मूल्य एक सौ रुपये। प्राप्ति स्थान श्री चेतन हसमुँखलाल मेहता मो. 9867058940 मुद्रक - शुभय 9833835899, पृष्ठ - 200 मुख पृष्ठ - बहुरंगी। छपाई-सफाई- उत्तम। व्यसनों से जीवन का पतन होता है. जो व्यसन के चक्रव्यूह में फंस जाते हैं, वे केवल अपने जीवन को बर्बाद कर लेते हैं बल्कि आत्म विकास के पथ से ही काफी दूर भटक जाते हैं। आचार्यश्री ने सात व्यसनों शिकार, मांसाहार, मदिरा, चोरी, जुआ, परस्त्री गमन तथा वैश्यागमन की बुराइयों का सफलतापूर्वक विवेचन कर व्यक्ति को उत्तम व गुणयुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी है। साथ ही जीवन को दूषित करने वाली कई कुप्रवृत्तियों की विस्तार से चर्चा कर एक उपयोगी ग्रंथ की रचना की है। जो सभी के पढ़ने व जीवन में अपनाने योग्य है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अतिथि रचना

# होनी तो होकर रहे

(लेखक : आचार्य श्री भद्रगुप्तसूरीश्वरजी म.सा.)

सर्वज्ञ वीतराग भगवान् महावीर के पास जब राजकुमार जमाली ने वैराग्यपूर्ण हृदय से और नम्रता से भरे शब्दों से प्रार्थना की थी कि 'भगवन्, मेरा मन वैषयिक सुखों से विरक्त बना है और मैं आपके चरण कमल में मेरा जीवन समर्पित करना चाहता हूँ' तब सर्वज्ञ परमात्मा महावीर देव ने जमाली को क्यों चारित्रधर्म प्रदान किया?

मन में यह प्रश्न पैदा हुआ, प्रश्न का समाधान ढूँढते-ढूँढते कितने दिन बीत गये! परमात्मा सर्वज्ञ थे, जड़-चेतन सभी पदार्थों के सर्वकालीन भाव जानते थे। सभी द्रव्यों के सभी पर्यायों को जानते थे... उनसे कोई भी बात अज्ञात नहीं थी... तो क्या ' यह जमाली साधु बनने के पश्चात्, श्रुतज्ञानी बनने के पश्चात् मेरे ही सिद्धान्तों का खंडन करेगा और मेरे विरूद्ध लोगों में प्रचार करेगा... ' यह बात नहीं जानी होगी उन्होंने ?

जमाली का भविष्य क्या उनसे अज्ञात रहा होगा ? नहीं, यह बात संभव नहीं। यदि संभावित मानें तो महावीर की सर्वज्ञता नहीं मान सकते। यदि सर्वज्ञता का स्वीकार करते हैं तो जमाली के अनागत काल का ज्ञान स्वीकार करना ही होगा।

भगवान् महावीर जानते थे कि 'जमाली मेरे द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त का विरोध कर, श्रमण संघ का त्याग कर चला जायेगा और उसके अपने सिद्धान्त का प्रचार करेगा' फिर भी भगवान् ने जमाली को चारित्रधर्म दिया। अपने श्रमण संघ में सम्मिलित किया। प्रश्न यहाँ पैदा होता है कि ऐसा जानने पर भी उन्होंने जमाली को दीक्षा क्यों दी ?

यदि मुझे ज्ञात हो जाय कि 'यह व्यक्ति भविष्य में मेरा ही दुश्मन होने वाला है,' तो मैं उस व्यक्ति को स्वीकार नहीं करूँगा। कोई भी नहीं करेगा। तो भगवान ने जानने पर भी क्यों स्वीकार कर लिया?

इस प्रश्न का समाधान भगवान महावीर के बताये हुए एक सिद्धान्त से हो गया। वह सिद्धान्त है 'भवितव्यता' का।

हर जीवात्मा की अपनी स्वतन्त्र 'भवितव्यता' होती है। हर जीवात्मा की गति, प्रगति, अवनति निश्चित होती है।

हर जीवात्मा की उन्नति.... अवनति

निश्चित होती है। जो पूर्ण ज्ञानी महापुरुष होते हैं, उनके ज्ञान-प्रकाश में यह सब प्रतिबिंबित होता है।

जमाली का यह क्रम निश्चित था- राजकुल में जन्म लेना... यौवन में राजकुमारी प्रियदर्शना से शादी करना...फिर संसार से विरक्त होना... श्रमण जीवन स्वीकार करना... श्रुतज्ञानी होना...बीमार होना... दूसरे श्रमणों के साथ सैद्धान्तिक मतभेद होना... भगवान महावीर की अवज्ञा करना... श्रमणसंघ से निकल जाना... यह सब निश्चित था भगवान महावीर के केवलालोक में। भगवान् महावीर की अपनी भी भवितव्यता थी न।

जमाली को दीक्षा देना और श्रमणसंघ में लेना- भगवान की भवितव्यता थी... उस भवितव्यता के अनुसार ही उन्होंने जमाली को दीक्षा दी थी और श्रमण संघ में प्रवेश दिया था। वे जानते थे कि 'एक दिन यह मेरा विरोधी बन जायेगा, मेरी सर्वज्ञता का अनादर करेगा। मेरा विरोधी बन जायेगा।' फिर भी उनको भवितव्यता के अनुसार ही चलना था।

गोशालक को 'तेजालेश्या'की शक्ति प्राप्त करने का उपाय बताते समय वे जानते थे कि इस शक्ति का प्रयोग गोशालक मेरे पर ही करेगा... फिर भी 'तेजोलेश्या' दे दी। भवितव्यता ने दिलवाई तेजोलेश्या।

उपाध्याय श्री विनयविजयजी ने 'शान्तसुधारस' में गाया है-

**'येन जनेन यथाभवितव्यं तद्भवता दुर्वारं रे.'**

'जिस मनुष्य की जैसी भवितव्यता होगी, वह वैसा बनेगा ही, कोई उसे रोक नहीं सकता।

◆◆◆

## रजत रश्मियाँ

* **1100/-** स्व. श्री सुभाषचंद्रजी श्रीश्रीमाल धामंदावाले की स्मृति में 'शाश्वत धर्म' को सहायतार्थ । धन्यवाद।
* **2100/-** श्री सरदारमलजी सुरेशकुमारजी धारीवाल, जावरा की ओर से समाज गौरव श्री कन्हैयालालजी धारीवाल (पटेल सा.) की स्मृति में सहायतार्थ। धन्यवाद।
* **2900/-** श्री सुरेशकुमारजी चौरड़िया अध्यक्ष अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा जावरा की ओर से सहायतार्थ भेंट । धन्यवाद।
* **1000/-**श्री हुकुमीचंदजी चौरड़िया, उज्जैन की ओर से सहायतार्थ भेंट ।
* **1100/-**श्रीमती पुष्पादेवी सगरावत मंदसौर की स्मृति में उनके पति श्री शांतिलालजी सगरावत, पुत्र श्री नवीनजी (नवीन ग्राफिक्स) द्वारा 'शाश्वत धर्म' को सहायतार्थ प्रदान किये गये। एतदर्थ धन्यवाद।

धन्यवाद।

# पूर्णतः आध्यात्मिक उपासना पद्धति है प्रतिक्रमण

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

शुद्धि तन की होती है- स्नान से, शुद्धि धन की होती है - दान से, शुद्धि मन की होती है- ध्यान से और शुद्धि आत्मा की होती है- प्रतिक्रमण से। प्रतिक्रमण शब्द हमें विभाव से स्वभाव की ओर लौटने का संकेत है। प्रतिक्रमण स्वयं से रूबरू होने का अवसर है, स्वयं के सामने स्वयं के समर्पण की आराधना है, अपने सामने अपनी अन्तर्रात्मा के बेनकाब होने का स्थल है। प्रतिक्रमण एक ऐसा झाड़ू है, जो दिन में, रात में, पक्ष में, चातुर्मास में एवं वर्ष भर में हमारी आत्मा पर चिपकी पाप रज को हटाकर हमें निर्मलता प्रदान करता है। सम्यगदृष्टि परिपूर्णतावाला ही प्रतिक्रमण करने का सच्चा अधिकारी है। ऐसे जीव चौथे गुणस्थानक से प्रारम्भ होकर बारहवें गुणस्थानक तक रहते हैं।

अनुयोगद्वार सूत्र में प्रतिक्रमण के दो भेद हैं- 1. द्रव्य प्रतिक्रमण और 2. भाव प्रतिक्रमण। द्रव्य प्रतिक्रमण साधक बिना उपयोग के यश प्राप्ति और पारस्परिक रूढ़ संस्कारों के वश में हो करता है। शब्द के साथ अर्थ का सम्बन्ध तादात्मक हो, मन, वचन और काया का एक मेव हो, वह होता है- भाव प्रतिक्रमण। सच्चा प्रतिक्रमण भाव प्रतिक्रमण है। जिसमें वाणी के साथ हृदय भी बोलने लगता है- 'मिच्छामि दुक्कडं'।

इसमें आत्मावलोकन, आत्मनिरीक्षण एवं आत्मशुद्धि बेहतर होती है। चूँकि भावों में परिवर्तन का कोई निश्चित समय नहीं होता 22 तीर्थंकर के शासनकाल में साधु-साध्वी दोष लगते ही तत्काल प्रतिक्रमण कर लेते थे। मृगावती और चन्दनबाला ने मध्यरात्रि में प्रतिक्रमण किया, पश्चाताप हुआ और केवल ज्ञान हो गया। एतदर्थ जब भी मन में आत्मावलोकन पश्चाताप एवं प्रायश्चित भाव उत्पन्न हो तत्क्षण प्रतिक्रमण घटित हो जाता है।

छह आवश्यकों का सम्मिलित रूप प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण का मूल नाम आवश्यक सूत्र है। छह आवश्यकों में आवश्यक सूत्र में चौथे आवश्यक प्रतिक्रमण को प्रमुख आवश्यक कहा है? छह आवश्यकों का सम्मिलित रूप सम्पूर्ण प्रतिक्रमण है। भगवान ने इसे आवश्यक

सूत्र का नाम दिया है।

प्रतिक्रमण में सर्वप्रथम सम्यक्त्व की विशुद्धि होती है। प्रतिक्रमण में प्राप्त उपलब्धियाँ भगवान महावीर ने जो कही हैं- उनमें प्रथम व्रतों में जो अतिचार रूपी छिद्र हैं, उन्हें ढका जाता है, दूसरी- कर्माश्रवों को अवरूद्ध किया जाता है, तीसरी- चरित्र की सबलता समाप्त होती है, चौथी- अष्ट प्रवचन माता के प्रति सजगता जागृत होती है। इस तरह सम्पूर्ण कर्मक्षय होकर आत्मा मक्खन की तरह सारपूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेती है। 'धर्मो रक्षति रक्षितः '। आत्मा की तरफ लौट आना प्रतिक्रमण है। छोटे-छोटे दोष मिलकर पूरे व्रत को खत्म कर देते हैं। दोष के चार स्तर हैं। 1. गृहित व्रत को भंग करने का विचार- 'अतिक्रम', 2. गृहीत व्रत को भंग करने का उद्यत होना - 'व्यतिक्रम', 3. ग्रहीत व्रत को खण्डित करना- 'अतिचार' और, 4. व्रत को पूर्णतः खण्ड-खण्ड कर देना- अनाचार है।

प्रथम तीन दोषों तक पाप का प्रतिक्रमण होता है और चौथा दोष अनाचार का पाप गुरु प्रायश्चित से धुलता है या मूल में व्रत को पुनः अंगीकार करने पर होता है।

◆◆◆

## समाधि मृत्यु

समाधि मृत्यु-लेखक-आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा., प्रकाशक व प्राप्ति स्थान - दिव्य सन्देश प्रकाशन ठि. सुरेन्द्र जैन, 205 सोना चेम्बर्स, 507-509 जे.एस. एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनपुर गली के सामने, मरीन लाईंस (ई) मुंबई 400002 मो.8484848451 तथा 982069330 मूल्य- 80 रुपये, पृष्ठ 136, आवृत्ति- द्वितीय, मुद्रक शुभय 9833835899, कव्हर-बहुरंगी, छपाई-सफाई-सामान्य।

मृत्यु को जैन संस्कृति महोत्सव मानती है। वह मृत्यु की प्राप्ति को कला के रूप में व्याख्याइत करती है। मृत्यु अटल तथा निश्चित है। व्यक्ति की सार्थकता इसे ही निखारने की है। जैन आचार्यों ने समाधि मृत्यु को उपदिष्ट व विवेचित किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में समाधि भाव का प्रकाश दिखाया गया है। चार शरण, सुकृत अनुमोदना तथा दुष्कृत्य गर्हा को प्रतिपादित किया गया है। भव्यात्मा के लिए यह ग्रंथ स्वाध्याय का अच्छा साधन तथा प्रेरणा का श्रेष्ठ माध्यम है।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

चिन्तन का चित्रांकण

# आत्मा को नमोभाव में लाएँ

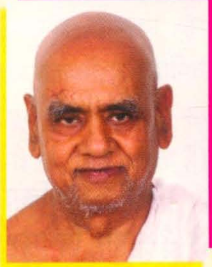

गच्छाधिपति धर्म दिवाकर
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

## दिनांक 14.04.2016

नमो माने हृदय में नम्रता सरलता। नम्र का मतलब अन्दर रहे। कषाय से मुक्त। कषायों की परिणति से मुक्त जीवात्मा ऋजु माना गया है। ज्ञानवान, बुद्धिमान कहा गया है। हर पहलु का चिन्तन करता है। और पूर्वाभाव का विचार करके प्रवृत्ति करता है, वह ऋजु स्वभाव वाला होता है। ऋजु स्वभावी वाला व्यक्ति किसी भी जीव को हानि नहीं पहुँचाता है। यदि अपने से किसी को भी नुकसान पहुँचे तो समझना कि अभी जीवन में ऋजुभाव नहीं आया है। तो वह आत्मा कभी भी नमो भाव में नहीं आ सकती है ।

## दिनांक 15.04.2016

चित्त जिसका स्थिर वह जीवात्मा संसार में जटिल समस्या का भी समाधान सहज में कर लेती है। चित्त की प्रसन्नता तब होगी जब उसकी आत्मा में भावों की ऋजुता आयेगी ऋजुतामय भावों वाली आत्मा आत्म-साधना में सर्व प्रकार से सिद्ध प्राप्त करती है। जीवन में चाहिये चित्त स्थिर परिणाम ।

## दिनांक 16.04.2016

कुमुद की सुवास सुगन्धमय वातावरण पैदा करता है। कुमुद का दूसरा नाम कमल है, जो दिखने में सुन्दर खुशबू में सुन्दर सुवास प्रखरित करता है। कीचड़ में पैर होने के बाद भी कमल ऊपर उठकर जीव का सुन्दर स्वरूप दर्शाता है। मानव को भी कमल की तरह ही ऊपर उठकर जीव मात्र को हर्षानन्द कराने का उपक्रम करना चाहिये तो जीवन कुमुद की तरह सार्थक माना जायेगा।

## दिनांक 17.04.2016

स्मित ! याने मर्यादा से ज्यादा, शक्ति से अधिक नहीं करना। ताकत से ज्यादा व्यय करना तन, मन, धन की उपाधि को लाना है। उपाधि आये और पीछे पश्चात्ताप करना, इससे अच्छा है स्मित में रहकर काम करें। जीवन को सुखमय, शान्तिमय व्यतीत करना है। तो आणाए धम्मो सूत्र को याद रखें। स्मित में रहकर सन्तोषमय समय को पसार करने वाली आत्मा निश्चय से आत्म साधना कर शाश्वत सुख को प्राप्त करती है।

◆◆◆

# 'श्री' का महात्मय

(श्री शांतीलाल कवाड)

'श्री' का व्यक्तिगत जीवन में क्या महत्व है ? गंभीर विचार-मंथन से इन संबंध में इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि व्यक्तित्व को समुन्नत, सुविकसित, समृद्ध और कान्तिवान बनाने का सम्पूर्ण तत्वज्ञान इस एक ही अक्षर में समाविष्ट है। इसकी उक्त उपादेयता को देखते हुए जो इस बारे में सोचते , विचारते और वैसा बनने के लिए तद्नुरूप कदम बढ़ाते हैं, वास्तव में वही 'श्रीवान्- श्रीमान्' कहलाने के अधिकारी हैं, शेष तो श्रीहीनों की तरह दुत्कारे जाते और विस्मृति के गर्त में तिरोहित हो जाते हैं।

शतपथ की एक गाथा में 'श्री' की उत्पत्ति का वर्णन है। वह प्रजापति के अन्तस् से आविर्भूत होती हैं। अपूर्व सौन्दर्य एवं तेजस् से सम्पन्न हैं। प्रजापति उनका अभिनन्दन करते हैं और बदले में उस आद्य देवी से सृजन क्षमता का वरदान प्राप्त करते हैं।

ऋग्वेद में 'श्री' और 'लक्ष्मी' को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद् में 'श्री' का अन्न, जल, गोरस एवं वस्त्र जैसी समृद्धियाँ प्रदान करने वाली आद्यशक्ति के रूप में उल्लेख है। गृह सूत्रों में उसे उत्पादन की उर्वरा शक्ति माना गया है। यजुर्वेद में 'श्री' और 'लक्ष्मी' को विष्णु की दो पत्नियाँ कहकर उल्लेख किया गया है-'श्रीश्चते लक्ष्मीश्चते सपत्न्यौ'। श्री सूक्त में भी दोनों को भिन्न मानते हुए अभिन्न उद्देश्य पूरा कर सकने वाली बताया गया है- 'श्रीश्च लक्ष्मीश्च'। इस निरूपण में 'श्री' को तेजस्विता और 'लक्ष्मी' को सम्पदा के अर्थ में लिया गया है।

शतपथ में 'श्री' की फलश्रुति की चर्चा करते हुए कहा गया है कि वह जिन दिव्यात्माओं में निवास करती हैं, वे तेजोमय हो जाते हैं। अथर्ववेद में पृथ्वी के अर्थ में 'श्री' का प्रयोग अधिक हुआ है। धरती माता एवं मातृभूमि के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति करने के लिए 'श्री' का उच्चारण एवं लेखन होने का इन ऋचाओं में स्पष्ट संकेत है।

आराण्यकों में 'श्री' को सोम की प्रतिक्रिया अर्थात् आनन्दातिरेक कहा गया है। गोपथ ब्राह्मण में उसकी चर्चा शोभा-सुन्दरता के रूप में हुई है। श्रीसूक्त में इसकी जितनी विशेषताएँ बतायी गई हैं, उनमें सुन्दरता सर्वोपरि है। वाजसनेयी आरण्यक में 'श्री' और लक्ष्मी की उत्पत्ति तो अलग - अलग कही गई है, पर पीछे दोनों के मिलने पर एकात्म होने का कथानक है।

चित्रों में लक्ष्मी को कमलासन पर

विराजमान हाथियों द्वारा स्वर्ण कलशों से अभिषिक्त किये जाने का चित्रण मिलता है। कमल सौन्दर्य का प्रतीक है, गज साहसिकता की निशानी है, स्वर्ण वैभव का चिन्ह है, जलशान्ति, शीतलता और संतोष का द्योतक है। इन विशेषताओं के समुच्च्य को 'लक्ष्मी' कह सकते हैं। कन्याओं को 'गृह लक्ष्मी' कहने का रिवाज है। यह व्यर्थ ही नहीं है। वास्तव में उनमें लक्ष्मी तत्व की अधिकांश विशेषताएँ मौजूद होती हैं। ऐसे में उनका गृह लक्ष्मी कहलाना सार्थक ही है। 'श्री' शब्द में लक्ष्मी की उपरोक्त स्थिति को अपनाने का प्रोत्साहन है। पुराणों में 'श्री' की उत्पत्ति समुद्र मंथन से हुई बतायी गई है। यहाँ इससे प्रबल पुरुषार्थ का संकेत है। अनुर्वर खारे जलागार से भी पुरुषार्थी लोग वैभव-वर्चस्व प्राप्त कर सकते हैं- इस तथ्य को लक्ष्मी - जन्म के उपाख्यान से महामनीषियों ने निरूपित किया है। कल्प सूत्र की एक कथा में भगवान महावीर का उनकी माता त्रिशला होने का वर्णन है, जिसने दिव्य स्वप्न में 'श्री' के दर्शन किये थे। समयानुसार इस दिव्य दर्शन की प्रतिक्रिया अपनी गोद में भगवान को खिला सकने के रूप में प्राप्त हुई।

'श्री' की प्रतिष्ठा जब किसी नाम के आगे होती है, तो वह अपने दिव्य गुणों के कारण उसे भी गरिमावान बना देती है। इसी कारण किसी को गरिमा प्रदान करने और सम्मान देने के लिए उसके नाम के आगे 'श्री' लिखने का सामान्य प्रचलन है। आध्यात्मिक पुरुषों, राजनेताओं, सम्मानित व्यक्तियों के नाम के पूर्व 'श्री' लगाने का इतना ही तात्पर्य है कि वे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इसलिए 'श्री' का सम्पुट लगने मात्र से व्यक्तित्व की छवि बहुत कुछ मानस में प्रतिभासित होने लगती है। चोरों, डकैतों, उठाईगीरों, लुटेरों, अपहर्त्ताओं, आतंकवादियों को इसी कारण 'श्री' लगाकर सम्बोधित करने का प्रचलन नहीं है, क्योंकि वे श्री को अभिव्यक्त करने वाले गुणों को धारण नहीं करते और उनका सम्पूर्ण जीवन लोगों को सताने और उत्पीड़ित करने में ही बीतता है। यह 'श्री' में निहित तत्व दर्शन के विरुद्ध है।

'श्री' को भारतीय धर्म में इतना महत्व क्यों दिया गया है? इस पर विचार करने से प्रतीत होता है कि, व्यक्तित्व को आन्तरिक सौन्दर्य, व्यावहारिक तेजस्विता और भौतिक समृद्धि के प्रति आस्थावान और प्रयत्नशील रहने के लिए संकेत है। आत्मिक और भौतिक प्रगति के संतुलित समन्वय से ही व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास होता है। 'श्री' को नाम के पहले जोड़ने में इसी सद्भावना एवं शुभकामना की अभिव्यंजना है कि श्रीवान् बनें- सर्वतोमुखी प्रगति की दिशा में अग्रसर हों।

◆◆◆

उत्तम आहार - शाकाहार-39

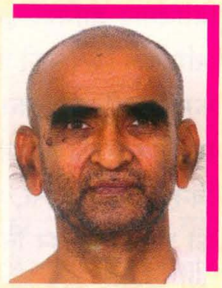

# शाकाहार से मानव बनता है पराक्रमी

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा-

'किं अमृंत' (अमृत क्या है ?)

युधिष्ठिर ने उत्तर दिया-

'गवांछा अमृतं'

(गाय का दूध ही अमृत है)

हमारी अपनी माता अपने बच्चे को एक वर्ष के आसपास की अवधि तक दूध पिलाती है लेकिन गौमाता अपने जीवनभर हमको दूध पिलाती है। हिन्दु शास्त्रों के अनुसार गाय के शरीर में सभी देवताओं का याने 33 करोड़ देवताओं का निवास होता है। गाय इतनी पवित्र है कि उसके गोबर में भी लक्ष्मी का निवास माना गया है। दीपावली का दूसरा दिन 'गोवर्धन' पूजा का होता है, इस शब्द का अर्थ है गौ का वर्धन अर्थात गौ की वृद्धि। गाय का दूध शुद्ध शाकाहार है। शाकाहारी लोगों के लिये यह अमृत है।

एक संदर्भ के अनुसार 'शाक' शब्द संस्कृति की 'शक्' धातु से बना है। शक् का अर्थ है योग्य तथा सहज व समर्थ होना। शाक शब्द का अर्थ है बल या पराक्रम और शक्त का अर्थ है- योग्य व शक्तिशाली इन सभी के बदले स्वरूप शाकाहार शब्द का अर्थ वैसे आहार से है जो मनुष्य को योग्य बनाये तथा उससे पराक्रमी और बलवान के रूप में विकसित करे।

शाकाहार की ऐसी विशेषता के कारण ही विदेशों के महापुरुषों अरस्तु, प्लेटो, सुकरात, लियोनादो दाविंची, पाइथागोरस, शेक्सपियर, वर्डसनर्थ, टॉल्सटॉय, बरनार्ड शॉ, न्यूटन, बैंजामिन, फ्रैंकलिन, डार्विन, चर्चिल, आइन्सटीन आदि भी मांसाहार प्रधान देशों में रहते हुए भी शाकाहारी ही थे। ये किसी पशु-पक्षी का माँस या उससे निर्मित वस्तुओं का भक्षण नहीं करते थे।

मनुष्यों के आरोग्य का सत्यानाश करने वाले तीन कारण माने गये हैं- अंडा, मांस तथा व्यसन। अमेरिका में 'व्हाट द हेल्थ' दस्तावेजी फिल्म का निर्माण हुआ है जिसे देखकर एक बड़ी संख्या में अमेरिकन लोग मांसाहार का त्याग कर चुके हैं। हमारे जंगलों में भी कई ऐसे पशु-पक्षी हैं जो शाकाहारी हैं, वे मांस से सदैव दूर रहते हैं। इनमें हाथी, ऊंट, गधा आदि हैं। (क्रमशः)

◆◆◆

## अध्यक्षीय पाती

**श्री वाघजीभाई वोरा**
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ


# जीवन का खेल पुण्य व पाप की बाजी में

मानव जीवन आराधना काल है। इसका उपयोग आत्मा को पहिचानने, आत्मा के मित्रों से परिचय करने, आत्मा के शत्रुओं से संघर्ष करने तथा आत्मा उसके परम कल्याण की ओर अग्रसर करने में किया जाना चाहिये। इसके लिये हमें अपने आचरण पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये। आचार्य हरिभद्रसूरिजी महाराज ने अंकित किया है कि पुण्य की पुष्टी तथा पाप की शुद्धि में संलग्न रहना चाहिये।

आध्यात्मवेत्ता के अनुसार पुण्य मन के उस धर्म का नाम है जो मनुष्य को सुख उपजाता है। सुख उत्पन्न करने वाले या भविष्य में जो भी सुख के रूप में परिणाम दे उन्हें पुण्य कर्म कहा जाता है।

पाप मन का वह कर्म है जो मन के अंदर सूक्ष्म रूप में या अदृश्य रूप में बैठा हुआ है तथा मनुष्य को दुःख की प्राप्ति करवाता है। पाप दुर्गति को देने वाला है, दुर्गति का मतलब जिसमें दुःख की मात्रा बहुत होती है। जो मनुष्य की बुद्धि को भ्रष्ट करे, उसे अपने हित-अहित के बारे में ही सोचने नहीं दे, समझने नहीं दे, वह पाप।

पुण्य तथा पाप हमारे विचारों में बहुत प्रचलित शब्द हैं। मानव अपने कृत्यों में पाप से बचने का प्रयास करता है। जो अशुभ आश्रव हैं, वे पाप कर्म हैं। अशुभ कर्मों का बंध हमारी आत्मा को भविष्य में दुःख की ओर ले जाते हैं। इनमें कषाय, अठारह पापस्थानक, बुरे कर्म, अशुभ कार्य आदि सम्मिलित हैं। अशुभ विचार करने से भी पाप का बंध होता है। जब पाप का उदय होता है तो जीव दुखों के महासागर में डूब जाता है। हमें मानव का भव मिलता है। यदि इस भव में पापों को टालते रहें तो इस भव में ऐसी पवित्रता व निर्मलता की ओर आत्मा अग्रसर हो सकती है जो मोक्षमार्ग को प्रशस्त करे।

पुण्य करने वाला यदि सांसारिक सुख पाने की इच्छा या कामना नहीं करते हुए पापों की निर्जरा की ओर बढ़े तो मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है।

◆◆◆

## अध्यक्षीय संदेश

# 'त्रिस्तुतिक समाज में कोई भूखा नहीं सोये' अभियान

श्री रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अ.भा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणि समिति की वर्चुअल बैठक ने पुण्य सम्राट लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. के चतुर्थ पुण्योत्सव पर पंच प्रकल्पों का भव्य शुभारंभ किया। इनमें तीन आर्थिक हैं एक कोरोना चिकित्सा तथा एक इक्यासी दिवसीय आराधना से सम्बन्धित है। विस्तृत जानकारी परिपत्र के माध्यम से केन्द्रीय कार्यालय ने प्रचारित कर दी है।

वर्तमान में कोविड-19 ने देश में विकट संकट उपस्थित कर रखा है। कोरोना महामारी की दूसरी लहर ने भारी संख्या में लोगों के प्राण ले लिये हैं। जिस घर में कोरोना घुसता है वह जन तथा धन दोनों की हानि करता है। देश भर में करोड़ों परिवार इससे दुष्प्रभावित हुए हैं। देशभर में उदार परिवारों ने हर तरह से पीड़ितों की आर्थिक मदद की है। कई स्थानों पर राशन, भोजन, दवा, इंजेक्शन, आक्सीजन आदि की सहायता के लिये केन्द्र स्थापित किये गये हैं। स्वयं सेवी संस्थाओं ने पीड़ित मानवता की सेवा का संकल्प सा ले रखा है।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक/ महिला/ तरुण/ वधू/ बालिका परिषदों (परिषद परिवार) का कार्यक्षेत्र देश का त्रिस्तुतिक समाज है। परिषद परिवार ने स्पष्ट उद्घोष कर दिया है कि त्रिस्तुतिक समाज में कोरोना के इस आपात् काल में कोई परिवार भूखा नहीं सोयेगा। जिनको आवश्यकता ने घेर रखा है, उन्हें परिषद की आर्थिक सहायता उपलब्ध होगी। इसके लिये पुण्य सम्राट साधर्मिक वात्सल्य निधि नामांकन कोष स्थापित किया गया है। इसे परिषद के अग्रणीय महानुभावों ने अपने योगदान से भरापूरा है। इस मद में से जरूरतमंद स्वधर्मी परिवारों को आर्थिक सहायता की जा रही है। जरूरतमंद परिवारों की आवश्यकता के क्षणों में यह मद उन्हें राहत प्रदान कर रहा है। वर्तमान में प्रारंभ किये गये अभियान के अंतर्गत ऐसे परिवारों को दस-दस हजार रूपये नकद राशि उनके बैंक खातों में भेजी जा रही है। लगभग एक सौ परिवारों को यह सहयोग दिया जा चुका है। सहायता करने का क्रम निरंतर जारी है। जरूरतमंद परिवार सम्पर्क स्थापित कर लाभ ले सकते हैं। आशा है 'समाज में कोई भूखा नहीं सोये' अभियान सफल रहेगा। हम सभी मिलकर इसे सफल बनायेंगे।

◆◆◆

# जैन दर्शन की तात्विक कुंजी

# तत्वार्थ सूत्र

**(श्री बी.एल. आच्छा)**

आचार्य उमास्वामी रचित तत्वार्थसूत्र का हिंदी अनुवाद डॉ. जयकुमार जलज के सृजन कर्म का नवीनतम पुष्प है। संस्कृत में रचित तत्वार्थसूत्र का जैन दर्शन में वही महत्व है जो संस्कृत व्याकरण की सूत्रबद्धता में पाणिनि की अष्टाध्यायी का है। फर्क इतना ही कि एक दर्शन की सूत्रबद्ध संहिता है दूसरी व्याकरण की। अब जब भाषाएं संस्कृत के संयोगात्मक रूप से वियोगात्मक रूप में सरलतर होती गई हैं और मुद्रण के आविष्कार से ये सूत्रबद्ध पोथियां पाठकों तक जा रही है तो सरलतर भाषा में अनुवाद और प्रकाशन इन सूत्रों को खोलते हुए ग्राह्य होते जा रहे हैं। ये सूत्र जैन दर्शन को संकेतों के साथ समेटते हैं। और इनके भाष्यकारों की परंपरा इनका अर्थान्वेषण करती रही है। इन सूत्रों के बहाने युगानुकूल अर्थ परिधियों के विस्तार के बावजूद जैन दर्शन अपनी मूल कक्षा से भटकता नहीं है। तत्वार्थ सूत्र में भगवान महावीर के जीवन मूल्यों और सृष्टि रचना की अभिकल्पना के संकेत हैं। सूत्रों की विवशता परिभाषिकता में आबद्ध होने की भी है और कम शब्दों में अपनी बात कहने की भी। इसीलिए सूत्रों को रेशा-रेशा खोलने में यह अनुवाद बड़ी भूमिका निभाता है खासकर सरल भाषा में व्यक्त होकर।

इस पुस्तक में दस अध्याय हैं जो दिगंबर और श्वेतांबर जैन परंपरा में कुछ सूत्रों के कम ज्यादा होने के अंतर के बावजूद समान रूप से मान्य हैं। असल में जीवात्मा की मुक्ति का मार्ग क्या हो सकता है यह इस पुस्तक का केन्द्रीय पक्ष है और उसकी धुरी है सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक् चारित्र। कर्म बंधन और रागादि कषायों में उलझा जीवन कैसे मोक्ष मार्ग की ओर जा सकता है उसका तात्विक स्वरूप और मुक्ति के सोपान इस पुस्तक में वर्णित है। इन सूत्रों में जितनी बारीकी से भेदों, उपभेदों की विवेचना की गई है वे दर्शन को जटिल सा बना देते हैं भले ही वे अपूर्व पांडित्य की झलक देते हों। पर यह भी सच है कि पारिभाषिक शास्त्रों की यही प्रकृति है सूक्ष्म अन्वेषण और अधिकतम अर्थ का समावेशन। यह ग्रंथ महावीर वाणी और जैन दर्शन का सारभूत तात्विक निचोड़ है।

देखा जाए तो वनस्पति, जीव विज्ञान मस्तिष्क की संरचना जीवों के प्रकार और उनकी शक्तियां मनुष्य की इंद्रियां और भाव, संवेदक इंद्रियां, मन की सत्ता जीवन का विविध योनियों में आवागमन और पर्याय भेद, मनुष्य के स्थूल शरीर से लेकर उनके तेजस और ज्ञानरूप कार्मण्य शरीर तक

बहुत सूक्ष्म चिंतन किया गया है। आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में इनकी व्याख्या करना और भी संगत हो सकता है भले ही ये सूत्र प्रयोगशालाओं से न निकले हों।

दरअसल पाप, पुण्य, नरक, स्वर्ग, कर्म बंधन और जीवात्माओं की स्वर्गिक और नारकीय गति की सोच हमारी आस्थाओं के मूल में है। जलजजी सही लिखते हैं । स्वर्ग, नरक की अवधारणा ने शताब्दियों तक मनुष्य समाज को अनुशासित बनाए रखने में जैसी सफलता पाई है वैसी सफलता आज तमाम संसार तकनीकी के विकास और दिन-ब-दिन बढ़ते पुलिस बल के बावजूद दूर की कौड़ी बनी हुई है। एक तरह से इस दर्शन में सांसारिक चक्र ब्रह्मांड की रचना, कर्म बंध और कर्म मुक्ति, आस्रव और निर्जरा दृष्टि का मिथ्यात्व और सम्यक्त्व जैसे अनेक पक्षों का निदर्शन किया गया है। यह स्थूल प्रकृति का ही चिंतन नहीं करता बल्कि जीवात्मा के गतिचक्र और नारकीय स्थितियों से निकलकर मानवत्व और देवत्व का मार्गदर्शन करता है।

धरती का जीवन तो हमारे सामने प्रत्यक्ष है। पर भारतीय दर्शन में अधोलोक याने नरक और ऊपरी लोक याने स्वर्ग की अवधारणा सभी धर्म सम्प्रदायों में मौजूद है। अधोलोक अध्याय में आचार्य उमास्वामी ने नारकीय जीवन का मध्यलोक में जंबूद्वीप यानी हमारे सामने प्रत्यक्ष जीवन ......... और देवों के भेद अध्याय में देवसृष्टि के जीवन का संकेत किया है। सांसारिक संरचना में परमाणु पुद्गलों अर्थात् विभिन्न द्रव्यों की चर्चा की गई है जिसकी प्रकृति सदैव परिवर्तनशील है। जैन दर्शन में इसे उत्पाद, व्यय और धौव्र्य कहा जाता है। जिन पुद्गलों से सृष्टि संरचना की बात कही गई है उनमें स्पर्श, रस, गंध और वर्ण मौजूद रहते हैं। सारे सुख-दुख जीवन मरण इन्हीं पुद्गलों की देन है। पर एक सूत्र इन सारी तात्विक विवेचनाओं के भीतर से जीवों की कल्याण भूमि पर उभरता है। परस्परोपग्रहो जीवानाम अर्थात् जीव परस्पर उपकारी है। आत्माओं का स्वभाव एक-दूसरे के उपकार का निमित्त बनना है।

जैन दर्शन और भारतीय सांस्कृतिक प्रज्ञा की सनातन आदि दृष्टियाँ इसी जीवात्मा के कल्याण से जुड़ी हैं। उनमें वैचारिक निकटता भी है और सोच की विभिन्नता के बावजूद कुछ समताएँ भी। जैन दर्शन की यह पुस्तिका भारतीय सांस्कृतिक प्रज्ञा और जीवात्माओं की मुक्ति या मोक्ष की अवधारणा का एक पुष्ट पक्ष है। अनुवादक डॉ. जलज ने सरलतम और मूलतत्व केन्द्रित अनुवाद से इस सांस्कृतिक आध्यात्मिक क्षितिज को पाठकों के लिए सहज बना दिया है।

- पुस्तक का नाम तत्त्वार्थ सूत्र
लेखक आचार्य उमास्वामी, अनुवाद डॉ. जयकुमार जलज, प्रकाशक हिन्दी ग्रंथ कार्यालय, मुंबई प्रकाशन, मूल्य 250 रु.

- बी.एल. आच्छा, फ्लेट नं. 701, टॉवर 27, नार्थ टाउन, स्टीफेन्सन रोड़, पेरबूर, चैन्नई
मो. 9425083335

◆◆◆

# अभय कुमार का चातुर्य

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

लोगों ने समझा कि यह परदेशी है, इसका भाई अर्द्ध विक्षिप्त हो जाने से यह दुःखी है। इसे पता नहीं कि यहाँ का राजवैद्य इसे ठीक कर सकता है। लोगों ने अभयकुमार को सलाह दी कि इस वैद्य को बताएं। अभयकुमार वैद्य को बताने के नाम पर फर्जी प्रद्योत को पलंग पर सुला कर ले जाता है । भरे बाजार वह जोरों से चिल्लाता रहता कि - 'मैं प्रद्योतराजा हूँ? यह मुझे पकड़कर ले जा रहा है, आओ मुझे छुड़ाओ।' लोग समझने लगे कि वह परदेशी प्रतिदिन उसके भाई को बाजार से होकर वैद्य के यहाँ ले जाता है अतएव उनने ध्यान देना बंद कर दिया। ऐसा प्रतिदिन का क्रम बन गया।

उधर सात दिन व्यतीत होने पर राजा प्रद्योत गुप्तद्वार से उन सुन्दरियों के पास चला गया। उनने उसे बाहुपाश में बांध लिया तथा वे पंलग पर साथ सो गईं। अभय ने योजनानुसार सेवकों को संकेत किया, वे एकदम झपटकर प्रद्योत के पास आये और उसे पलंग से बांध दिया। उसका मुँह कपड़े से ढंक दिया तथा चार सेवकों के कंधों पर पलंग रखकर उसे बाजार की ओर से ले गये। असली राजा प्रद्योल पलंग पर से ही चिल्ला चिल्लाकर शोर मचाने लगा कि- 'मैं प्रद्योतराजा हूँ। ये मुझे बांध कर ले जा रहे हैं। मुझे छुड़ाओ। नागरिक समझे कि वह परदेशी उसके भाई को वैद्य के यहाँ ले जा रहा है। अभयकुमार आगे-आगे चलता रहा, वह पलंग व राजा प्रद्योत को शहर के बाहर ले गया तथा वहां खड़े तेज दौड़नेवाले रथ में उसे डाल कर राजगृही की ओर ले उड़ा।

प्रद्योत के साथ अभय राजगृही आ गया। वह उसे लेकर महाराजा श्रेणिक के दरबार में गया और कहा- 'महाराजाधिराज ! मगध के दरबार में अपराधी पेश कर रहा हूँ। इसे मैं उज्जयिनी के भरे बाजार से पकड़कर लाया हूँ। श्रेणिक ने तलवार खींचकर प्रद्योत को परमधाम पहुँचाना चाहा लेकिन अभय ने रोक दिया तथा कहाकि यह हमारा रिश्तेदार भी है, इसे मैंने छलपूर्वक पकड़ा है अतएव इसे प्रताड़ित कर छोड़ दीजिये।' श्रेणिक मान गया उसने प्रद्योत को मुक्त कर अपनी रिश्तेदारी के अनुकूल सम्मानित कर वापस भेज दिया। चंडप्रद्योत पानी-पानी हो गया था, वह शर्मिन्दा था। उसे किये की सजा मिल चुकी थी।

◆◆◆

# सच्चाई के सर्वोत्कृष्ट सिद्धान्त

**(धीमीगतिवाला)**

आनन्दघनजी ने सुपार्श्वनाथ भगवान के स्तवन में प्रभु के अनेक गुणवाची नाम बताए हैं, उनमें एक नाम है 'प्रमान'। प्रमान याने प्रामाणिक। जिनेश्वर परमात्मा प्रामाणिक हैं। उन्होंने जो सर्वहितकारी मार्ग बतलाया है, उनके जो सर्वहितकारी शास्त्र हैं उनमें कहीं भी कोई त्रुटी, कोई दोष, कोई असत्य नहीं है क्योंकि अरिहंत परमात्मा सर्वज्ञ हैं और राग द्वेष से पूर्णतया मुक्त हैं। जो राग द्वेष से मुक्त हो, पूर्ण ज्ञानी हो वे अप्रामाणिक हो ही नहीं सकते।

दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज साहब भी प्रामाणिक और क्रांतिकारी एवं शांतिकारी संत थे। उन्होंने जो नौ महान सिद्धान्त बतलाए वे उनकी मन कल्पना नहीं थी वरन सर्वज्ञ परमात्मा के बतलाए शास्त्रों पर आधारित वे सिद्धान्त थे। गुरुदेव स्वयं भी अत्यंत निःस्पृह थे, अतः उनके वे सिद्धान्त अपने व्यक्तिगत राग द्वेष को पुष्ट करने के लिए बनाए हुए नहीं थे वरन सच्चाई को निरपेक्ष रूप से प्रस्तुत करने वाले वे सिद्धान्त हैं।

उनका पहला क्रांतिकारी सिद्धान्त है कि अव्रती देव-देवी को व्रतधारी साधु-साध्वी और श्रावक - श्राविका द्वारा वंदन करना शास्त्र विरुद्ध है, आगम विरुद्ध है। वंदन शब्द स्तुति और नमस्कार भाव को दर्शानेवाला है। वैरागी की व्रतधारी की स्तुति और नमस्कार वीतरागी को समर्पित है, अन्य कोई उसमें हिस्सा नहीं बटा सकता। रागी द्वेषी के लिए की गई स्तुति और उनको किया गया नमस्कार आदर्श को बदल देता है और व्रत में भटकन चालू हो जाती है। परमात्मा को वंदन करने वाले के सर्ववांछित पूर्ण होते हैं अतः देव-देवियों के सामने बिना उचित कारण के सहायता व याचना के लिए भी गिड़गिड़ाना अनुचित है। जिनेश्वर देव के उपासक के मस्तक पर त्रिलोकीनाथ वीतराग परमात्मा का आशीर्वाद होता है, उसे अपने इस गौरववंती मस्तक को देव-देवी को आराध्य बनाकर उनके सामने झुकाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

उनका दूसरा शांतिकारी सिद्धान्त है कि सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध

आदि भावानुष्ठान हैं, इनका उद्देश्य अशांति से मुक्ति और शांति को प्राप्त करना है। भावानुष्ठान में आत्म भाव के संगीत से जुड़ना होता है और संसार की आसक्तियों से मुड़ना होता है, मुक्त होना होता है। आराधना का लक्ष्य आत्मा से कर्मों को निर्जरीत करने का, आत्मा को मुक्त करने का होता है। ऐसी आराधना के समय इस लोक या परलोक की भौतिक याचना के लिए देव-देवी की स्तुति करना सर्वथा असंगत है। भावानुष्ठान में भावशुद्धि, राग, द्वेष, विमुक्तता आवश्यक है। अतः भावानुष्ठानों में सरागी देवी-देवताओं की जो चौथी स्तुति की जाती है, उसमें जिनाज्ञाभंग का महान दोष दिखाई देता है। साधु-साध्वी भगवंत तो हमेशा के लिए ही भावानुष्ठान में होते हैं अतः उनके लिए तो देव-देवी की स्तुति नमस्कार, वंदन सर्वथा असंगत ही है। भौतिक भावों में रत होकर हम जिन देव-देवियों से पुत्र, धन, रमणी आदि अनित्य बातों की, भौतिक सुख शांति की जो चतुर्थ स्तुति में याचना, कामना, भावना करते है, वे ही देव-देवी अपने अत्यंत उत्तम प्राप्त भौतिक सुखों की अवगणना करके यह चाहते हैं कि कब मुझे मनुष्य भव मिले और कब मैं उत्कृष्टतम मोक्ष सुख प्राप्ति की आराधना कर सकुं। वे मोक्ष सुख की आराधना के लिए तरसे हैं। और हम मोक्ष सुख, आत्म सुख की आराधना के समय भी भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए तरसें और नये कर्मबंधन करें, यह हमारे लिए कितना हीनताप्रद है।

उनका तीसरा क्रांतिकारी सिद्धान्त है कि तीन स्तुति ही प्राचीन व प्रमुख है, जैनागम पंचांगी भी यही बताती है। पूर्वकालिक चतुर्विध संघ में तीन थुई ही प्रचलित रही है। पहली स्तुति में अरिहंत परमात्मा की स्तवना है, दूसरी स्तुति में सर्व अरिहंत परमात्माओं की स्तवना है और तीसरी स्तुति में अरिहंत परमात्मा द्वारा बतलाए गये मत की, सिद्धान्त की , ज्ञान की स्तवना है। ये तीन स्तुतियां ही करना उचित है। चौथी स्तुति रागी द्वेषी देवों की स्तवना करती है, जो कि भावानुष्ठान में करना सर्वथा अयोग्य है। चौथी स्तुति आगमोक्त न होने पर भी पूजा, प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, शांति स्नात्र आदि द्रव्यानुष्ठानों में या रोगादि कारणों की उपस्थिति में गीतार्थ के आचरण से यदि की जाए तो हानिकर नहीं लेकिन भावानुष्ठान में नहीं ही करना चाहिए। गुरुदेव ने जब यह बताया कि

तीन स्तुति ही प्राचीन है, तब उनको भी यह ख्याल नहीं था कि एक गच्छ में आज तक भी तीन स्तुति ही चली आ रही है। गुरुदेव जब थराद गये तो उन्हें पता चला कि थराद और राधनपुर में कड़वामत गच्छ में तीन स्तुति सिद्धान्त का परिपालन चल रहा है। तब गुरुदेव को इस बात से त्रिस्तुतिक सिद्धान्त की सत्यता की बहुत पुष्टि प्राप्त हुई थी। वस्तुतः गुरुदेव ने त्रिस्तुतिक सिद्धान्त नया नहीं बनाया था परन्तु उसका पुनरुद्धार किया था। त्रिस्तुतिक सिद्धान्त को नई शक्ति प्रदान करने का महान कार्य आपने किया था। त्रिस्तुतिक सिद्धान्त का पुनरुद्धार गुरुदेव के जीवन की सबसे बड़ी महत्वपूर्ण क्रान्ति है। यह क्रान्ति अत्यंत आवश्यक इसलिए थी कि देवी-देवताओं की आडम्बर पूर्ण उपासना में शुद्ध वीतराग धर्म नगण्य होता जा रहा था। त्रिस्तुतिक सिद्धान्त में पुनः प्राण फूंककर गुरुदेव ने जो महान उपकार किया है, उसे सदियों तक याद किया जाता रहेगा।

उनका चौथा शांतिकारी सिद्धान्त मन्दिर में हमारा मन भौतिक कामनाओं की अशांति से चल विचलन हो इसकी ओर इशारा करता है। यह सिद्धान्त मन्दिरजी में रुकने की समय मर्यादा बतलाते हुए तीन स्तुति सिद्धान्त की सत्यता को पुष्ट करता है। मन्दिर में प्रवेश के समय निसीहि कहकर सांसारिक बातों से, सांसारिक इच्छाओं से, सांसारिक क्रियाओं से हम मुक्त हो जाते हैं अतः चौथी स्तुति वहां कैसे बोली जा सकती है। शास्त्रोक्त विधि यह बतलाती है कि मंदिर में चैत्यवंदन क्रिया में चैत्यवंदन बोलने के बाद शक्रस्तव (नमुत्थुणं), चैत्यस्तव (अरिहंत चेइआणं), नामस्तव (लोगस्स), श्रुतस्तव (पुक्खर वरदीवड्ढे), सिद्धस्तव (सिद्धाणं बुद्धाणं) ये पाँच दंडक, तीन स्तुति व प्राणिधान सूत्र (जावंति चेइआइं, जावंत केविसाहू, जयवीयराय) बोलने तक जिनालय में रहने की आज्ञा है। चौथी स्तुति बोलने की बात इसमें आती ही नहीं है। इसलिए तीन स्तुति बोलने के बाद मन्दिर में रुकने का विधान नहीं है, परन्तु किसी अन्य विशेष कार्यवश रुकना पड़े तो वह अनुचित नहीं है।

अब पाँच सिद्धान्तों को देखना और शेष रहा है। उन सिद्धान्तों ने भी कैसे क्रांतिकारी परिवर्तन किए थे, वह हम और बाद में देखेंगे।

◆◆◆

प्रवचनकार

# गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

आकाश तो सर्वत्र समान होने से बन्ध और मोक्ष के बारे में शंका होती है। किन्तु ऐसी शंका तुम्हें करनी नहीं चाहिए। क्योंकि उक्त वाक्य के पूर्वार्ध में सशरीरी जीव के बारे में और उत्तरार्ध में अशरीरी जीव के बारे में कहा गया है। जिससे स्पष्ट रूप से पूर्वार्ध से बन्ध का और उत्तरार्ध से मोक्ष का प्रतिपादन सिद्ध होता है।

इसके अतिरिक्त 'स एष विगुणो विभुर्न बद्धयते' इत्यादि वाक्यों का तात्पर्य तुम संसारी जीव को बन्ध मोक्ष नहीं, ऐसा समझते हो, किन्तु वस्तुतः यह वाक्य तो मुक्त जीव के स्वरूप का प्रतिपादन करने वाला है। मैंने भी तुम्हें बताया ही है कि मुक्त के तो बन्धादि हैं ही नहीं। अतः इस युक्ति का समर्थन वेदवाक्यों से भी होता है। इसलिए बन्ध-मोक्ष के बारे में तुम्हें शंका नहीं करनी चाहिए।

इस प्रकार जब मंडित ने अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त कर लिया और वेद वाक्यों का यथावत आशय समझ लिया, तो पूर्वागत विद्वानों की तरह ही अपनी मनोभावना व्यक्त करते हुए साढ़े तीन सौ शिष्यों के साथ जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार कर ली।

## गणधर मौर्यपुत्र : क्या देवों का अस्तित्व है ?

मनीषी मंडित को भी महाप्रभु से मुंडित हुए जानकर मौर्यपुत्र ने भी विचार किया कि अब मुझे भी सर्वज्ञ के दर्शन करने चाहिए और अपने विचार को

क्रियान्वित करने के लिए शिष्य समुदाय के साथ वे सर्वज्ञ महाप्रभु महावीर के समवसरण की ओर चल दिए।

## संशय का संकेत

शिष्य समुदाय के साथ जैसे ही मौर्यपुत्र सर्वज्ञ- सर्वदर्शी के समक्ष पहुँचे कि उन्हें भी श्री महावीर स्वामी ने 'मौर्यपुत्र काश्यप' इस प्रकार नाम एवं गोत्र से संबोधित करते हुए कहा- 'आयुष्मन् मौर्य ! तुम्हें सन्देह है कि देव हैं या नहीं ?' और इस सन्देह का कारण है वेद के परस्पर विरोधी अर्थवाले वाक्यों का सुनना। जैसे कि 'स एष यज्ञायुधी यजमानोऽञ्जसा स्वर्गलोकं गच्छति ' इत्यादि और 'अपाम सोमममृता अभूम अगन्य ज्योतिरविदाम् देवान् कि नूनमस्मान् कणवदरातिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य।' इत्यादि वाक्यों के आधार से तुम ऐसा मानते हो कि स्वर्ग में वास करने वाले देव हैं। किन्तु इनसे विरोधी अर्थ का प्रतिपादन करने वाले वेदवाक्य भी तुम देखते हो। जैसे कि 'को जानाति मायोपमान् गीर्वाणान्द्रि यम-वरुण-कुबेरादीन्।' इत्यादि। इससे तुम्हें लगता है कि देव हैं ही नहीं। सचमुच यही समझते हो न आयुष्मन् ! लेकिन वस्तुतः इन वाक्यों का तात्पर्य तुम्हें ज्ञात नहीं है। इसीलिए तुम्हें संशय है। मैं उनका यथार्थ अर्थ बताऊँगा, जिससे तुम्हारे संशय का निवारण हो जायेगा।

इसके सिवाय 'देव नहीं है' अपनी इस मान्यता का समर्थन तुम युक्ति से भी करते हो। जैसे नारक तो परतंत्र है और अत्यन्त दुःखी भी है। इसीलिए हमारे समक्ष आने में सक्षम नहीं होने से वे नहीं दिखते हैं। किन्तु दूसरों के वचनों को प्रमाण मानकर नारकों का अस्तित्व श्रद्धा का विषय बन सकता है। लेकिन देव तो स्वच्छन्द विहारी हैं, अप्रतिबद्ध हैं, इसलिए उनको आते हुए कोई रोक नहीं सकता तथा वे दिव्य प्रभाव वाले भी हैं, फिर भी कभी दिखते नहीं हैं। इसलिए यद्यपि श्रुति-स्मृति में देवों का अस्तित्व अवश्य बतलाया है, तो भी उनके विषय में संशय होना अस्थानीय अयुक्त नहीं है।

हे काश्यप गोत्रीय मौर्यपुत्र ! तुम्हें देवों की सत्ता के बारे में सन्देह नहीं करना चाहिए। सिर्फ श्रुति-स्मृति के वचनों के आधार पर ही नहीं किन्तु प्रत्यक्ष प्रमाण से भी देवों का अस्तित्व सिद्ध है। क्योंकि यहाँ समवसरण में ही मनुष्यों से भिन्न जातीय ऐसे भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक ये चारों प्रकार के देव उपस्थित हैं, जिनका तुम प्रत्यक्षदर्शन करके अपने संशय का निवारण कर सकते हो। (क्रमशः)

◆◆◆

# श्री नवकार कल्पद्रुम

(मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

शोध

सहते जाना शान्ति से, जो कुछ कष्ट विरोध।
जिनशासन नवकार भज, अपने अवगुण शोध ||106||

समय-संचय

किस लय सम कोमल वचन, ज्ञानी करूणागार।
निष्फल जीवन जा रहा, नहीं भजा नवकार ||107||

स्मरण

मानव तेरी अल्प वय, पद् पद् विघ्न अपार।
सांस-सांस पर रटन कर, जिनशासन नवकार ||108||

कर्म-मुक्त

ज्ञानी सबको दे गए, अविचल भाव अखण्ड।
जिनशासन नवकार भज, मिटे कर्म के दण्ड ||109||

सुरति-योग

सिंह सुरति वन खण्ड में, जल सुरति ज्यों मीन।
त्यों सुरति रहे आपकी, परमेष्ठी में लीन ||110||

संदेश

रे मन ! अब किसको कहे, बहरा यह संसार।
सुनो सुनो भज लीजिए, जिनशासन नवकार ||111||

कुल धर्म परित्याग

जिनशासन नवकार हित, कुल कारण निस्सार।
भव्य योग्य प्रतिपल भजे, आज्ञा ले आधार ||112||

विषय-शमन

जब तक तेरे अभिवृद्ध, अवगुण दोष विकार।
तब तक जप होगा नहीं, जिनशासन नवकार ||113||

व्यर्थ-अध्ययन

दुनिया भर की पुस्तकें, नित्य पढ़ा नादान।
जिनशासन नवकार बिन, हा ! हा ! तू हैरान ||114||

बाधक

जिन पथ से मुँह मोड़कर, मिथ्या मत अपनाय।
तो फिर श्री नवकार का, कैसे जाप उपाय || 115||

विफल

सुर दुर्लभ मानव जन्म, दिया मूढ़ हा खोय।
जिनशासन नवकार का, ध्यान धरे न कोय ||116||

सुख रहस्य

सौख्य प्राप्त हो सर्व विध, सबसे कहे पुकार।
योग सहित भज योग्य हो, जिनशासन नवकार ||117||

अतुलनीय

सबको मानव कह दिया, जीवन भर का सार।
इससे बढ़कर कुछ नहीं, जिनशासन नवकार ||118||

दिव्य-बोध

जिनशासन नवकार का, नर इतना निर्देष।
मानव मायाचार में, खो मत जन्म विशेष ||119||

अनर्थ

जिनशासन नवकार बिन, प्रतिपल यहाँ अनर्थ।
देख रहा प्रत्यक्ष मैं, गिरे दुरित भय गर्त ||120||

धर्मशाला

साधक कथन सराय सुख, सचमुच यह संसार।
अरे ! अरे ! अविलम्ब भज जिनशासन नवकार ||121||

मात्र

अन्त समय जब उदय हो, सर्व मंत्र हो हीन।
एक मात्र नवकार ही, भव पाथेय प्रवीन ||122||

तुल्य

अहो ! शिष्य प्रतिपल रटण, भावों से नवकार।
रे साधक ! तू एक दिन, बन जाता नवकार ||123||

◆◆◆

# काउस्सग्ग

(श्री सुरेन्द्र कुमार गंग, रतलाम)

काउस्सग का अर्थ होता है काया के व्यापार व शारीरिक प्रवृत्तियों का त्याग। क्या सर्वथा त्याग होता है ? सर्वथा नहीं किन्तु कुछ प्रवृत्तियाँ अपवाद स्वरूप - आगार (छूट) रूप में रखकर काउस्सग्ग किया जाता है।

**काउस्सग्ग के आगार :-**

**अन्नत्थ उससिएणं निससिएणं** - अर्थात् उच्छवास और निःश्वास को छोड़कर मतलब यह है कि श्वासोंच्छवास का निरोध करना अशक्य है इसलिए श्वांस खींचने और निकालने की छूट रखी गई है। **खासिएणं**- खांसी आने से, **छिएणं**- छींक आने से, **जंभाइएणं**, जमुहाई आने से **उड्डुएणं**- डकार आने से, **वायनिस्सगेणं**- अपानवायुखारिज होने से, **भमलीए** अकस्मात चक्कर आने से, **पित्तमुच्छाए**- पित्त के प्रकोप से **सुहुमेहिं अंग संचालेहिं**- सूक्ष्म अंग का संचार होने से, **सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सूक्ष्म कफ या**, थूंक के संचार से, **सुहुमेहिं दिट्ठीसंचालेहिं** नैत्रों के संचालन पलक गिरने से इन बारह कारणों को छोड़कर शरीर की क्रिया का त्याग करता हूँ। **एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज** में **काउस्सगो** अर्थात इस प्रकार ये और इत्यादि प्रकार के आगारों- अपवादों से अखंडित- विराधना रहित मेरा काउस्सग्ग हो/ कुछ आकस्मिक कारण है उन्हें ग्रहण करना चाहिए। यानी जब बिल्ली चूहे को पकड़कर खाने को उद्यत हो तब चूहे की रक्षा के लिए, अकस्मात गिरने की हो, भूंकप हो जाए, अग्नि-सर्प आदि का उपद्रव हो, ज्योति का स्पर्श हो रहा है तब कंबल ओढ़ने के लिए लें-लें तो बीच में ही कायोत्सर्ग का भंग नहीं होता है। जा**व अरिहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि** अर्थात तब तक जब तक कि अरिहंत भगवान को नमस्कार बोल कर उसको पार न लूं। कायोत्सर्ग पूर्ण होने तक क्या करना है तब **कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि** अर्थात तब तक अपनी काया को स्थिर निश्चल मौन और ध्यान में एकाग्र करके कायोत्सर्ग मुद्रा में रखता हूँ अर्थात् अपने शरीर को अशुभ व्यापार (कार्य) से निवृत (अलग) करता हूँ।

इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक काउस्सग्ग प्रमाण युक्त होता है उस काल पर्यंत खड़ा होकर घुटने के दोनों ओर हाथ नीचे लटकाकर वाणी संचार रोककर श्रेष्ठ ध्यान का अनुसरण करता हुआ मौन और ध्यान क्रिया से भिन्न अन्य क्रिया के अभ्यास का त्याग करता हूँ और नमो अरिहंताणं बोलकर कायोत्सर्ग पूर्ण करता हूँ। काउस्सग्ग पूर्ण होने पर भी नमो अरिहंताणं न बोले तो काउस्सग्ग भंग होता है- इसलिए कायोत्सर्ग पूर्ण होने पर नमो अरिंहताणं बोलना चाहिए।

◆◆◆

# यपानिया नामक जैनों में तीसरा समुदाय था

**(संशोधक- मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.)**

इतिहास में कर्नाटक किसी समय जैनों का बहुत बड़ा केन्द्र था। ईसा के बाद 12 वीं तथा 13 वीं शताब्दी में जैनों के तीन समुदाय प्रचलित थे। यह तीसरा समुदाय श्वेताम्बर तथा दिगम्बर से पृथक था। नाम यपानिया या जवालियो था तथा कर्नाटक में इसकी बहुत संख्या थी। यह तथ्य मैसूर शहर से प्राप्त दो पुरालेखों से पुष्ट होता है। दक्षिण भारत में होयसला राजवंश बहुत शक्तिशाली रहा है। ये पुरालेख भी इसी राजवंश के युग के माने जा रहे हैं। इनमें होयसला वंश के शासक बल्लाल द्वितीय का नाम आया है। उसके समय में बैंगलुरू शहर को बेंडकलूर कहा जाता था। इनमें जैन जवालिये समुदाय का उल्लेख इस समुदाय के उस समय महत्वपूर्ण होने का तथ्य स्थापित करता है। जवालिये या यपानिया जैन समुदाय उत्तरी कर्नाटक में बहुत लोकप्रिय था।

ये पुरालेख जैन इतिहास की कई परतों को उद्घाटित करते हैं। मैसूर जिले के पेरियाटन्स तालुका के ग्राम माकेडु में दिगम्बर जैन मंदिर के पुनर्निर्माण का कार्य चल रहा है। उसमें उत्खनन कार्य के समय ये पुरालेख प्राप्त हुए हैं। एक पुरालेख मंदिर में स्थित प्रमुख भगवान श्री पार्श्वनाथजी के पैर के निकट से मिला तथा दूसरा मंदिर गर्भगृह की ओर जाने के रास्ते पर बने द्वार के पास पाया गया। ये पुरालेख मिट्टी से ढंका हुआ था। इन पुरालेखों में होयसला नरेश बल्लाल द्वितीय का नाम आया है। इससे यह मान्यता बनती है कि ये बल्लाल द्वितीय के शासनकाल के समय के हैं। इतिहासकार बल्लाल द्वितीय शासनकाल ईस्वी सन् 1173 से 1220 मानते हैं। अतः इन पुरालेखों का काल निर्धारण भी यही होना चाहिये।

ये पुरालेख कर्नाटक में प्रचलित रहे जैन धर्म की व्यापकता पर प्रकाश डालते हैं। इतिहासकारों ने इन्हें पढ़ने तथा इनका अर्थ समझने के लिये इतिहासकार रविकुमार के नवलगुंडा की सहायता ली गई। कर्नाटक जैन संस्कृति के पुरावशेषों का भण्डार है। कई जैन मंदिर भी हैं जो शैव सम्प्रदाय के अनुयायियों के प्रभाव में रहे हैं।

◆◆◆

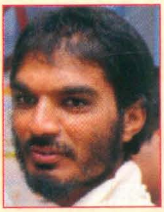

मुनि श्री प्रशमसेन विजयजी महाराज

(मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी महाराज )

श्री शांतीलालजी रामानी

परिषद तथा 'शाश्वत धर्म' समाज की ललाट पर कुमकुम बिन्दिया है- परिषद ! उसके कण्ठ में सजा हुआ रत्नहार है- परिषद ! उसकी कलाई पर स्वर्ण कंगन है- परिषद ! उसके पांव का नुपुर है परिषद ! अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद समाज का श्रृंगार है, युवाओं का ओज है, तरुणों का कांतिधर्मी उत्साह है, जीवन का सत्य है, समाज को भविष्य का सुख तथा वर्तमान का आश्वासन है। यह देन है स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के समाजमुखी चिन्तन की। यह उपलब्धि है वर्तमानाचार्य सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी के कौशल, पराक्रम तथा जयस्वी मार्गदर्शन की। ईस्वी सन् 1959 प्रातः का मंगल प्रभात, सूर्य से छिटकी रश्मियां धरा पर बिखर रही थी। जावरा में (म.प्र.) के पिपली बाजार स्थित उपाश्रय की ऊपरी मंजिल पर जैन समाज के तेजस्वी तथा त्रिस्तुतिक समाज के अग्रदूत जैनाचार्य श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज पाट पर विराजमान थे। उनका व्यक्तित्व इतना प्रखर, प्रभावशाली, प्रदीप्त तथा प्रद्युम्न था कि प्रत्येक की हिम्मत उनसे वार्तालाप करते हुए उनके नयनों से सामना करने तक की नहीं होती थी। वे जिव्हा को गति देते थे तो सिंहगर्जना होती थी एवं अपने पैरों को सक्रिय करते थे तब हस्तीगमन का दृष्ट टंगता था। वे कोई चिन्तन कर रहे थे। तभी उनको वन्दन करने के लिये बढ़ती युवानी की देहलीज पर कदम रखकर उसे संयम की साधना में परिवर्तित कर रहे बावीस वर्षीय मुनिराज श्री जयन्तविजयजी 'मधुकर' का आगमन हुआ। उनने अपना शीश गुरु के चरणों में स्पर्श करवाया। वंदन की विधि की तथा गुरु के आदेश को झेलने के लिए खड़े रह गये। पूज्य गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज ने अपने मुखारविन्द का विश्राम भंग किया- जयन्त ! मैं समाज की आंतरिक स्थितियों के संदर्भ में सोच रहा था। पूज्य गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज ने इसी भूमि पर क्रियोद्धार

किया था। उनके दैदीप्यमान चेहरे ने यहीं त्रिस्तुतिक समाज की आकृति में झांका था। जो गुरुदेव !' 'कोई भी समाज सम्प तथा संगठन के बिना स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकती तथा विकास की दिशा के दर्शन नहीं कर सकती।' 'जी पूज्यवर !'

'त्रिस्तुतिक समाज को जोड़ने की आवश्यकता है। मालव को मरुधर से तथा मरुधर को गुजरात से एक माला में पिरोना युग की मांग है। नवयुवक समाज का भविष्य होता है। न जाने क्यों त्रिस्तुतिक समाज में संस्थाएँ बनती हैं लेकिन चलती नहीं ? एक प्रयास और करो। ऐसा संगठन तैयार हो जिसमें जिन्दादिल मिले तथा समाज का चतुर्मुखी विकास हो।' ' जैसी आज्ञा गुरुदेव!' 'मैं यहाँ से विहार कर खाचरौद होता हुआ श्री मोहनखेड़ा तीर्थ जा रहा हूँ। तुम जयन्त ! अपने चार पाँच साथियों को लेकर रतलाम की ओर विहार कर दो। समाज को टटोलो, युवाओं की नब्ज को परखो तथा समाज को कटिबद्ध एवं अडीग करो। परिषद के नेताओं, नवयुवकों को उसमें समेटो।' 'आशीर्वाद दीजिए गुरुदेव'। मुनिराज अपने आसन पर चले गये। गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर ली। पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज ने जावरा से रतलाम की ओर विहार कर दिया। उन्होंने प्रसिद्ध तीर्थ करमदी पर स्थिरता की। रात्रि को रतलाम के नवयुवक चर्चा के लिये एकत्र हुए। युवाओं में उल्लास था कार्य करने की प्रेरणा थी। पूज्य मुनिराज ने उनकी अंतः प्रेरणा को विकसित कर दिया।' युवाओं ने रतलाम में श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना करने का संकल्प लिया, निर्णय हुआ। पूज्य मुनिराज श्री मोहनखेड़ा की ओर पद संचालन करते हुए प्रस्थित हुए। गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज श्री मोहनखेड़ा तीर्थ विराजमान थे। युवाओं के मनोविज्ञान का मूल्यांकन कर तथा उन्हें संगठन के लिये प्रेरित कर मुनिराजश्री जयंतविजयजी महाराज भी पहुंच गये। गुरुदेवश्री की सेवा में प्रस्तुत हुए। गुरुदेव के आदेश की सम्पूर्ति का प्रतिवेदन समर्पित किया। गुरुदेवश्री ने निर्देश दिया इस श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की भूमि पर ही समाज के युवा वर्ग का सम्मेलन किया जाए, अभी मालवा, निमाड़ तथा निम्बाहेड़ा तक के युवाओं को बुलाया जाए तथा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना की जाये। हर जगह उसकी शाखाएँ रहे, वर्तमान में समाज में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नामों से चल रहे मंडल, सभा, परिषद का विलय किया जाए। पू. गुरुदेवश्री की निश्रा में नवयुवकों का एक अधिवेशन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर बुलाया गया एवं पू. आचार्य गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.ने अ.भा. स्वरूप में प्रान्तीय परिषद की स्थापना की

एवं पदाधिकारी घोषित किये। परिषध ने अपने कदम बढ़ाये। गुरुदेव ने एक दिन कहा जयन्त ! तुझे इस परिषद् के कार्य को देखना है। मेरी आंतरिक इच्छा को पूर्ण करने का कार्य तुझे सौंपता हूँ। और 'शाश्वत धर्म' भी तुझे ही प्रफुल्लित करना है। इन मेरी दोनों स्थापनाओं को विकसित करने में जुट जाना। 'जो आज्ञा गुरुदेव ! जब तक मेरे शरीर में शक्ति का एक भी कण रहेगा, मैं आपकी आज्ञा का पालन करता रहूंगा। 'आणाए धम्मो'- आज्ञा ही धर्म है। मैं सदैव आपकी आज्ञा पालन के लिये समर्पित रहूंगा।' गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज का भव्य मुख मण्डल और अधिक ललाई से जगमगा उठा। उन्होंने मुनिमंडल के मध्य घोषणा कर दी कि- 'परिषद तथा 'शाश्वत धर्म' दोनों को शिशु अवस्था से बड़ा करने का कार्य मैं जयन्त को सौंपता हूँ।' पूज्य मुनिराज श्री जयन्त विजयजी महाराज 'मधुकर' ने करबद्ध हो, अपना शीश गुरुदेव श्री के चरणों में स्पर्श करते हुए गुरु की आज्ञा को अंगीकार कर लिया।

पूज्य मुनिराजश्री जयंतविजयजी महाराज 'मधुकर' ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्षों का विनियोजन परिषद को सुसंगठित, सुविकसित एवं सर्वांगीण स्वरूप सुशोभित करने में किया, इसका अपने मानस-पुत्र की भांति पोषण किया, इसके क्षण -क्षण की रचना अपनी संकल्पनाओं से चित्रित की, इसे सांगोपांग सुडौल बनाने के लिये अपने उपदेशों के माध्यम से संवर्धित किये और परिषद को लघु बीज से विराट वटवृक्ष बनाने में अपनी दक्षता तथा कौशल को खाद-जल-वायु के रूप में प्रयुक्त किया। परिषद ने किन संकटों का सामना नहीं किया- कैसे अवरोध नहीं आये- इसे विफल बनाने के लिय कौन-सा पैंतरा शेष नहीं रखा गया, समय-समय में इसकी आधार भूमि को कमजोर किया गया लेकिन पूज्य सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज ने हर बार इसे संभाला, इसे कभी ऊर्जा दी तो कभी शक्तिवर्धक खुराक संचरित की।

युवाओं को बार-बार प्रेरित किया, उनके हृदयों में गुरुभक्ति, गुरुगच्छ सेवा, समाजोत्थान की ज्योति प्रज्वलित की। उन्हें दिशा दी, उनकी अलसाई आँकों में सक्रियता आंजी, उनके प्रमाद को दूर किया, उनकी नसों में नये रक्त को प्रवाहित किया तथा समाज के इस महायज्ञ में अपने समय व शक्ति की आहुति देने के लिये प्रेरित किया। गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्यश्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज ने श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद को अखिल भारतीय स्वरूप तक विकसित कर दिया है, यह श्वेताम्बर जैन समुदाय का सबसे बड़ा तथा सुव्यवस्थित संगठन है। ◆◆◆

# गुरूदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरिजी म. द्वारा लिखित पत्र (हस्ताक्षर)

શ્રી હસમુખભાઈ વેડલીઆર.

ધર્મલાભ.

પત્ર મળ્યો. આનંદમાં છીએ.

ડીસામાં ગુરુદેવનાં દર્શન થયાં, ભગવાન દર્શનો દર્શનનો લાભ મળ્યો, આનંદ થયો. વ્યક્તિના દિલમાં ગુરુદેવ હોય એને જ દર્શન થાય. જેને શ્રદ્ધા ન હોય તેને દર્શન કરે તોય દેખાય નહિ.

રખેવાળનું કટીંગ મળ્યું.

શાશ્વતધર્મનો અંક આવતાં જેમ મેં એમને એમ વખતે સ્પષ્ટ શબ્દોમાં જણાવ્યું કે આવા ફોટાનું આથી કંઈ પ્રચાર નથી થતો. આવું આ ચિત્રણ યોગ્ય નથી. એમને મેં કહ્યું. તેમનું કહેવું હતું કે ચિત્ર મય ફેશન ની દુનિયામાં દર્શન કરાવવાનો જ અમારો હેતુ હતો.

કામળી ઓઢાડાઈ હતી એનો અર્થ એ છે કે વડીલને ઓઢાડી અને નાનાને વહોરાવી, અર્પણતા કરાઈ કરેવાય એટલે એમાં કંઈ અજુગતું નથી.

મારી તબિયત હવે સારી થઈ રહી છે.

ચિંતા જેવું નથી. સાધ્વીજીને સુખશાતા પૂછશો

વેડલીઆમાં સૌને ધર્મલાભ કહેશો.

ઠાકુરદાસ, ધર્મ ઉદ્યમ રાખશો.

નવકાર આરાધનાની તૈયારીઓ શરૂ થવા લાગી છે લગભગ ૬૦૦ આરાધકોની આરાધના થશે.

જયંતસેનસૂરિ
ધર્મલાભ

ગાંદર

તા. ૬/૮/૨૦૦૮

# स्मृति सुमन

(डॉ. कोकिला भारतीय)

'धरा, व्योम, दिगपाल, अष्टवसु दुखित- द्रवित नत् स्पन्दन,
स्वर्गारोहण तिथि मम गुरु की, व्यथित- त्रसित मन करता क्रन्दन ॥

(1)

पुण्य पुरुष से प्रेरणा पाते, जो सबको चलना सिखलाते,
छोड़ गए अनाथ नाथ अब, बेबस वन वियोग को सहते,
मातृ- शक्ति को मंच दिया, फहराया परिषद का पंचम,
स्वर्गारोहण तिथि मम गुरु की, व्यथित- त्रसित मन करता क्रन्दन ॥

(2)

भाव सिमट गए, शब्द न मिलते हाशिये सा बढ़ते जाते,
अविस्मरणीय गुरु की स्मृति में, रोम सावन से झरते,
ओ ! गुरुवर मन मन्दिर सजाओ, सिखला दो जीना अब जीवन,
स्वर्गारोहण तिथि मम गुरु की, व्यथित-त्रसित मन करता क्रन्दन ॥

(3)

प्रज्ञ, सुज्ञ, विज्ञागम वेत्ता, अनेकानेक पदवियों के जेत्ता,
प्रखर-प्रवक्ता, ग्रन्थ सृजेता, परिषद् औ शाश्वत के प्रणेता,
महा विश्व के पान्थालय के महापथिक पथ तुमसे था पावन,
स्वर्गारोहण तिथि मम गुरु की, व्यथित -त्रसित मन करता क्रन्दन ॥

(4)

अनासक्त थे त्यागी विरागी, अनुपम- निरूपम धर्म-धुरन्धर,
प्राची-पुरुष से प्रकटे जग में, करूणा झरती झर-झर-झर
ओ युग दृष्टा, ओ युग सृष्टा, संयम-सौम्य मूर्त जिन भूषण,
स्वर्गारोहण तिथि मम गुरु की, व्यथित- त्रसित मन करता क्रन्दन ॥

(5)

बागडोर सौंपी है संघ की, श्री नित्यसेन श्री जयरत्नसूरि सा. को,
सूरिपद की सारी शक्ति, दो प्रशस्ति इन गुरुवरद्धय को,
युवाशीष पा संघ चमकाएँ, सुगठित, सुरभित सरसित चंदन,
स्वर्गारोहण तिथि मम गुरु की, व्यथित त्रसित मन करता क्रन्दन।।

(6)

वाग्दान दो मातृ शारदा, गुरु गुरुता का करें आचमन,
विनयावत् अर्पित प्रणाम, धरु कोटि-कोटि करे 'कोकिल' वन्दन,
साहित्य गगन के तेजपुत्र, ओ दिवमणि महकाओ, अब मलयन,
स्वर्गारोहण तिथि मम गुरु की, व्यथित-त्रसित मन करता क्रन्दन ।।
व्यथित- त्रसित मन करता क्रन्दन ।।

◆◆◆

संस्मरण

## मेरे जीवन की उज्ज्वल उपलब्धि

(मधु सुरेन्द्रकुमार गंग)

सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान शीतल, आमवृक्ष की तरह गहरे, अमृत के समान मीठे 'मधुकरजी' को जितनी भी उपमाएँ दें कम हैं ?

गुरुदेव के रतलाम चातुर्मास में मेरे जीवन में भी एक स्वर्ण अवसर आया। प्रवेश के बाद जब गुरुदेव 'जयन्तसेन धाम' पर विराज रहे थे तब हम आषाढ़ सुदी 12 के दिन दोपहर में गुरुदेव के दर्शन हेतु गये थे। वहाँ पहले से ही 100 (सौ) के करीब दर्शनार्थी बैठे हुए थे।

मैंने सोचा मैं गुरुदेव से अपने मन की बात कैसे बोलूँ, फिर भी मैंने हिम्मत करके गुरुदेव से बोला मेरी भावना है कि मेरे को शीलव्रत के सौगंध लेना है।

गुरुदेव ने मुझे कहा इससे बड़ी बात क्या होगी ? मेरा रतलाम का चातुर्मास सफल बुलालो श्रावकजी को दे देता हूँ। वे किसी काम में व्यस्त थे। वहाँ पर इनको जो भाई पहचानता था वह बुलाकर ले आया और गुरुदेव की हम पर असीम कृपा रही आपने हम दोनों को पच्चक्खाण करवा दिये। आपके चातुर्मास से रतलाम तो गद्गद् हुआ ही पर हमारे जीवन में यह स्वर्ण अवसर आया। पूज्य गुरुदेव का यह उपकार इस जन्म में तो क्या जन्मोजन्म तक स्मरण रहेगा। हम जब भी जयन्तसेन धाम जाते है वहाँ हर जगह कण-कण में गुरुदेव की छबि नजर आती है।

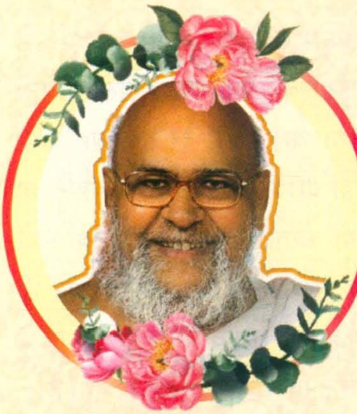

(लेखांक-11)

धारावाहिक उपन्यास

# किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

राजा के इस कथन के पश्चात् किसी ने कुछ भी नहीं कहा और सब वहाँ से हट गए। थोड़ी देर के बाद राजा ने वहाँ से आगे बढ़ने का आदेश दिया। काफला चल पड़ा और संध्या होने से पूर्व ही ये सब एक छोटे नगर में जा पहुँचे। नगर की जनता ने अपने राजा का भावभीना स्वागत किया। स्वागत सत्कार के कार्यक्रम में संध्या हो गई थी। इस कारण अन्य कोई कार्य नहीं हो पाया। नगर के प्रमुख नागरिक राजा से मिलने अवश्य आए। वे भी थोड़ी देर के पश्चात् चले गए।

जाते-जाते ये लोग अपने नगर की कुछ समस्याओं की ओर राजा का ध्यान आकर्षित कर गए थे। राजा उन समस्याओं पर चिंतन करता रहा। उसने अपने दो-तीन प्रमुख अधिकारियों को बुलाकर इस विषय पर विचार-विमर्श भी किया और मन ही मन निर्णय भी कर लिया। चूंकि रात गहरा गई थी, इसलिये सब अपने-अपने शयन कक्ष में जाकर सो गए।

राजा वीरधवल जिस समय अपने पर्यंक पर लेटा तो उसे दिन में अपने अधिकारियों द्वारा दिया गया परामर्श स्मरण हो आया। वह अपने द्वारा अपनी स्वर्गीय रानी को दिये गये वचन और अधिकारियों द्वारा कहे गये शब्दों पर विचार करने लगा। इस विचार के चक्कर में उसकी आँखों से नींद गायब हो गई। एक लम्बी अवधि के पश्चात् आज उसने रानी का अभाव महसूस किया। इसके पहले आज तक उसने ऐसा अनुभव नहीं किया था। विचारों के ऊहापोह में वह पर्यंक से उठकर गवाक्ष में आकर खड़ा हो गया। बाहर देखा तो चाँदनी छिटकी हुई थी। मंद-मंद पवन बह रहा था। आज रात्रि की यह नीरवता उसे खटकने लगी। इसी समय

उसने देखा कि कोई युवती बड़ी

सतर्कता के साथ अपने आसपास, आगे-पीछे देखती हुई एक ओर चली जा रही है। राजा की दृष्टि उस पर अटक गई। राजा ने देखा कि उसी समय एक अन्य मार्ग से एक युवक आया और उस युवती के समीप आकर खड़ा हो गया। वह युवती भी चलते-चलते रुक गई। दोनों आमने-सामने थे। क्षणभर तो वे ऐसे ही खड़े रहे, किन्तु क्षण भर बाद दोनों एक-दूसरे की बाँहों में समा गए। राजा इस दृश्य को देखकर विचलित-सा हो गया। वह वहाँ से हट गया और उसके मुख से निकल गया- 'कोई है।'

'जी, अन्नदाता ! क्या आज्ञा है ?' सेवक ने तत्काल उपस्थित होकर निवेदन किया।

राजा को कुछ कहना तो था नहीं। वह कुछ देर तक अन्यमनस्क खड़ा रहा। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था कि उसने सेवक को किसलिये बुलाया है? उसने सेवक को कहा- 'कुछ नहीं ! तुम जाओ, अपना काम करो।' सेवक चला गया। वह राजा के इस व्यवहार पर विस्मित था। जब से वह सेवा में है, तब से आज तक उसने राजा को ऐसी स्थिति में नहीं देखा था।

राजा वीरधवल विचारों के ऊहापोह में सो न सका। रात्रि के अंतिम प्रहर में उसे नींद आई। जब उसकी आँख खुली तो सूर्य चढ़ आया था। इतनी देर तक वह कभी सोया नहीं था। सूर्योदय के काफी पहले वह उठ जाया करता था। उसके देर तक सोये रहने पर उसके कुछ अधिकारियों को भी आश्चर्य हो रहा था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि आज उनके राजा को क्या हो गया है।

नित्यकर्म से निवृत्त होने के पश्चात् राजा जनता से मिलने के लिये तैयार हो गया। उसने अपने सेवक के माध्यम से यह सूचना भिजवा दी।

जिस स्थान पर राजा जनता से मिलने के लिये बैठा था, वह एक विशाल सभा भवन के समान था। नागरिकों का आवागमन शुरू हो गया। लोग आते, अभिवादन करते, राजा को सादर कुछ भेंट देते, अपनी बात कहते और चले जाते। दोपहर तक यह कार्यक्रम चलता रहा। राजा वहीं मौके पर नागरिकों की समस्याओं का समाधान भी करता जा रहा था। अंत में राजा ने इस नगर में पाठशाला के लिये नये भवन निर्माण करवाने, औषधालय प्रारंभ करने और पेयजल की सुविधा उपलब्ध करने की घोषणा की।

(क्रमशः)

◆◆◆

# जैनों की घटती जनसंख्या की समस्या

(जैन जसराज देवड़ा धोका)

जैन धर्म के चौवीस तीर्थंकरों की जीवन गाथा व जैन आगम शास्त्रों में वर्णित आलेखों के अनुसार पुरातन काल में हमारे देश में जैनों की संख्या विशाल थी लेकिन वर्तमान समय में पूरे देश में जैनों की संख्या अंकों में करीब 75 लाख तक सिमट कर रह गई।

**जैन जनसंख्या घटने के कारण**

1. संयुक्त परिवारों के बजाय एकांकी परिवारों का होना। संतानों के पालन-पोषण बोझ लगना।

2. गर्भ निरोधक साधनों व परिवार नियोजन का अत्यधिक प्रचार होना। ज्यादा संतानों से शारीरिक बनावट को क्षति पहुँचने का भ्रामक प्रचार।

3. शादी-विवाह अति खर्चीले होना, समाज में दहेज का ज्यादा लेना-देना, प्रतिष्ठा की वजह होना अतः परिवार में लोग ज्यादा संतानें होना पसन्द नहीं करते हैं।

4. उच्च शिक्षा का अति खर्चीला होना और बगैर उसके रोजगार नहीं मिलना। उस वजह से भी लोग ज्यादा संतान नहीं चाहते हैं।

5. साधार्मिक भाईयों को सम्पन्न परिवारों से कोई सहायता प्राप्त नहीं होती है। बड़े परिवारों को समाज में प्रोत्साहन की कमी।

6. अजैनों को जैन बनाने के लिए समाज में कोई प्रयास नहीं होता है, कमजोर वर्ग को शिक्षा-स्वास्थ्य-रोजगार आदि में सहायता करने से नये जैन बन सकते हैं।

**समय परिवर्तनशील है, इतिहास स्वयं को दोहराता है। आने वाले भविष्यकाल में जैनों की संख्या अच्छी होगी। सभी समस्याओं का निवारण संभव है।**

1. जैन शासन के सभी साधु-साध्वी भगवंत मौजूदा परिस्थितियों से लोगों को निकालने हेतु सद्उपदेश दें। समाज में साधार्मिक सहायता देने हेतु प्रोत्साहित करें।

2. समाज का हर व्यक्ति हर बड़े-ज्यादा संतान वाले परिवार में अपने लड़के-लड़की की शादी करें।

3. ज्यादा संतान के दंपत्ति को

समाज में प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान करें।

4. जैन धर्म के स्कूल कालेज खोलें व कम खर्चीली शिक्षा सुविधाएँ दें।

5. गच्छ संप्रदायों का भेद मिटायें, तीर्थंकर भगवानों को ही सर्वोपरि समझें। कोई तरह के सांप्रदायिक विवाद न हों।

6. जैनेत्तर जैन धर्म मानता हो तो उसके साथ लड़के- लड़कियों के रिश्तों का आदान-प्रदान करें।

7. धार्मिक कट्टरता से बचें, नये जैनी को सरलता से धर्म समझाने, सस्ती आवास व्यवस्था दें।

8. दिखावा, आडम्बर-ख्याति-दान का प्रचार कम से कम हो ताकि लोगों में हीन भावना न पनपे। नाम की भूख नहीं रहे, आज भी कई ऐसे धार्मिक स्थान हैं जहाँ दाताओं का कहीं भी नाम नहीं है।

9. हर जैनी अगर एक लक्ष्य रखे, मुझे जैनों की संख्या बढ़ाने हेतु हर संभव प्रयत्न करना है तो अवश्य कामयाबी मिल सकती है।

10. भ्रूण हत्या पर पूर्णतया रोक लगनी चाहिए।

◆◆◆

## सुबह-सुबह प्रभु स्तुति करनी चाहिए

पल पल मेरे हर रोम में, हर श्वांस में प्रभु तुम रहो ।
जीवन की अन्तिम श्वास तक, मेरे हृदय में तुम रहो॥1॥
हे स्वामी परम कृपालु मेरी, एक है बस याचना ।
कर दो दया अब ना पड़े, संसार में और नाचना ॥2॥
चाहूं नहीं वैभव प्रभुजी ना ही झूठी नामना।
जगबंधु अंतरयामी मेरी, एक है यही कामना ॥3॥
भवों भव मिले शासन तेरा, प्रभु चरण सेवा पाऊँ मैं।
शीतल चरण की छाह में , वीतराग खुद बन जाऊँ मैं ॥4॥
मेरे हृदय का हर अजु, उपकार का सुमिरन करे।
मेरे हृदय की धड़कने प्रभु ना का ही रटन करे॥5॥
है पास मेरे क्या प्रभु, जो आपको अर्पण करूं ।
ऐसे प्रभु श्री आदि जिनको, भव से वंदन करूं ॥6॥
प्रभु पार्श्व तो निश्चल रहे, हर मोड़ पे हर राह में ।
मैं तो जीवन हारा हुआ, नश्वर सुखों की चाह में ॥7॥

– छगनलाल भुगड़ी

सेहत-शाश्वत

# कैसे पहचानें कि नजर लगी है ?

जब अचानक बच्चा अकारण ही रोने लगे, भूख का एहसास नहीं हो, खाना दिए जाने पर ना खाए और आँखों में अजीब सा खालीपन दिखे या फिर चेहरे पर ऐसे भाव हों, मानो वह सबसे अजनबी है और बाकी लोग भी उससे संबंधित नहीं हैं। युवा व अधेड़ व्यक्ति चिड़चिड़ाने लगे, आँखों में उनके भी अजनबीपन हो, बनते कार्य बिगड़ने लगें, सड़क पर सीधे चलते हुए अकारण विवाद होने लगे, अथवा ट्रैफिक के सभी नियमों का पालन करते हुए भी, हल्की गति में चलते हुए भी यदि वाहन टकरा जाए तो मान लीजिए कि नजर लगी हुई है और नकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति के प्रभा मंडल को प्रभावित कर रही है। नजर उतारना- यह स्पष्ट है कि नजर उतारने का तात्पर्य ऊर्जा क्षेत्र के नकारात्मक छिद्र को बंद करना है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि ऊर्जा के अनुपात को पुनः स्थापित करना ही नजर उतारना है। नजर उतारने की प्रक्रिया में जो भी वस्तु नजर उतारने में प्रयुक्त होती है, उसे शरीर से 3-4 इंच दूर ऊपर से नीचे फिराया जाता है। स्पष्ट है कि नजर उतारना आँरा या प्रभामंडल में आई कमजोरी को दूर करना है।

*** नजर उतारने की विविध प्रक्रियाएँ सम्मोहन -** वैज्ञानिकों का एक बड़ा वर्ग यह मानता रहा है कि कुछ मनुष्य न्यूट्रॉन उत्सर्जन करके या न्यूट्रॉन कणों की बौछार करके सम्मोहन कर सकते हैं। इसके लिए उच्चकोटि की यौगिक शक्तियाँ या आत्मबल चाहिए। विश्वभर में ऐसा वर्ग भी उपलब्ध है जो सामान्य लौकिक प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रभामंडल को ठीक करते हैं। दरअसल इस प्रक्रिया में प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का स्वयं का प्रभामण्डल बहुत अधिक होता है। ऑरा नापने के एक परीक्षण में पाया गया कि तुलसी की परिक्रमा करने के बाद व्यक्ति के ऑरा क्षेत्र में 10-14 इंच का इजाफा हुआ।

*** घरेलू उपचार-** घर में नजर उतारने के लिए प्रायः नमक, लाल मिर्च, हींग, नींबू, सरसों के तेल की बत्ती आदि का प्रयोग किया जाता है। इन सभी

वस्तुओं का ऑरा अधिक पाया गया है और इसलिए इन सभी वस्तुओं से इस प्रक्रिया को अच्छी तरह से अंजाम दिया जा सकता है।

* **कैसे बचाएं खुद को नजर से–** ऑरा बढ़ाएं– नजर से खुद को बचाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि हम अपनी ऑरा या प्रभामंडल को बढ़ाएं और मजबूत करें। इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है सकारात्मक विचारधारा और अपने आसपास ऐसी चीजों का प्रयोग जिनका ऑरा अधिक हो, जैसे तुलसी, आंवला।

* **पारम्परिक उपाय–** नजर से बचने के लिए काला धागा पहनाने या काला टीका या काजल लगाने की परंपरा रही है। स्पष्ट है कि काला रंग, नजर लगाने वाले की एकाग्रता को भंग कर देता है। तिलक लगाने और मंगल-सूत्र पहनने, स्फटिक बनाने के पीछे यही भावना है। अतः यह मात्र चिकित्सा ना होकर आधुनिक विज्ञान और मनोविज्ञान के सम्मिलित प्रयोग की ऐसी पद्धति है जिसे कुछ लोग अंधविश्वास समझ बैठते हैं। यद्यपि कुछ प्रतिशत ऐसे लोगों का हो सकता है जो अनाड़ी हैं और इस कार्य को करते हैं।

◆◆◆

साहित्य समीक्षा

## प्रतिक्रमण सूत्र

पुस्तक- श्री सौ धर्म तपागच्छीय त्रिस्तुतिक श्री देवसी – पक्खी – चौमासी– संवत्सरी क्रम बद्ध सूत्र विधि सहित प्रतिक्रमण सूत्र पुण्य सम्राट लोकसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराजा के 85 वाँ जन्मोत्सव पर वर्तमान गच्छाधिपति आचार्यद्वय श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी एवं श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्ती साध्वी श्री अविचल दृष्टा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री अमित दृष्टा श्रीजी आदि साध्वी ठाणा-7 का धर्ममय आराधनामय रतलाम चातुर्मास हुआ। रतलाम चातुर्मास को चिर स्थाई बनाए रखने के लिए साध्वीजी म.सा. की प्रेरणा एवं पावन निश्रा में श्रीमती माणकबाई रतनलालजी गंग परिवार द्वारा सौधर्म तपागच्छत्रिस्तुतिक देवसी, पक्खी, चौमासी, संवत्सरी प्रतिक्रमण की क्रम बद्ध सूत्र विधि सहित 'प्रतिक्रमण' का प्रकाशन श्री छाजेड़ प्रिंटरी प्रा.लि. रतलाम द्वारा किया गया। उक्त पुस्तक से जिन्हें सभी सूत्र याद है लेकिन प्रतिक्रमण विधि करने में कठिनाई हो रही उसका समाधान किया गया है। इसमें सामायिक विधि से लेकर देवसी पक्खी (चौमासी संवत्सरी) प्रतिक्रमण कि सारी विधि क्रम बद्ध दी गई है आप इसे लेकर पूरा प्रतिक्रमण विधि सहित कर सकते हैं। यह पुस्तक 'श्री सुविधि नाथ धार्मिक पाठशाला नीम वाला उपाश्रय रतलाम (सुरेन्द्र गंग पाठशाला संचालक 9826748788, 9229445037) पर एवं 'श्री राज राजेन्द्र तीर्थ म्युजियम' पर उपलब्ध हैं वहाँ से प्राप्त की जा सकती है।

# जातिवाद का ज़हर फैलाने वाला 'अनूप मण्डल'

(श्री उत्तम डामराणी जैन, ऐश' हैदराबाद)

असामाजिक अनूप मंडल जो कि राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, कर्नाटक में अशिक्षित लोगों को बरगलाकर प्रलोभन देकर अपने अनुयायी बनाकर जैन समाज के विरुद्ध भड़का रहा है। उक्त मंडल जैन संतों पर पदविहार में हमला करके उनके पोस्टर व पुतले बनाकर जला रहा है। इनका कहना है कि विश्व में जितनी आपदाएँ व महामारियाँ फैल रहीं हैं इनको फैलाने में जैन संतों का व जैनियों का हाथ है, और इनका हेडक्वार्टर बरमूडा ट्राईएंगेल में है, जहाँ से सारी विद्याएँ संचालित होती हैं, जो सुनने में भी कितना हास्यास्पद लगता है।

जैन साधु-संत जो अपने जप-तप और अहिंसा के लिये पूरे विश्व में विख्यात हैं उनकी छवि को धूमिल कर अनूप मंडल मात्र अपनी रोटियां सेकने में लगे हुए हैं। कई प्राकृतिक आपदाओं में जैन समाज ने अपने समाज के लिये ही नहीं अपितु जितनी जाति, धर्म, परंपरा के लोग हैं जो जरूरतमंद हैं उनकी मदद से कभी परहेज नहीं किया। यह विश्वविख्यात है। कितनी ही गौशालाएं आज जैनियों के संचालन से सुचारू रूप से चलायमान हैं। जैनियों को बाल्यावस्था में ही जियो और जीने दो का संदेश सिखा दिया जाता है। ऐसे में ऐसी बातें निराधार हैं। अतः ऐसे असामाजिक तत्वों पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाकर इन लोगों की सीबीआई द्वारा जांच करवाई जाए।

गौरतलब है कि उक्त मंडल पर पूर्व में भी 50 से अधिक आपराधिक केस राजस्थान में दर्ज हैं। बावजूद भी यह अपनी गतिविधियों से बाज नहीं आ रहे और तो और यह हिन्दू सनातन धर्मग्रन्थ गीता जी आदि को भी सत्य नहीं मानने। 2500 वर्ष पुराने प्रभु महावीर के शासन को यह चुनौती दे रहे हैं। आने वाले समय में अंकुश नहीं लगाया गया तो कई वर्गों पर यह अपना निशाना बना सकते हैं। सभी जैन एकजुट होकर अपने-अपने समूह से एफआईआर दर्ज करवाएँ और इस निरंकुश अनूप मंडल पर कानूनी करवाई से अंकुश लगाने का प्रयास करें।

◆◆◆

# आत्मिय निवेदन

(1) इतना ही लो थाली में व्यर्थ न जाये नाली में ।
(2) जीते जी रक्तदान, मरणोपरान्त नैत्रदान ।
(3) करनी है जीवन की रक्षा, कन्याओं की करो सुरक्षा।
(4) खाओ मन भर झूठा न छोड़ो कण भर।
(5) चाहे जो मजबूरी हो सामायिक-स्वाध्याय जरूरी हो।
(6) हाय, हलो छोड़िए जय जिनेन्द्र बोलिए।
(7) मानवता के दो आधार सदाचार और शाकाहार ।
(8) स्वदेशी अपनाओ और देश को बचाओ।
(9) कोका कोला जहर कोला।
(10) पेप्सी कोला जहर कोला।
(11) पान मसाला मौत मसाला।
(12) शाकाहार से जीवनदान, व्यसन मुक्ति से जनकल्याण।
(13) कटती गायें करें पुकार बन्द करो यह अत्याचार।
(14) गाय बचेगी देश बचेगी।
(15) बंद करो-बंद करो मांस निर्यात बंद करो।
(16) हर प्राणी से प्यार-सुखी जीवन का आधार ।
(17) जहाँ पर आपस में प्रेम है ।
वहीं पर सुख और चैन है।
(18) जीवन में सब सहना सीखो, प्रेम में सब रहना सीखो।
(19) इस धरती पर सभी प्राणियों को जीने का अधिकार है।
जीओ और जीने दो यही सभी धर्मों का सार है।
(20) मिलन उत्सव है और मिलकर काम करना महोत्सव है।

**(प्रेषक - महेश नाहटा, नगरी (छत्तीसगढ़, मो. 09406201351)**

◆◆◆

# प्रियदर्शी बिगुल बजाना है

(श्री कुलदीप पारदर्शी, राष्ट्रीय कवि))

सद्धर्म का झण्डा दुनिया में मिलकर ही फहराना है।
इस वसुन्धरा से सम्प्रदाय के वाद को हमें मिटाना है।। स्थाई ।।

तू मुझमें है, मैं तुझमें हूँ, कैसी जग की प्रीत है।
लय और ताल बिना जीवन का, सूना-सूना संगीत है।
इस बेसुरे वाद्ययन्त्रों में स्वरलहरी गूँजाना है।।1।।

बात-बात में बने बतंगड़, भ्रम में है भरमाए ।
दिशाहीन नैतृत्व मिला है, अपनों में ही बौराए ।
विविध पंथ पर चलो भले ही, सबका एक ठिकाना है।।2।।

यह वाद इस धरती पर, विष से भी भयंकर है।
मंथन से निकला हलाहल, पी लेगा जो शंकर है।
स्नेह सरिता सबमें सरसे, प्रेम पीयूष पिलाना है।।3।।

धर्म बँट गया टुकड़ों में, कितनी हुई हानि है।
एकता की बाँते लगती, किस्सा और कहानी है।
जैनम् जयति शासनम् का, 'प्रियदर्शी' बिगुल बजाना है।।4।।

## कर्त्तव्य बोध

1. जो अतीत के पीछे दौड़ता है और भविष्य की चिन्ता में डूबा रहता है वह कभी शांति का अनुभव नहीं कर पाता।
2. जिन्होंने धर्म - तत्त्वों को ठीक तरह से जान लिया, वे विषम परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते।
3. जो भोग-वासना से अपने मन को हटा लेता है, वह दुःख से दूर रहता है।
4. श्रद्धा से दिया गया सत्पात्र को दान, पुण्यार्जन का कारण बनता है।

# ગુર્જર જૈન જયોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯


# ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

## અમનોજ્ઞ શબ્દ ન બોલીએ

''तुमं तुमंति अमणून्न'' सव्वसो तं न वत्तए ।

('તું' અને 'તમે' જેવા અસુંદર શબ્દો કદી ન બોલીએ)

'મા'ને અને ઈશ્વરને 'તું' કહેવાય છે, બીજા બધાને 'આપ' કહેવા જોઈએ. આપ શબ્દ સન્માનસૂચક છે. બીજાની સાથે વાત કરવામાં અને પત્ર વ્યવહારમાં આ જ શબ્દનો પ્રયોગ કરવો જોઈએ. જો આપણે બીજાને માટે 'આપ' શબ્દનો પ્રયોગ કરીશું તો આપણે માટે પણ તેઓ એ શબ્દ વાપરી આપણને માન આપશે.

જ્યાં 'આપ' શબ્દનો પ્રયોગ કરવો જોઈએ, ત્યાં 'તું' અથવા 'તમે'નો પ્રયોગ અનુચિત અથવા અમનોજ્ઞ લાગે છે. બીજાઓને જ્યારે 'તું' અથવા 'તમે' કહીએ છીએ ત્યારે સાંભળવાવાળાને ખરાબ લાગે છે. અને તેઓ બોલનારને અભિમાની સમજી લે છે. અહંકારી વ્યક્તિઓની વાતો લોકોને સાંભળવી ગમતી નથી.

ખરેખર આ શબ્દો આપણને મર્યાદાથી વધારે અથવા જોઈએ તે કરતાં વધારે મહત્વવાળા બતાવતા તથા બીજાઓને આપણાથી નીચે અથવા તુચ્છ સમજવાની મનોવૃત્તિ બતાવતા છે.

બીજાઓને હલકા સમજવા એ પોતે જ હલકી વૃત્તિ છે, જે સતપુરુષોમાં દેખાતી નથી. તેઓ બીજાઓને પણ સાચી સલાહ આપતાં કહેતાં હોય છે 'તું' અને 'તમે' જેવા અસુંદર શબ્દો કદી ન બોલીએ.

-સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર, ૧/૯/૨૭

## ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ ભગવંતો ૧૯ જુલાઈ ૨૦૨૧ના રોજ રાજસ્થાનના જાલોર નગરે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કરશે....

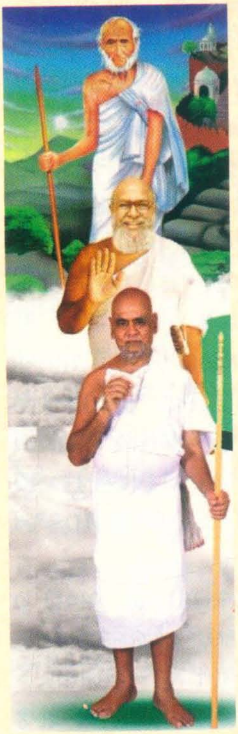

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ ભગવંતો મુનિરાજ શ્રી તારકરત્નવિજયજી મ.સા.ના દિક્ષા દિવસે તા. ૧૯ જુલાઈ ૨૦૨૧ને સોમવારના મંગલમય દિવસે રાજસ્થાનના જાલોર નગરે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કરશે.

તાજેતરમાં જાલોર શ્રી સંઘ શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે બિરાજમાન પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીના દર્શન-વંદન તેમજ ચાતુર્માસાર્થે પધારવા વિનંતી કરવા પધાર્યો હતો. પૂજ્યશ્રીએ તા. ૧૯-૭-૨૦૨૧ના મંગલમય દિવસે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કરવાની જાહેરાત કરી હતી, જેથી જાલોર સંઘ અતિ હર્ષોલ્લાસમાં આવી જઈ જયજયકારના નારાઓથી શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધરાને ગુંજવી દીધી હતી. શ્રી જયંતસેન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલના અધ્યક્ષ શ્રી મહેન્દ્રભાઈ વોરા, શ્રી રમેશભાઈ વોહેરા તથા ટ્રસ્ટી મંડળે શ્રી જાલોર સંઘના આગેવાનોને અભિનંદન પાઠવી બહુમાન કર્યું હતું.

## અદાણી બબુબેન ચુનીલાલ નાગરદાસ પરિવારના ગૃહસ્થળે શ્રી પાર્શ્વનાથદાદાની પધરામણી

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તી મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં સુરતનગરે અદાણી બબુબેન ચુનીલાલ નાગરદાસ પરિવારના ગૃહસ્થાને પુરુષાદાનીય શ્રી પાર્શ્વનાથદાદાનો ભવ્ય પ્રવેશ અને પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી. સુશ્રાવક શ્રી વિજયભાઈ અદાણી તથા અભિગ્રહધારી સુશ્રાવિકા દિવાબેન અદાણીની વર્ષોની ઉત્કૃષ્ટ ભાવના સાક્ષાત્કાર થતાં સમસ્ત પરિવારમાં હર્ષની હેલી વરસી ગઈ હતી.

## શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે......

## પ.પૂ. યોગિરાજ કૃપાસિન્ધુ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની ૨૫મી સ્વર્ગારોહણ તિથિ નિમિત્તે અને શ્રી ભાંડવપુર તીર્થે જિર્ણોદ્ધારિત ભવન આદિ સમસ્ત સુવિધા ચતુર્વિધ સંઘ સેવાર્થે ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશિર્વાદ તથા ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં શ્રી મહાવીર જૈન શ્વેતાંબર પેઢી (ટ્રસ્ટ), શ્રી વર્ધમાન - રાજેન્દ્ર જૈન ભાગ્યોદય ટ્રસ્ટ (સંઘ) શ્રી ભાંડવપુર તીર્થના તત્વાધાનમાં મેંગલવા નિવાસી માતુશ્રી સુઆદેવી કેવલચંદજી મેસાજી બાગરેચા પરિવાર દ્વારા આયોજિત શ્રી ભાંડવપુર તીર્થે પ.પૂ. યોગિરાજ કૃપાસિંધુ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની ૨૫મી સ્વર્ગારોહણ તિથિ નિમિત્તે અને શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ જિણોદ્ધારિત ભવન આદિ સમસ્ત સુવિધા ચતુર્વિધ સંઘ સેવાર્થે તા. ૨૦-૬-૨૦૨૧ને રવિવારના રોજ ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

આ રૂડા અવસરે સવારે ૬ કલાકથી શ્રી શાંતિગુરૂ ચાલીસા પાઠ, સવારે ૭ કલાકથી ૮-૩૦ કલાક દરમ્યાન પ્રક્ષાલ-પૂજા, સવારે ૮-૩૦ કલાકથી ૯-૩૦ કલાક દરમ્યાન અલ્પાહાર, સવારે ૧૦-૩૦ કલાકથી ૧૨ કલાક દરમ્યાન ગુરૂ ગુણાનુવાદ - બહુમાન, બપોરે ૧૨ કલાકથી ૧-૩૦ કલાક દરમ્યાન સુરૂચિ ભોજન, બપોરે ૨ થી ૪ કલાક દરમ્યાન શ્રી શાંતિવિજયજી અષ્ટપ્રકારી પૂજા, સાંજે ૫ થી ચૌવિહાર, ત્યારબાદ ગુરૂભક્તિ અને આરતી સહિત અનેકાનેક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

### પરિષદ આહ્‌વાન....

અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા પરિષદ રાષ્ટીય અધ્યક્ષ શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ, વરિષ્ઠ ઉપાધ્યક્ષ શ્રી પ્રકાશજી હીરાણી અને રાષ્ટ્રીય મહામંત્રીશ્રી સુધિરજી લોઢાએ પ.પૂ. સંયમ સ્થવિર, યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની ૨૫મી સ્વર્ગારોહણ તિથિએ તપ, જીવદયા, પરોપકારના વિવિધ આયોજન કરવા આહ્‌વાન કર્યું હતું. આયંબિલ તપ, સમુહ સામાયિક, નવકાર જાપ, પ્રભુ પૂજા, ગુરૂ ગુણાનુવાદ, અંગરચના, અભિષેક, પ્રભુ ભક્તિ, ગરીબોને ભોજન, ગાયોને ઘાસ-ગોળ, પક્ષીઓને ચણ, દર્દીઓને ફળ-દવા વિગેરે કાર્યો દ્વારા પૂજ્ય યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ને શ્રદ્ધાપુષ્પ સમર્પિત કરવાનું જણાવ્યું હતું.

## તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિ ગચ્છ તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના શ્રમણ–શ્રમણીવૃંદના ચાતુર્માસની યાદી

**જાલોર (રાજ.) :** અખંડ સૂરિ મંત્ર આરાધક, યુગનાયક, ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ **શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.**, વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી વીરરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો.

**શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ (રાજ.) :** ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક, સૂરિમંત્ર આરાધક આચાર્ય **શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.**, આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો.

**પાલીતાણા (ગુજ.) :** મુનિરાજશ્રી અપૂર્વરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી વિનયરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી અજિતસેન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા.

**પાટણ (ગુજ.) :** મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા.

**સુરત (ગુજ.) :** મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા

**અમદાવાદ (ગુજ.) :** મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા

**પેન્ડીગ :** મુનિરાજશ્રી સંયમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા

### શ્રમણીવૃંદ

**અમદાવાદ (ગુજ.) :** માલવમણી પ.પૂ. વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા., પ.પૂ. સાધ્વીજી શ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

**જાવરા (મ.પ્ર.) :** પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

**ચેન્નાઇ (તામિલનાડુ) :** પ.પૂ. સ્વર્ગસ્થ સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી મ.સા.ના બહેન સાધ્વીજીશ્રી કૈલાસશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

**તેનાલી (આંધ્ર) :** પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી આત્મદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

**શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ (રાજ.) :** પ.પૂ. સાધ્વીજી શ્રી અરૂણપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

**બાગ (મ.પ્ર.) :** પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

**બડનગર (મ.પ્ર.) :** પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

**મુંબઇ (મહા.) :** પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી, પ.પૂ. સાધ્વીજી શ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

ઉજ્જૈન નયાપુરા (મ.પ્ર.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી વિધ્વદ્ગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સુરત (ગુજ.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી શાસનલત્તાશ્રીજી મ.સા., પ.પૂ. સાધ્વીજી શ્રી અનેકાંતલતાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

પાટણ (ગુજ.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા., પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

પાલીતાણા (ગુજ.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

અમદાવાદ (નવા વાડજ) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી અધ્યાત્મકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

લવાણા (ગુજ.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી દિવ્યદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

ભીનમાલ (રાજ.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી નયનપ્રભાશ્રીજી મ.સા.

પાટણ (રાજ.) : પ.પૂ. સાધ્વીજી શ્રી પ્રિતીદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

થરાદ (ગુજ.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

મંદસૌર (મ.પ્ર.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

કુશલગઢ (મ.પ્ર.) : પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી અરહદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા.

## ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિશ્રી નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની નિશ્રામાં વડી દીક્ષા કાર્યક્રમ સંપન્ન : તા. ૧૧-૬-૨૦૨૧ શ્રી પેપરાલતીર્થ

(૧) મુનિરાજશ્રી સાધ્યરત્નવિજયજી મ.સા.
(૨) મુનિરાજશ્રી અધ્યાત્મસેન વિજયજી મ.સા.
(૩) મુનિરાજશ્રી અર્હમસેનવિજયજી મ.સા.
(૪) મુનિરાજશ્રી જયસેનવિજયજી મ.સા.
(૫) મુનિરાજશ્રી નિઃસંગરત્નવિજયજી મ.સા.
(૬) સાધ્વીજીશ્રી તહતીપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૭) સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષાર્થપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૮) સાધ્વીજીશ્રી વર્ધમાનનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૯) સાધ્વીજીશ્રી અનુયોગનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૦) સાધ્વીજીશ્રી જશનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૧) સાધ્વીજીશ્રી શ્રમણનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૨) સાધ્વીજીશ્રી ત્યાગનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૩) સાધ્વીજીશ્રી હીરનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૪) સાધ્વીજીશ્રી આર્હત્યનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૫) સાધ્વીજીશ્રી પ્રાતિહાર્યનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૬) સાધ્વીજીશ્રી આચારાંગનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૭) સાધ્વીજીશ્રી રત્નનિધિશ્રીજી મ.સા.

## અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા આયોજિત પુણ્ય સમ્રાટ વાત્સલ્યનિધિનો સેવાયજ્ઞ પુરજોશમાં

વર્તમાન પરિસ્થિતિમાં સમાજના કેટલાય પરિવારો આર્થિક સંકડામણ ભોગવતા હોઈ અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટ વાત્સલ્ય નિધિ પ્રકલ્પના માધ્યમથી સેવાયજ્ઞનો પ્રારંભ કરાયો હતો. કાર્યક્રમની શરૂઆતમાં પરિષદ તરફથી જરૂરિયાદ મંદ પરિવારોને રૂ. ૧૦૦૦૦/- એકે રૂપિયા દસ હજારની આર્થિક સહાયતા પ્રદાન કરવામાં આવી રહી છે. પ્રથમ મીટીંમાં આ પ્રકલ્પનો પ્રસ્તાવ શ્રી સંજયજી કોઠારી દ્વારા રજુ કરવામાં આવતાં રાષ્ટ્રીય કાર્યકારીણી દ્વારા એને તત્કાલ પ્રભાવશાળી કરવામાં આવ્યો હતો. અને પ્રથમ અનુદાનમાં રૂપિયા એક લાખની રકમ પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી રમેશભાઈ ધરૂએ પ્રદાન કરી હતી. યોજના વધુ વિસ્તૃત સ્વરૂપે ફલીફૂલી અને દાતાશ્રીઓનો સહકાર પ્રાપ્ત થતો ગયો. ત્યારે મ.પ. પ્રાંતીય અધ્યક્ષ શ્રી રાજેન્દ્રજી જૈન દંગવાડાવાલા પરિવાર તરફથી રૂપિયા પાંચ લાખનું અનુદાન પ્રકલ્પને પ્રાપ્ત થયું હતું. આ પ્રકલ્પમાં શ્રેષ્ઠીઓનો અમૂલ્ય સહયોગ પ્રાપ્ત થઈ રહ્યો છે. આ લખાઈ રહ્યું છે ત્યારે ૭૫ જરૂરિયાતમંદ પરિવારોને રૂ. ૧૦૦૦૦/-ની સહાય કરવામાં આવી છે.

## પરમ પૂજ્ય યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની ૨૫મી વાર્ષિક પુણ્યતિથિ નિમિત્તે અમદાવાદ ખાતે ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન

પરમ પૂય યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની ૨૫મી વાર્ષિક પુણ્યતિથિ નિમિત્તે તા. ૨૦-૬-૨૦૨૧ને રવિવારના રોજ શ્રી બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ - અમદાવાદના તત્વાધાનમાં અમદાવાદ ખાતેના દરેક ગુરૂમંદિરમાં આંગી, સ્નાત્રપૂજા, સમૂહ સામાયિક, નવકાર મહામંત્રના જાપ, આયંબિલ આરાધના વિગેરે તપ-આરાધનાના ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

**ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક, સૂરિમંત્ર આરાધક આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો તા. ૨૦-૭-૨૦૨૧ને મંગળવારના મંગલમય દિવસે શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ ખાતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કરશે.**

# પુણ્ય સમ્રાટ વાત્સલ્ય નિધિ પ્રકલ્પના લાભાર્થીપરિવારો

**૫ લાખના લાભાર્થી :** શ્રી રાજેન્દ્રકુમાર શંકરલાલજી સંઘવી (દંગવાડાવાળા) બડનગર, **૧ લાખના લાભાર્થી :** (૧) માતુશ્રી વિજયાબેન બચુભાઇ ચીમનલાલ ધરૂ પરિવાર મુંબઇ-થરાદ-પેપરાલ, શ્રી રમેશજી ધરૂ, (૨) શ્રી મિલાપચંદજી જેઠમલજી ચૌધરી બેંગ્લોર, (૩) શ્રી બાબુલાલજી સવાણી બેંગ્લોર (૪) શ્રી સૂર્યપ્રકાશજી મિશ્રીમલજી ભંડારી, ચેન્નાઇ, (૫) શ્રી બી.એમ. શાહ, જોધપુર. **૫૧ હજારના લાભાર્થી :** (૧) શ્રી સંજયજી કોઠારી - ઉજ્જૈન, (૨) શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા - મંદસૌર, (૩) સ્વ. અલકાબેન ભરતભાઇ વોહેરા - ભાયંદર (૪) જયંતીલાલ ચીમનલાલ ધરૂ પરિવાર - મુંબઇ-થરાદ-પેપરાલ, (૫) શ્રી મુકેશજી જૈન (નાકોડા) જાંબુઆ. **૫૦ હજારના લાભાર્થી :** (૧) શ્રી નરેન્દ્રકુમારજી ભવંરલાલજી ભટવેરા પરિવાર - ઇન્દોર, (૨) શ્રી સરદારમલજી સુરેશકુમારજી ધારીવાલ પરિવાર - જાવરા (૩) શ્રી સપનકુમાર જવાહરલાલજી કાકડીવાળા પરિવાર - અલીરાજપુર (૪) શ્રી મનીષકુમારજી હુકમીચંદજી પીપાડા પરિવાર - ઉજ્જૈન, (૫) શ્રી ચિરાગકુમાર માનમલજી ભંસાલી - રીંગણોદ. **૩૧ હજારના લાભાર્થી :** (૧) શ્રી વિરેન્દ્રજી જૈન ભાભરા **૩૦ હજારના લાભાર્થી :** (૧) શ્રીમતી શાંતાબાઇ રતનલાલ ગિરિયા, ભાટપચલાનાવાળા - બડનગર. **૨૫ હજારના લાભાર્થી :** (૧) શ્રી પ્રકાશજી તલેસરા - પારા **૨૧ હજારના લાભાર્થી :** શ્રી નવીનભાઇ બલ્લુ - થરાદ - મુંબઇ (૨) શ્રી અનિલજી દસેડા - જાવરા (૩) શ્રી મોતીલાલજી બાપુલાલજી ઓરા - બાલોદાવાળા - બડનગર, (૪) શ્રી મીઠાલાલજી હીરાણી - ચેન્નાઇ (૫) શ્રી સુશીલજી છાજેડ - રતલામ (૬) શ્રી રાજકમલજી કાંતીલાલજી દુગ્ગડ - રતલામ, (૭) શ્રી જાવંતરાજજી વાણીગોતા - બીજાપુર. **૨૦ હજારના લાભાર્થી :** (૧) એક પર ગુરૂભક્ત ગુપ્ત નામથી. **૫ હજારના લાભાર્થી :** (૧) શ્રીમતી સંગીતાજી ચિરાગજી, સ્વ. નલિનજી સંઘવી નાગપુર, સમસ્ત લાભાર્થી પરિવારોની ખૂબ ખૂબ અનુમોદના.

**મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા**
**તા. ૧૮-૭-૨૦૨૧ના રોજ અમદાવાદ ખાતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કરશે.**

# પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના ૧૯ સાધ્વીજી ભગવંતોએ કઠોર વરસી તપની આરાધના પૂર્ણ થતાં પારણા કર્યા

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મસા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય ૧૯ સાધ્વીજી ભગવંતોએ ગત વૈશાખ સુદ ૧૩ (અક્ષય તૃતિયા) દિવસે પાલિતાણા ખાતે કઠોર વરસીતપ આરાધનાના પારણા કર્યા હતા. વરિષ્ઠ સાધ્વીજી શ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા.એ પાંચ વરસીતપ પૂર્ણ કર્યા હતા. આમાંથી કેટલાક સાધ્વીજી ભગવંતોએ એકાસણા કરી વરસીતપની આરાધના કરી હતી.

**શીયલ પાલન કા હૈ ગહના... વિનય કા પહના હૈ કંગના...**
**ધર્મ શ્રદ્ધા કી માથે પર હૈ બિંદિયા... સંયમ કી ઓઢી હૈ ચુનરીયા...**

આવા જગદંબા સ્વરૂપ વરસીતપના આરાધક નીચેના નામ મુજબના સાધ્વીજી ભગવંતોના ચરણોમાં શત્ શત્ વંદન...

(૧) સાધ્વીજીશ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા.
(૨) સાધ્વીજીશ્રી જીવનકલાશ્રીજી મ.સા.
(૩) સાધ્વીજીશ્રી સુમનકલાશ્રીજી મ.સા.
(૪) સાધ્વીજીશ્રી ધ્રુવકલાશ્રીજી મ.સા.
(૫) સાધ્વીજીશ્રી મંત્રકલાશ્રીજી મ.સા.
(૬) સાધ્વીજીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા.
(૭) સાધ્વીજીશ્રી સિદ્ધાંતરસાશ્રીજી મ.સા.
(૮) સાધ્વીજીશ્રી ઉપસમપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૯) સાધ્વીજીશ્રી વિવેકપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૦) સાધ્વીજીશ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૧) સાધ્વીજીશ્રી ચિત્તપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૨) સાધ્વીજીશ્રી ઋજુપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૩) સાધ્વીજીશ્રી ચિત્રપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૪) સાધ્વીજીશ્રી દેવપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૫) સાધ્વીજીશ્રી પ્રભુપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૬) સાધ્વીજીશ્રી પાર્શ્વપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૭) સાધ્વીજીશ્રી આર્જવકલાશ્રીજી મ.સા.
(૧૮) સાધ્વીજીશ્રી ક્રિયાનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૯) સાધ્વીજીશ્રી તીર્થેશયશાશ્રીજી મ.સા.

ઉલ્લેખનીય છે કે શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં પ્રથમ દિક્ષિત થયેલ મુનિરાજ શ્રી ભુવનરત્ન વિજયજી મ.સા.એ પણ પાંચ વરસીતપ આરાધના પૂર્ણ કરેલ છે.

# પાટણનગરે મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.નો દિક્ષા દિવસ બન્યો જ્ઞાનોત્સવ

પાટણનગરના પંચાસરા જિનાલય નજીક સ્થિત ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં અધ્યયન હેતુ બિરાજમાન પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્ય અને ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીમુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.ના સંયમ જીવવના ૨૦ વર્ષ પૂર્ણ કરી ૨૧માં વર્ષમાં મંગલ પ્રવેશ પર મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.ની પાવનકારી નિશ્રામાં ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણે જ્ઞાનોત્સવ રૂપમાં મનાવ્યો હતો. મુનિરાજશ્રીના દીક્ષા દિવસ નિમિત્તે શ્રીસંઘે મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી પાટણના હેમચન્દ્રાચાર્ય મંદિર વિગેરે જ્ઞાન ભંડારના વ્યવસ્થાપક અને કર્મચારીઓનું શાલ-માળા અને નગદ મોટી રકમથી સન્માન કરાયું હતું. મુનિરાજ નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. દ્વારા પાટણમાં રહી સિદ્ધ હેમ જ્ઞાનપીઠમાં અધ્યયન કરેલ શ્રી સિદ્ધહેમ વ્યાકરણ અને યોગ શતક, યોગ દૃષ્ટિ વિગેરે (ટીકા સહિત) ૧૩થી અધિક ગ્રંથ અને વર્તમાનમાં ચાલી રહેલ ગ્રંથની (રજત) ચાંદીથી જ્ઞાન પૂજા કરી હતી. જેનો લાભ દાહોદ નિવાસી મુનિરાજશ્રીના સંસારી બંધુશ્રી હિતેશકુમાર સોહનલાલ શ્રીશ્રીમાલ પરિવારે લીધો હતો. આ પ્રસંગે સંયમ અનુમોદના કાર્યક્રમ લગભગ ત્રણ કલાક સુધી ચાલ્યો હતો. જેમાં વિભિન્ન સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોએ નિશ્રા પ્રદાન કરી હતી. અને દીક્ષા દિવસ નિમિત્તે એક વર્ષ દરમ્યાન પંચાસાર સંબંધિત અનેક અભિગ્રહ ગ્રહણ કર્યા હતા અને શ્રાવક-શ્રાવિકાઓએ તપ-ત્યાગ અને ધાર્મિક અધ્યયના અનેક નિયમો લીધા હતા. દીક્ષા દિવસ નિમિત્તે જીવદયા અને સંયમ અનુમોદના કાર્યક્રમમાં રૂ।. ૫૦ના સંઘ પૂજનનો લાભ પુણ્યસમ્રાટ ગુરૂદેવના ભક્ત તુલસીબેન વિગેરે જાપાના ગુરૂભક્તોએ લીધો હતો. મુમુક્ષુ બહેનોએ રંગબેરંગી વિશેષ રંગોળી અને ગહુલીની આકર્ષક સજાવટ કરી દીક્ષા દિવસની શુભકામના પાઠવી હતી. મુનિરાજશ્રીના દીક્ષા દિવસ પર ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ અને સંઘના ગુરૂભક્તો તથા પંડીતવર્ય શ્રી ચંદ્રકાન્તભાઇ સંઘવી, રાજુભાઇ સહિત ચીફ ઓફિસર પાંચાભાઇ માળી, પોલીસ વિભાગના અધિકારીઓ અને સંજયભાઇ મોદી વિગેરેએ વંદના કરી શુભકામના પાઠવી હતી.

# નારોલીરત્નની નારોલીમાં પધરામણી

પાટણનગરે બિરાજમાન પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સુશિષ્ય તથા ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીમુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.એ તા. ૮ જુનના રોજ પાટણથી વિહાર કરી શ્રી પેપરાલ તીર્થે પધાર્યા હતા. શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીની પાવનનિશ્રામાં મુનિરાજશ્રી સાધ્યરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની વડીદીક્ષામાં ઉપસ્થિત રહી નારોલી રત્ન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.એ તેમની જન્મભૂમિ નારોલી તરફ જવા વિહાર કર્યો હતો. તા. ૧૩ જુનના રોજ સવારે દુધવા શ્રી મહાવીર સ્વામી ભગવાનના દર્શન તેમજ સાંજે પીલુડામાં શ્રી સંભવનાથ ભગવાનના દર્શન કરી તા. ૧૪ જુનના રોજ જન્મભૂમિ નારોલીમાં શ્રીસંઘ અને નારોલીની જનતાએ ઉત્સાહ અને ઉમંગ સાથે નગર પ્રવેશ કરાવ્યો હતો. આ પ્રસંગે નારોલીનગરના મુખેથી ભવ્ય સામૈયા સાથે શોભાયાત્રાનો શુભારંભ થયો હતો. આ શોભાયાત્રા રાજમાર્ગો પર ફરી ઉપાશ્રયમાં ધર્મસભા રૂપમાં પરિવર્તીત થઇ હતી. જ્યાં મુનિરાજશ્રીએ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું અને અતિથિઓનો સત્કાર કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. મુનિરાજશ્રીના મુખકમલ દ્વારા મંત્રોચ્ચાર અને સંગીતકાર તથા વિધિકારક કુનાલભાઇના માર્ગદર્શન હેઠળ જિનાલયમાં પરમાત્માના અઢાર અભિષેક કરાયા હતા. મુનિરાજશ્રીના પાવન પગલે નારોલી નગરના સમસ્ત સમાજના સભ્યોએ દર્શન-વંદન કરી આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. આ પ્રસંગે બનાસકાંઠા જિલ્લાના સાંસદ શ્રી પરબતભાઇ પટેલ અને પાટણ શહેર ભાજપના પૂર્વ ઉપપ્રમુખ શ્રી સંજયભાઇ મોદી વિશેષ રૂપથી ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

ઉલ્લેખનીય છે કે વિહાર દરમ્યાન પાટણનગર પાલિકાના ચીફ ઓફિસર શ્રી પાંચાભાઇ માળીએ ઉપસ્થિત રહી સંપૂર્ણ વિહાર યાત્રામાં પગે ચાલી લાભ લીધો હતો. તા. ૧૫ જુનના રોજ મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં અને સનાતન ધર્મના સંત નાગરવનજીની ઉપસ્થિતિમાં ધર્મસભાનું આયોજન કરાયું હતું. જેમાં ગુરૂદેવ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ગુણાનુવાદ કરી તેમના ઉપકારોનું સ્મરણ કરવા સાથે નગરના સહુ નાગરિકો તરફથી શ્રદ્ધાંજલિ અર્પિત કરાઇ હતી. અને મુનિરાજશ્રીની પ્રેરણા અને તેમની ભાવનઓને સાકાર કરવા સાથે નગરના બધા જ સમાજના અગ્રણીઓએ ગુરૂદેવની સ્મૃતિને કાયમ યાદ રાખવા માટે ગૌશાળાનું નામકરણ ગુરૂ રાજેન્દ્ર જયંતસેન ગૌશાળા

રાખવા સર્વાનુમતે સ્વીકૃતિ પ્રદાન કરી હતી. ગૌશાળા ટ્રસ્ટમાં નારોલી સંઘના સદસ્યોમાંથી ત્રણ ટ્રસ્ટી બનાવવાની જાહેરાત કરાઇ હતી. ડેપ્યુટી કલેક્ટર વી.સી. બોડાના, નાયબ તાલુકા અધિકારી ગઢવીજી, જિલ્લા પંચાયત સદસ્ય માંગીલાલજી પટેલ, તાલુકા પંચાયત સદસ્ય વજેસિંહ સહિત અનેક અગ્રણીઓએ મુનિરાજશ્રીના દર્શન-વંદન કરી આશીર્વાદ મેળવ્યા હતા. અને નારોલીનગરના વિકાસમાં પોતાનું યોગદાન આપવાના ભાવો પ્રગટ કર્યા હતા. કરબુણ-કંકુચીમન તીર્થના દર્શન કરી તા. ૧૭ જુનના રોજ થરાદનગરે સામૈયા સાથે ભવ્ય પ્રવેશ કર્યો હતો. મુનિરાજશ્રીએ શ્રી મહાવીર સ્વામી ભગવાનના દર્શન-વંદન કરી પુણ્ય સમ્રાટના મંદિરનું અવલોકન કરી ઉપાશ્રય ખાતે પધરામણી કરી હતી. ત્યાં ધર્મસભાનું આયોજન કરાયું હતું. અને મુનિરાજના મુખકમળ દ્વારા વ્યાખ્યાન ફરમાવાયું હતું. ત્યાં થરાદના ધારાસભ્યશ્રી ગુલાબસિંહ રાજપુત, નગરપાલિકા પૂર્વ અધ્યક્ષ શ્રી પથુભાઇ રાજપુત, રાજપુત સમાજના અગ્રણીય ડી.ડી. રાજપુત વિગેરેએ મુનિરાજશ્રીના દર્શન-વંદન કરી આશિર્વાદ મેળવ્યા હતા. તા. ૧૮ જુનના રોજ મુનિરાજશ્રીએ વરખડીધામમાં પધરામણી કરી નિર્માણ પામેલા તીર્થોના દર્શન-વંદન કરી વરખડીધામનું અવલોકન કર્યુ હતું અને તીર્થધામના વિકાસ વિશેની વરખડીધામના ટ્રસ્ટી શ્રી વસંતભાઇ દોશીએ જાણકારી આપી હતી. ત્યાં ડેપ્યુટી કલેક્ટર શ્રી વી.સી. બોડાના, રાષ્ટ્રીય સ્વયંસેવક સંઘ સંચાલક શ્રી કાશીરામભાઇ પુરોહિત, શહેર ભાજપ મહામંત્રી શ્રી પ્રકાશભાઇ સોની, જીલ્લા સંઘ કાર્યવાહક શ્રી સુબાભાઇ તથા શ્રી સંઘના મહાનુભાવોએ ઉપસ્થિત રહી મુનિરાજશ્રીના આશીર્વાદ મેળવ્યા હતા. ઉત્તર ગુજરાતમાં દરેક સમાજમાં નારોલીવાળા મારા સાહેબાના હુલામણા નામથી ઓળખાતા મુનિરાજશ્રીના દર્શન-વંદન માટે અધિકારીઓ અને રાજકી તેમજ સામાજિક અગ્રણીઓ હંમેશા આવતા હોય છે. દરેક લોકો સાથે સમભાવ રાખતા મુનિરાજશ્રી દરેક સમાજના લોકોમાં લાગણી ધરાવે છે.


પ્રથમ માસિક તિથિએ

સ્વર્ગસ્થ પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી મ.સા.ના

ચરણોમાં શત્ શત્ વંદન સાથે

ભાવભીની આદરાંજલિ - પુષ્પાંજલિ - શ્રદ્ધાંજલિ

લિ. શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત સંપાદક
સુરેશ સંઘવી

## શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ ડીસાના પ્રમુખપદે સર્વાનુમતે શ્રી મહાસુખભાઈ વેદલીયાની વરણી

**પ્રમુખ** : શ્રી મહાસુખભાઈ મફતલાલ વેદલીયા
**ઉપપ્રમુખ** : શ્રી મનીષકુમાર જયંતીલાલ વોહેરા
**મંત્રી** : શ્રી અશોકકુમાર જયંતિલાલ શેઠ
**સહમંત્રી** : શ્રી પ્રવિણકુમાર લહેરચંદભાઈ ધરૂ
**ખજાનચી** : શ્રી દિનેશકુમાર વાઘજીભાઈ કોરડીયા
**સહખજાનચી** : શ્રી હિંમતલાલ વાઘજીભાઈ મોરખીયા

### -: કારોબારી સભ્ય :-

શ્રી ચંદુલાલ ડાહ્યાલાલ કોરડીયા
શ્રી નવીનચંદ્ર ભોગીલાલ વીરવાડીયા
શ્રી નરપતલાલ પોપટલાલ વેદલીયા
શ્રી ચંદ્રકાંત નાથાલાલ વોહેરા
શ્રી નવીનચંદ્ર શાંતિલાલ વોહેરા
શ્રી રસિકલાલ કીર્તિલાલ સંઘવી
શ્રી જગદીશભાઈ મફતલાલ દોશી
શ્રી વિપુલકુમાર કીર્તિલાલ મોરખીયા
શ્રી વિનોદકુમાર જયંતિલાલ દોશી
શ્રી હિતેશકુમાર કાંતિલાલ વેદલીયા
શ્રી પ્રફુલકુમાર લહેરચંદભાઈ મોરખીયા

## શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ મુંબઈના પ્રમુખપદે શ્રી શાંતિભાઈ ચીમનલાલ શેઠની પુનઃ વરણી

**પ્રમુખ** : શ્રી શાંતિભાઈ ચીમનલાલ શેઠ
**ઉપપ્રમુખ** : શ્રી વિનોદભાઈ હાલચંદભાઈ વોરા
**સેક્રેટરી** : શ્રી નવીનભાઈ નરપતલાલ બલ્લુ
**ઉપ સેક્રેટરી** : શ્રી ચિંતનભાઈ દોશી
**ખજાનચી** : શ્રી હરેશભાઈ રાજમલભાઈ વોહેરા
**સહ ખજાનચી** : શ્રી વિજયકુમાર વાડીલાલ સંઘવી

### -: ટ્રસ્ટી મંડળ :-

શ્રી રમણીકલાલ ભોગીલાલ દેસાઈ
શ્રી ફોજાલાલ વાડીલાલ મોદી
શ્રી જીતેન્દ્રભાઈ વાડીલાલ વોહેરા
શ્રી ભરતભાઈ વાઘજીભાઈ વોરા
શ્રી વિપુલભાઈ ચંદુલાલ વોહેરા
શ્રી જયેશકુમાર હીરાલાલ દેસાઈ
શ્રી પ્રદિપકુમાર શાંતિલાલ સંઘવી
શ્રી ભાવિનકુમાર સેવંતીલાલ દોશી
શ્રી મૌલિકકુમાર અરવિંદભાઈ દેસાઈ
શ્રી દિપકભાઈ હિંમતલાલ વોહેરા
શ્રી કલ્પેશભાઈ હીરાલાલ વોરા
શ્રી વિનોદકુમાર મફતલાલ સંઘવી
શ્રી બિપીનકુમાર રાજમલ સંઘવી (જોલી)
શ્રી મુકેશકુમાર કીર્તિલાલ મોરખીયા

## વાવપંથક – થરાદપંથક કોરોનાગ્રસ્તની વહારે
## અદાણી શાંતાબેન શાંતિલાલ ભુદરમલભાઈ પરિવાર

ધન્યવાદ છે થરાદના ઉદ્યોગપતિ શ્રી ગૌતમભાઈ અદાણીને વર્તમાન કાળે કોરોનાના સેકન્ડ રાઉન્ડે તરખાટ મચાવ્યો હતો. દરેક દેશવાસીઓ તેનાથી ત્રસ્ત થઈ ગયા હતા. શ્રીસરકારના સરાહનીય પ્રયત્નો હોવા છતાં કોરોના કાબુ બહાર હતો. બનાસકાંઠા વાવ અને થરાદ પર કોરોનાગ્રસ્ત થયેલ ખાસ કરીને ઓક્સિજન માટે થરાદ તાલુકાની જનતા વલખાં મારી રહી હતી, પોતાના મતવિસ્તારની વ્યથાથી દુઃખી, એવા જાગૃત સેવાભાવી ધારાસભ્યશ્રી ગુલાબસિંહ રાજપૂત પ્રજાની વહારે આવ્યા. લોક ફાળાથી ઓક્સિજન સીલીન્ડરની વ્યવસ્થા કરી પણ એ અપુરતી હતી એટલે તેઓશ્રીએ દેશના અગ્રણી ઉદ્યોગપતિ શ્રી ગૌતમભાઈ અદાણીને જાણ કરી. કારણ કે રાષ્ટ્ર પર આફત આવે ત્યારે જૈનો હંમેશા ખડે પગે ઉભા રહ્યા છે. મહારાજા રાણાપ્રતાપ પર અકબરે હુમલો કરેલો ત્યારે મહારાણા પ્રતાપની પડખે ભામાશા ઊભા રહ્યા હતા અને શૂરવીરતા પૂર્વક લડ્યા હતા તે પછી પોતાનું કરોડોનું ધન પણ દેશ માટે મહારાણા પ્રતાપના ચરણે ધરી દીધેલા. તો ભારત દેશમાં દુષ્કાળ પડ્યો હતો ત્યારે શેઠ જગડુશાએ ચાર કરોડ, નવાણું લાખ, પચાસ હજાર મણ અનાજનું દાન કરીને જગતનું પાલન કરેલ. આજે પણ આ સંકટની ઘડીમાં જૈનો દેશની પડખે ઉભા રહ્યા છે. અમદાવાદ, મુંબઈ, સુરત વિગેરે સ્થળે અનેક જૈન સંસ્થાઓ દ્વારા કોવિડ આઈસોલેશન વોર્ડ ચાલી રહ્યા હતા. તો પછી દાનવીર એવા શ્રી ગૌતમભાઈ અદાણી પાછળ પડે ખરા ? તેમણે તરત નક્કી કર્યું કે, થરાદમાં જ ઓક્સિજન પ્લાન્ટ નાખવો જેથી આ સમસ્યાનું કાયમી નિરાકરણ થાય. થરાદના જૈન દાનવીર અદાણી શ્રી શાંતાબેન શાંતિલાલ ભુદરમલ પરિવારના શ્રી મહાસુખભાઈ, શ્રી વસંતભાઈ, શ્રી વિનોદભાઈ, શ્રી ગૌતમભાઈ અને શ્રી રાજેશભાઈએ પાંચે ભાઈ પાંચે પાંડવ સમા છે આવા કપરા કાળમાં કોઈના આંસુ લુછનારા આ અદાણી પરિવારને ખૂબ ખૂબ ધન્યવાદ. મહેન્દ્ર દોશી પરિવાર તરફથી અનોખી અનુમોદના.

## થરાદ નગરે શ્રી મુનિસુવ્રતસ્વામી જિનાલયનો ભૂમિપૂજન-શિલાન્યાસ કાર્યક્રમ સંપન્ન

શ્રી થીરપુર મંડન મહાવીર સ્વામી... આભુ સંઘવી શેરી આભૂષણ શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી ભગવાનની અસીમ કૃપા, દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ, આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી

મ.સા. - આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશીર્વાદથી થરાદનગરની ચકલી શેરીના નાકા પર સ્થિત શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી જિનાલયનો ભૂમિપૂજન તા. ૨૭-૬-૨૦૨૧ના રોજ તથા શિલાન્યાસ તા. ૭-૭-૨૦૨૧ના રોજ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. આ પ્રસંગે જિનાલય નિર્માણ દાતા દેસાઈ ઉજમચંદ મયાચંદભાઈ પરિવાર, મુનિસુવ્રત સ્વામી જિનાલય ટ્રસ્ટ મંડળ અને પ્રભુ ભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

## કોરોના મહામારીના સંકટ સમયે સુરતમાં થરાદવાળા મહાનુભાવોની ઉત્કૃષ્ટ માનવતાસભર સેવા

શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ - સુરત - થરાદવાળા તથા શ્રી જૈન શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક યુવક મહાસંઘ દ્વારા શ્રી રાજેન્દ્ર જયંત કોવિડ આઈસોલેશન સેન્ટર વર્તમાનમાં કોરોનાની જે મહામારીએ સુરતને ભરડામાં લીધું હતું ત્યારે પ.પૂ. આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મહારાજા તથા પુણ્ય સમ્રાટ પ.પૂ. આચાર્ય ભગવંત શ્રી જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મહારાજના શુભાશિષથી તેમજ પ.પૂ. મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મહારાજાની પાવન નિશ્રામાં શુભ પળે શ્રી રાજેન્દ્ર જયંત કોવીડ આઈસોલેશન સેન્ટરની શરૂઆત કરી હતી.

ત્યારે સુરત શહેરમાં કોરોનાનો કહેર વર્તાઈ રહ્યો હતો. જ્યારે સુરતની હોસ્પિટલો દર્દીઓથી ઉભરાઈ ગઈ હતી અને દાખલ કરવા વેઈટિંગ ચાલતું હતું. સરકાર અને તંત્ર પોતાની રીતે વ્યવસાયમાં લાગેલું પરંતુ "આભ ફાટે ત્યાં થીંગડાં ક્યાં દેવાય" માટે સમાજે ત્યારે સુરત શહેરની જનતાને પડતી તકલીફોમાં રાહત થાય તે હેતુથી આ સેન્ટર શરૂ કર્યું હતું. અને દર્દીઓની સેવા સુશ્રુષા, સારવાર માટે જરૂરી ડોક્ટર પેરામેડિકલ સ્ટાફ તથા રહેવા જમવા વ્યવસ્થા સાથે ઘર જેવું વાતાવરણ મળી રહે તે માટે રોજ પ્રભુ દર્શન, યોગા, પ્રાણાયામ, મનોરંજન માટે એલઈડી સ્ક્રીન, વાઈફાઈ યુક્ત તથા ઓક્સિજનની વ્યવસ્થા સાથે હોમિયોપેથીક, આયુર્વેદિક, એલોપેથીક દવાઓ અને સુરતના નામાંકિત ડોક્ટરોની દેખરેખ, સંપૂર્ણ સુવિધાવાળું આઈસોલેશન સેન્ટર સુરત શહેરની જનતાને રાહત થાય તે માટે નિઃશુલ્ક સંપૂર્ણ સગવડતા યુક્ત સેન્ટરનો શુભારંભ કર્યો હતો. આ સેન્ટરમાં દવા સાથે દુઆને પણ પ્રાધાન્ય આપ્યું. કારણ કે માણસ પોતાની બધી શક્તિ લગાવીને હારી જતો હોય છે ત્યારે પરમાત્મા અને ગુરૂના શરણમાં જાય છે અને દવા અને દુઆ આ બંનેનો ઉપચાર કરવામાં આવે છે. ત્યારે કદાચ કહેવાય કે દવા કરતા દુઆ કામ કરી જતી હોય છે. અને આવા પવિત્ર ગુરૂ ભગવંતો અને પરમ કૃપાળુ પરમાત્માના દિવ્ય આશિષ સુરત શહેરમાં જાણે કોરોનાના વળતા પાણી થયા હોય એવું અનુભવાઈ રહ્યું છે અને આજે અમારા જ આઈસોલેશનમાં નહીં પણ સમગ્ર સુરત શહેરમાં કોરોનાના જાણે વળતા પાણી થયા હોય તેમ દર્દીઓ વધારે સંખ્યામાં સ્વસ્થ થઈને પોતાના પરિવારમા પ્રયાણ કરી ગયા હતા.

શ્રી રાજેન્દ્ર જયંત કોવિડ આઈસોલેશન સેન્ટર શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ - સુરત થરાદવાળાના પ્રમુખશ્રી નીતિનભાઈ અદાણી તથા ઉપપ્રમુખશ્રી દિનેશભાઈ ભણશાલી તથા સમગ્ર ટ્રસ્ટીશ્રીઓના માર્ગદર્શનથી ચાલી રહ્યું હતું. તથા તેમના ટ્રસ્ટી શ્રી ચંપકભાઈ ધરૂ કોરોના ફાઈટર તરીકે ૨૪×૭ સેવા આપી રહ્યા હતા. તેમની સાથે ટ્રસ્ટી શ્રી અતુલભાઈ અદાણી, શ્રી શૈલેષભાઈ ભણશાલી વિગેરે પણ અમૂલ્ય ફાળો આપી રહ્યા હતા. સાથે સાથે યુવક પરિષદના સભ્યો પણ દરેક દર્દીઓની ભોજનની વ્યવસ્થા પણ ખૂબ સુંદર રીતે કરી સધાર્મિક ભક્તિનો લાભ લઈ રહ્યા હતા. જેમાં મુખ્યત્વે પ્રમુખ શ્રી રાહુલભાઈ દેસાઈ, શ્રી નરેશભાઈ, શ્રી અશોકભાઈ દોશી તથા શ્રી હિરેનભાઈ અદાણી વિગેરે ખૂબ સેવા આપી રહ્યા હતા. અને સાથે તરુણ પરિષદના પ્રમુખશ્રી પાર્થિવભાઈ તથા તેમના સભ્યો પણ ખૂબ સરસ સેવા આપી રહ્યા હતા. આ સેન્ટરમાં આમ ત્રિવેણી સંગમથી સેવા થઈ રહી હતી. અને સમાજના દાનવીરોએ પણ પોતાની લક્ષ્મીનો સદ્વ્યય કરી દાનનો ધોધ વહેવડાવ્યો હતો.

આમાં ખાસ આપણા સમાજના ડો. શ્રી હેરીનભાઈ અદાણી કે જેઓ એમ.બી.બી.એસ. છે અને છેલ્લા એક વર્ષથી કોરોનાના દર્દીઓની ફ્રી સેવા કરીને સ્વસ્થ કરી રહ્યા છે અને ડો. બન્યા પછી પ્રેક્ટીસ તેઓએ તદ્દન ફ્રી સેવા આપી છે. સાથે ડો. શ્રી વૃષલભાઈ ભણશાલી, ડો. શ્રી પાર્થભાઈ અદાણી પણ તદ્દન ફ્રી સેવા આપી હતી. ડો. શ્રી જીગરભાઈ દોશી તથા ડો. શ્રી તેજસભાઈ ગાંધી પણ આ સેન્ટરમાં સેવા આપી હતી. તથા ડો. શ્રી જિનદાસભાઈ મહેતા અને નેહલભાઈ પણ સેવા આપી હતી.

આયુષમાંથી પણ આયુર્વેદિક દવા માટે ડૉ. મિલનભાઈ તથા ડૉ. અમિતાબેન આયુર્વેદિક ટ્રીટમેન્ટ અને દવાઓ તદ્દન ફ્રીમાં સેવા આપી હતી. આ સેન્ટરમાં જૈન સમાજની સાથે સાથે દરેક સમાજના વ્યક્તિઓની સારવાર કરી માનવધર્મની ઉત્તમ ફરજ નિભાવી હતી.

આ આઈસોલેશન સેન્ટરમાં પૂજ્ય સાધુ સાધ્વીજી, ભગવંતોના આચાર વિચાર જળવાઈ રહે તે માટેની અલાયદી વ્યવસ્થા પણ કરવામાં આવી હતી. આ સેન્ટરનો શુભારંભ ભાજપ ગુજરાત પ્રદેશ પ્રમુખ માન. શ્રી સી.આર. પાટીલસાહેબ સુરત મહાનગર પાલિકાના મેયર શ્રીમતિ હેમાલીબેન બોઘવાલાના શુભ હસ્તે કરવામાં આવ્યો હતો. જેમાં સાંસદ શ્રીમતી દર્શનાબેન જરદોશ, જૈન સમાજનું રત્ન મજુરા વિધાનસભા ધારાસભ્ય શ્રી હર્ષભાઈ સંઘવી, પશ્ચિમ વિધાનસભાના ધારાસભ્ય શ્રી પૂર્ણેશભાઈ મોદી સ્થાયી સમિતિના ચેરમેનશ્રી પરેશભાઈ પટેલ વોર્ડ નં. ૯ના જૈન સમાજના કોર્પોરેટર કુમારીશ્રી નેન્સીબેન શાહ, વોર્ડ નં. ૧૧ના શ્રી કેતનભાઈ મહેતા તથા કોર્પોરેટરશ્રીઓ, પૂર્વ ડે. મેયરશ્રી નિરવભાઈ શાહ તથા સંગઠનના પદાધિકારીશ્રીઓ તથા જૈન સમાજના આગેવાનશ્રીઓ પણ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

આ આઈસોલેશન સેન્ટર શરૂ કરવામાં શ્રી જૈન શ્વેતામ્બર મૂર્તિપૂજક યુવક મહાસંઘના પ્રમુખ શ્રી નિતીન શાહે પણ અમૂલ્ય ફાળો આપ્યો હતો. ખાસ જણાવવાનું કે,

ડો. હેરીન અદાણી તથા ડો. પાર્થ અદાણી થરાદ નિવાસી અદાણી ભોગીલાલ કકલચંદભાઈના પૌત્રો છે. ડો. હેરીન અદાણી શ્રી પ્રકાશકુમાર ભોગીલાલ અદાણીના સુપુત્ર છે. અને ડો. પાર્થ અદાણી શ્રી મહેન્દ્રભાઈ ભોગીલાલ અદાણીના સુપુત્ર છે. બંને ડો. પિતરાઇ બંધુઓ છે.

## પાટણ નગરે દીક્ષા મહોત્સવ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની શુભ નિશ્રામાં ધાર (મ.પ્ર.) નિવાસી મુમુક્ષુરત્ન શ્રી શુભમભાઈ નરેન્દ્રકુમાર છજલાનીની દીક્ષા ચૈત્ર વદ -૧ તા. ૧-૫-૨૦૨૧ના શુભ દિવસે સાદાઈપૂર્વક પ્રભુની આજ્ઞાનુસાર સંપન્ન થઈ હતી. નૂતન દીક્ષાર્થીનું નામ મુનિરાજશ્રી નિર્સગરત્ન વિજયજી મ.સા. જાહેર કરાયું હતું.

**-: કેટલીક અનુમોદનીય ઘટનાઓ :-**

* ઉપકરણ વહોરવા માટે કોઈ જ બોલી ચઢાવા નહી પણ સંસારી સ્વજનો દ્વારા તપ-ત્યાગ અને આરાધનાના નિયમો ગ્રહણ
* પરિવાર દ્વારા શ્રી સંઘના વિવિધ ખાતાઓમાં રોકડ રકમ ભેટ
* દીક્ષા મંડપ અને ભોજન મંડપમાં વિદ્યુત ઉપકરણોનો ઉપયોગ નહીં.
* તમામ કાર્યક્રમમાં માઈકનો ઉપયોગ નહીં.
* દીક્ષાની પત્રિકા અને બેનર પ્રકાશન નહીં.
* દીક્ષાના મુર્હૂત ગ્રહણથી દીક્ષાર્થીના ફોટા પાડવાનું અને પ્રસંગોચિત વિડીયોગ્રાફી નહીં.
* મહોત્સવમાં પરમાત્માનો શક્રસત્વ મહાઅભિષેક સંપન્ન
* મહોત્સવ દરમ્યાન જિનાલયમાં ફૂલોનો શણગાર અને દીપક રોશની સાથે મહાપૂજા કાર્યક્રમ સંપન્ન
* મુમુક્ષુરત્ન દ્વારા વરસીદાસ
* દીક્ષાના તમામ પ્રસંગો સૂર્યોદયથી સૂર્યાસ્ત સુધી સંપન્ન
* દીક્ષા મંડપની સજાવટ લાકડા અને ખાદીના કપડાથી લોખંડની પાઈપો નહીં.
* દીક્ષા પ્રસંગ નિમિત્તે પાટણના ૧૦૦થી અધિક જિનાલયોના પૂજારી - કર્મચારી, ચોકિયાત, સફાઈ કર્મચારી અને ભોજનશાળા તથા ધર્મશાળાના સેવકોનું દીક્ષાર્થી પરિવાર દ્વારા રોકડ રકમથી બહુમાન.
* નૂતન મુનિરાજશ્રી હાલમાં પાટણનગરમાં મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા. તથા મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.ના સાનિધ્યમાં અધ્યયન રત છે.
* આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.એ સંદેશાથી આશિર્વાદ પાઠવ્યા હતા.

- પ્રેષક : હસમુખભાઈ વેદલીયા

# कुमकुम सने पगलिये

## गच्छाधिपतिजी का चातुर्मास प्रवेश जालोर में 19 जुलाई को

जालोर। त्रिस्तुतिक जैन संघ जालोर के अध्यक्ष श्री रमेशचंदजी भंडारी ने बताया कि गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा वरिष्ठ मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा का इस वर्ष जालोर में चातुर्मास होने जा रहा है। आपश्री तथा मुनिमंडल का भव्य प्रवेश आषाढ़ सुदी दसमी दि. 19 जुलाई 2021 सोमवार को होगा। जालोर श्रीसंघ द्वारा आह्वान किया गया है कि सूचना करावें तथा ज्यादा से ज्यादा महानुभाव चातुर्मास प्रवेश एवं चातुर्मास में पधारें।

जालोर श्रीसंघ के प्रतिनिधियों ने पूज्य गच्छाधिपति साहब की पेपराल स्थिरता के समय पेपराल जाकर चातुर्मास प्रवेश का मुहूर्त्त लिया। बताया गया कि चातुर्मास प्रवेश की भव्य तैयारियाँ की जा रही हैं।

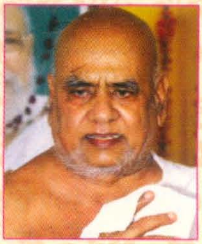

एक अन्य सूत्र के अनुसार चातुर्मास प्रवेश जुलूस की जालोर संघ द्वारा भव्य तैयारियाँ की जा रही हैं लेकिन कोरोना प्रोटोकॉल के अनुसार जिला प्रशासन द्वारा जितनी अनुमति होगी, उसका पालन किया जायेगा।

## जैनाचार्य का चातुर्मास प्रवेश जालोर में 20 जुलाई को

श्री भांडवपुरतीर्थ। जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश श्री भांडवपुर तीर्थ पर आगामी 20 जुलाई को होगा। इस अवसर पर विभिन्न श्रीसंघों के गुरुभक्तों के एकत्र होने की संभावना है। साध्वीजी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा., श्री सम्यग्दर्शनश्रीजी म. तथा श्री चारुदर्शनाश्रीजी म. का चातुर्मास प्रवेश आगामी 17 जुलाई शनिवार को आंध्रप्रदेश के नगर तेनाली में होगा।

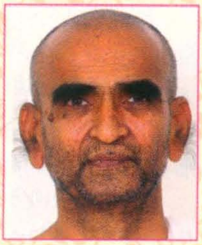

# आचार्य श्री महाश्रमणजी ने म्युजियम की सराहना की

**मोहनखेड़ा तीर्थ (राजगढ़)।** विश्व पूज्य दादा गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज की निर्वाण भूमि श्री मोहनखेड़ा तीर्थ स्थित पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से निर्मित श्री जयन्तसेन म्यूजियम के अवलोकनार्थ तेरापंथ समुदाय के आचार्य भगवन्त श्री महाश्रमणजी महाराज अपने समुदाय के साथ पधारे और म्यूजियम का अवलोकन कर कहा कि म्युजियम जैन दर्शन को समझने के लिए उचित माध्यम है, निश्चित इसकी कल्पना पुण्य सम्राट गुरुदेव ने हमारे जिनशासन के भविष्य को देखते हुए की होगी। हमारे जिनशासन के बच्चों को ऐसे म्युजियम का अवलोकन जैन दर्शन को समझने में सहायक होगा।

साथ ही उन्होंने वर्ष 2002 में पूज्य आचार्य भगवंत जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज साहब एवं पूज्य आचार्य भगवंत श्री महाप्रज्ञजी के मिलन की भी स्मृति ताजा की। साथ ही पूज्यश्री ने अपना उचित मार्गदर्शन भी म्यूजियम ट्रस्ट को प्रदान किया। इस अवसर पर म्यूजियम स्थित साध्वीजी भगवन्तों, म्यूजियम ट्रस्ट के ट्रस्टी मुकेश जैन, संजय हरण, रतलाम-झाबुआ सांसद गुमानसिंह डामोर एवं म्युजियम के समस्त स्टॉफ ने पूज्यश्री की अगवानी की एवं पुण्य सम्राट द्वारा रचित साहित्य पूज्यश्री को भेंट किया।

# मुनिराज श्री का दीक्षा दिन बना ज्ञानोत्सव

**पाटण।** पंचासरा जिनालय के समीप स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में अध्ययन हेतु बिराजमान मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. के संयम जीवन के 20 वर्ष पूर्ण कर 21 वें वर्ष में मंगल प्रवेश पर मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण ने ज्ञानोत्सव के रूप में मनाया।

मुनिराज श्री के दीक्षा दिन निमित्त श्रीसंघ ने मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण ने ज्ञानोत्सव के रूप में मनाया। मुनिराज श्री के दीक्षा दिन निमित्त श्रीसंघ ने मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज की प्रेरणा से पाटण के हेमचन्द्राचार्य मंदिर आदि ज्ञान भंडार के व्यवस्थापक और कर्मचारियों का शाल माला एवं नगद में बड़ी राशि से सम्मान किया और मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी महाराज द्वारा पाटण में रहकर सिद्ध

हेम ज्ञानपीठ में अध्ययन किए गए श्री सिद्धहेम व्याकरण और योग शतक, योग दृष्टि आदि (टीका सहित) 13 से अधिक ग्रंथ ओर वर्तमान में चल रहे ग्रंथ की रजत (चांदी) से ज्ञान पूजा की गई जिसका लाभ उनके संसारी भाई दाहोद (गुजरात) निवासी हितेशकुमार सोहनलाल श्रीश्रीमाल परिवार की ओर से लिया गया।

इस प्रसंग पर करीबन तीन घंटे संयम अनुमोदना कार्यक्रम चला जिसमें विभिन्न समुदाय के श्रमण-श्रमणी भगवंत ने निश्रा प्रदान की और दीक्षा दिवस निमित्त पंचाचार संबंधित अनेक अभिग्रह ग्रहण किये और श्रावक-श्राविकाओं ने तप-त्याग और धार्मिक अध्ययन के अनेक नियम लिए।

दीक्षा दिवस निमित्त जीवदया एवं संयम अनुमोदना कार्यक्रम में 50 रु. के संघ पूजन का लाभ पुण्य सम्राट गुरुदेव के भक्त तुलसी बहन आदि जापानी गुरु भक्तों ने लिया। मुमुक्षु बहनों ने विभिन्न रंगों से विशेष रंगोली एवं गहुंली की, आकर्षक सजावट कर दीक्षा दिन की शुभकामनाएँ दीं। मुनिराज श्री के दीक्षा दिन पर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण एवं पाटण जैन संघ के सदस्यों और पंडितवर्य श्री चन्द्रकांतभाई संघवी राजुभाई सहित चीफ ऑफिसर पांचाभाई माली, पोलीस विभाग के अधिकारियों एवं संजयभाई मोदी आदि ने वंदना कर शुभकामनाएँ दीं।

## आचार्य श्री ऋषभचन्द्रसूरिजी का देवलोकगमन

**श्री मोहनखेड़ातीर्थ ।** जैनाचार्य श्रीमद् विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म. का देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पालकी निकाली गई तथा अंतिम संस्कार किया गया। जिसमें म.प्र. के उद्योगमंत्री श्री राजवर्धनसिंह तथा विज्ञान प्रौद्योगिकी मंत्री श्री ओमप्रकाश सकलेचा ने भी भाग लिया। कोरोना प्रोटोकॉल के अनुसार सीमित संख्या में गुरुभक्त उपस्थित रहे। मुनिगणों का समूह भी शामिल हुआ। मुखाग्नि की बोली सवा करोड़ रुपये लगी थी लेकिन ट्रस्ट मंडल ने बाद में इसे निरस्त कर दिया। जीवदया के लिए कोई दो करोड़ रुपये श्रद्धालुओं ने एकत्र किये।

आपके देवलोकगमन पर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म. ने वरिष्ठ मुनिराज श्री हितेषचन्द्र विजयजी म. को शोक संदेश भिजवाकर संवेदना प्रकट की। जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. ने शोक संदेश श्री भांडवपुरतीर्थ से भिजवाकर श्रद्धांजलि दी। अ.भा. श्री सौधर्म

बृहतपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन श्वे. संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, महिला परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आशा कटारिया, तरुण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राज प्रवीणभाई देसाई ने भी अपने शोक संदेश भिजवाये।

* श्री महिदपुर । राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में आचार्यश्री के देवलोकगमन पर देववंदन व गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। जिसमें चांदमल मेहता, रमेश लुणावत, माणकलाल छाजेड़, सुमितलाल छजलानी, विमल बुरड़, विशाल पाटनी, वर्धमान गादिया, जैनेंद्र खेमसरा, संगीता- विजय मोदी आदि ने गुरुदेव के किये गये कार्यों का उल्लेख करते हुए विनयांजलि अर्पित की।

सभा का संचालन व आभार संघ अध्यक्ष मुकेश बांठिया ने व्यक्त किया।

– नरेन्द्र धारीवाल

## जैन आगम उत्तराध्ययन का नेपाली भाषा में अनुवाद

ताल । मुनि डॉ. श्री संयमरत्न विजयजी म. तथा मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी म. ने बताया कि मानव मिलन प्रवर्तक, नेपाल केशरी डॉ. मणिभद्र मुनिजी ने जैन शास्त्र उत्तराध्ययन सूत्र का नेपाली भाषा में जैन शास्त्र के अनुवादित ग्रंथ का लोकार्पण नेपाल की राष्ट्रपति विद्यादेवी भंडारी ने किया। कार्यक्रम का आयोजन नेपाल की राजधानी काठमांडू में किया गया। नेपाल की राष्ट्रपति विद्यादेवी भंडारी ने कहा कि जैन शास्त्र का नेपाली भाषा में अनुवाद इतिहास में पहली बार हुआ है, यह जानकर मुझे

अति प्रसन्नता हुई। नेपाल के ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर भारत में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर जैन संत नेपाल केशरी डॉ. मणिभद्र मुनिजी द्वारा भगवान महावीर की वाणी का नेपाली भाषा में अनुवाद करने से नेपाल व भारत में रहने वाले जैन समाज में खुशी का माहौल छा गया है।

**माउंटआबू पर्वत।** देलवाड़ा स्थित एक हजार वर्ष प्राचीन जिनालय के सवा सौ से अधिक शिखरों पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी के सुशिष्य मुनिश्री डॉ. संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी एवं आचार्य श्री अपूर्वमंगलसागरसूरिजी के शिष्य त्रिपुटी बंधु श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्न सागरजी व श्रमण संघीय संजय मुनिजी, मनोहर मुनि, पराग मुनि, संयम मुनि व साध्वी विरक्ताश्रीजी आदि ठाणा के सान्निध्य में सुसम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण के पूर्व सत्तरहभेदी पूजा पढ़ाई गई। मुनि श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी ने बताया कि सन् 1031 में गुजरात स्थित पाटण के प्रथम भीमादेव राजा के मंत्री व सेनापति विमल शाह ने श्री आदिनाथ जिनालय का निर्माण करवाया, इस मंदिर का निर्माण 1500 शिल्पियों तथा 1200 श्रमिकों ने 14 वर्ष के अंतराल में किया। इसके निर्माण में 18 करोड़ 53 लाख रु. का सदुपयोग हुआ है। इसके अलावा गुजरात के सोलंकी वंश के द्वितीय भीमादेव राजा के मंत्री वस्तुपाल व तेजपाल नामक दो भाइयों ने सन् 1231 में श्री नेमिनाथ परमात्मा का मंदिर 13 करोड़ रु. का सदुपयोग करके बनाया गया। दोनों जिनालयों की शिल्पकला सर्वोत्तम, अतुलनीय है।

## मुमुक्षु शुभमभाई बने मुनिराज श्री निसंगरत्न विजयजी

गुजरात के पाटण नगर में त्रिस्तुतिक जैनाचार्य गुरुदेव श्रीमद् गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में वैशाख वदी (गु. चैत्र वदी) पांचम दि. 1 मई को मुमुक्षु रत्न धार (मध्यप्रदेश) निवासी श्री शुभमभाई नरेन्द्रकुमार छजलानी का दीक्षा महोत्सव सम्पन्न हुआ। मुमुक्षु रत्न श्री शुभमभाई के दीक्षा ग्रहण करने बाद नूतन मुनि के रूप में उनका नाम मुनिराज श्री निसंगरत्न विजय घोषित हुआ। इस दीक्षा महोत्सव का प्रसंग

अनुमोदनीय रहा, मुमुक्षु रत्न को अर्पण किये जाने वाले श्रमण जीवन के उपकरण की किसी प्रकार की बोली (चडावा) नहीं लगाई गई। नूतन मुनिराज श्री को त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण एवं नूतन मुनिराज श्री के संसारी परिवार और सगे संबंधियों की ओर से तप-त्याग और आराधना के नियम ग्रहण कर श्रमण जीवन के उपकरण वहोराये गये, उपकरण के लाभार्थी परिवार की ओर से श्रीसंघ के विभिन्न खातों में राशि लिखवाई गई। मुमुक्षु के भावनानुसार दीक्षा मंडप एवं भोजन मंडप आदि में भी विद्युत सामग्री के उपयोग पर प्रतिबंध रहा।

दीक्षा विधि सहित त्रिदिवसीय महोत्सव के सभी कार्यक्रम में माइक आदि किसी इलेक्ट्रिक सामग्री उपयोग किए बिना अनुष्ठान सम्पन्न हुए। दीक्षा के त्रिदिवसीय महोत्सव में परमात्मा के शक्रस्तव के अभिषेक, जिनालय को फूलों की भव्य सजावट ओर दीपक की रोशनी के साथ महापूजा, वर्षीदान का वरघोड़ा एवं उसके बाद सम्मान पूर्वक सभी को मुमुक्षु के हाथों से वर्षीदान दिया गया। दीक्षा मंडप सहित सभी मंडप का निर्माण भी किसी प्रकार के लोहे आदि धातुओं का उपयोग ना कर सिर्फ लकड़ी का उपयोग एवं सभी मंडप खादी के कपड़े से निर्मित्त किए गए। संयम उपकरण 8 किलो से अधिक चांदी से निर्मित थाल में रखकर दीक्षा मंडप में लाये गये, ऐसे अनेक अविस्मरणीय संस्मरण के साथ उत्साह और उमंग के साथ दीक्षा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज ने मुमुक्षु शुभमभाई को शुभाशीर्वाद प्रदान कर मुमुक्षु रत्न एवं अनुमोदना इनके भावों की, नूतन मुनिराज पाटण में मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज और मुनिराज श्री निपुण रत्न विजयजी महाराज आदि ठाणा की पावन निश्रा में धार्मिक अध्ययन कर रहे हैं। दीक्षा महोत्सव का लाभ त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की आज्ञा से मुमुक्षु शुभमभाई के परिवार धार (मध्यप्रदेश) निवासी जतनबेन शांतिलाल छजलानी की ओर से लिया गया। दीक्षा प्रसंग पर

गच्छाधिपति श्री को कामली व्होरने का लाभ पाटण निवासी धनराजजी जवानमलजी परिवार भुतीवालों ने एवं गुरु पूजन का लाभ नारोली निवासी कान्तिलाल ककलदास कोरडीया परिवार ने लिया, नूतन मुनिराज श्री के नामकरण का लाभ झाबुआ निवासी धरमचंदजी चुनिलाल परिवार ने लिया।

## योगीराज की स्वर्गारोहण तिथि मनी

**भांडवपुर तीर्थ।** यहां विगत 20 जून रविवार को योगीराज श्री शांतिविजयजी म.सा. की 25 वीं स्वर्गारोहण तिथि पर दिन भर के भरपूर कार्यक्रमों का आयोजन जैनाचार्य जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में हुआ जिसमें प्रातः गुरु श्रीशांति गुरु चालीसा पाठ, पूजन, पक्षाल एवं गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। दोपहर को श्री शांतिविजय अष्ट प्रकारी पूजन एवं सायंकाल आरती हुई। भोजन की सुन्दर व्यवस्था रही। कार्यक्रम का लाभार्थी परिवार मातुश्री

सुवादेवी केवलचंदजी मेसाजी बागरेचा परिवार मेंगलवा था। कार्यक्रम कोविड नियमों का अनुपालन करते हुए हुआ।

## मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज का उनकी जन्म भूमि में हुआ पदार्पण

### नारोली में चल रही गौशाला का हुआ नाम गुरु राजेन्द्र जयन्तसेन गौशाला

युगप्रभावक पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्य मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज पाटण से विहार कर पेपराल तीर्थ पधारे। मुनिराज श्री पेपराल तीर्थ में गच्छाधिपति श्री

नित्यसेन सूरिश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में, मुनिराज श्री साध्यरत्न विजयजी महाराज आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत की बड़ी दीक्षा में उपस्थित रहकर 12 जून को उनकी जन्म भूमि गुजरात राज्य में बनासकांठा जिले की थराद तहसील के नारेली नगर की ओर विहार किया।

14 जून को उनकी जन्म भूमि में पदार्पण होने पर श्रीसंघ एवं नगर की जनता ने उत्साह और उमंग से नगर प्रवेश करवाया, इस प्रसंग पर नगर की सीमा से सामैया कर शोभायात्रा प्रारंभ हुई जो राजमार्ग पर परिभ्रमण कर उपाश्रय में धर्म सभा में परिवर्तन हुई, जहां मुनिराज श्री के प्रवचन एवं अतिथि का सन्मान सत्कार हुआ और जिनालय में परमात्मा के अठ्ठारह अभिषेक मुनिराज श्री के मंत्रोच्चार और संगीतकार एवं विधिकारक कुनालभाई के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। मुनिराज श्री के पदार्पण के साथ ही नगर में उत्साह और उमंग का वातावरण बना हुआ रहा।

नारोली नगर की समस्त जनता द्वारा निर्मित गौशाला में 15 जून को मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज की पावन निश्रा में ओर सनातन धर्म के संत नागरवनजी की उपस्थिति में धर्म सभा का आयोजन हुआ जिसमें गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के गुणानुवाद कर उनके उपकार का स्मरण करते हुए नगर के सभी नागरिकों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं मुनिराज श्री की प्रेरणा ओर उनकी भावनाओं को साकार करते हुए नगर के सभी समाज के अग्रणियों ने गुरुदेव की स्मृति को हमेशा के लिए याद रखने के लिए इस गौशाला का नामकरण गुरु राजेन्द्र जयन्तसेन गौशाला रखने की सर्वानुमति से स्वीकृति प्रदान की एवं गौशाला ट्रस्ट में नारोली जैन संघ के सदस्यों में से तीन ट्रस्टी बनाने की घोषणा की गई।

इस प्रसंग पर बनासकांठा लोकसभा के सांसद परबतभाई पटेल एवं पाटण भाजपा शहर के पूर्व उपप्रमुख संजयभाई मोदी, डेप्युटी कलेक्टर वी.डी. बोडाना, नायब तहसीलदार विजय गढ़वी, जिला पंचायत सदस्य मांगीलाल पटेल, तहसील पंचायत सदस्य वनेसिंह सहित अनेक राजकीय, सामाजिक एवं प्रशासन के अग्रणी ने उपस्थित रहकर मुनिराज श्री के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किए और नारोली नगर के विकास में अपना योगदान देने के भाव प्रकट किए।

# पाटण नगर में जैन धर्म का शासन स्थापना दिवस मनाया

## भगवान महावीर के बताएं मार्ग का अनुसरण करने की आवश्यकता है चारित्ररत्न विजय

गुजरात के पाटण नगर में त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में बिराजमान त्रिस्तुतिक जैनाचार्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्य मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज, मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी महाराज आदि ठाणा 34 की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से जैन धर्म का शासन स्थापना दिवस मनाया गया एवं त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने जैन शासन की आन, बान, शान के प्रतीक जैन ध्वज को वंदन करते हुए जैन शासन स्थापना दिवस की महत्ता के बारे में प्रवचन श्रवण किया और भगवान महावीर स्वामी के शक्रस्तव अभिषेक एवं भक्ति आयोजित की गई। प्रवचन में मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराजा ने कहा कि भगवान महावीर स्वामी ने केवल ज्ञान के बाद वैशाख सुदी ग्यारस को जैन शासन की स्थापना की। भगवान महावीर ने कठोर तप करते हुए सम्पूर्ण दुनिया को सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य के साथ जीवन जीने का महामार्ग प्रदान किया। हमें उनके बताए मार्ग का अनुसरण करने की आवश्यकता है। वर्तमान दौर को देखते हुए भगवान महावीर की बताई बातें, सिद्धान्त व उपदेश बहुत ही प्रासंगिक हो गए हैं। ऐसे में हमें चिन्तन-मनन कर अपनी जीवन शैली में आवश्यक बदलाव की महत्ती जरूरत है। मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी ने जैन शासन के प्रति समर्पण की आवश्यकता की महत्ता बताई। श्री संघ के अग्रणी अलकेश जैन ने बताया कि प्रतिवर्ष जैन धर्मावलंबियों द्वारा जैन शासन स्थापना दिवस पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और विश्व शांति व कल्याण की कामना व भावना व्यक्त की जाती है। इस प्रसंग पर गुजरात भाजपा युवा मोर्चा के महामंत्री नरेशभाई देसाई, जैन संघ के अग्रणी धीरूभाई शाह, नितिनभाई मोरखीया, हसमुँखभाई धरू, अलकेश भाई

मारवाड़ी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में गुरु सेवक धर्मेन्द्र राजपूत का विशेष योगदान रहा और भव्या जैन, पूजा वोरा, मोनी जैन, लक्की जैन सहित बालिकाओं ने आकर्षक रांगोली बनाई।

## नैनावा श्रीसंघ का आभार

'शाश्वत धर्म' (हिन्दी मासिक) पत्र को जैन श्वे. श्रीसंघ, नैनावा (गुजरात) की ओर से सहायतार्थ उल्लेखनीय रकम प्राप्त हुई है जो महत्वपूर्ण है। एतदर्थ 'शाश्वत धर्म' परिवार आभार व्यक्त करता है।

– व्यवस्थापक 'शाश्वत धर्म'

## निर्धनता से मुक्ति दिलाई

महावीर मुक्तिपथ पर दृढ़ कदमों से बढ़े जा रहे थे तभी पीछे से उन्हें एक करुण पुकार सुनाई दी। उनके कदम ठिठक गए। पीछे मुड़कर देखा तो एक दुर्बल ब्राह्मण लाठी के सहारे गिरता-पड़ता दौड़ा आ रहा था। कुछ पल बाद ही वह महावीर के कदमों में आकर गिर पड़ा। उसकी आँखों से झर-झर आंसू बहने लगे। फिर लड़खड़ाती जुबान से वह बोला- 'मेरी सहायता कीजिए राजकुमार वर्द्धमान। मुझे कुछ दीजिए। मेरी निर्धनता दूर कीजिए।' वह बूढ़ा ब्राह्मण सोम शर्मा था, जो प्रायः उनसे दान-दक्षिणा लेने आता रहता था। वे भी आवश्यकतानुसार उसकी मदद करते रहते थे। उसकी हालत देखकर महावीर सहानुभूति से द्रवित हो गए। लेकिन आज देने के लिए उनके पास कुछ नहीं था। तभी उन्हें कंधे पर पड़े हुए दिव्य वस्त्र का ध्यान आया। उन्होंने उसे आधा फाड़कर सोम शर्मा को दे दिया। वह खुशी से भर उठा और उसे एक जौहरी के पास ले गया। जौहरी उसे देखकर बोला- 'इसका आधा भाग कहां है ? यदि तुम वह हिस्सा भी ले आओ तो मैं तुम्हें एक लाख स्वर्ण मुद्राएं दे सकता हूँ।

लालच में डूबा ब्राह्मण वापस महावीर के पीछे भागा और जहाँ-जहाँ वे गए, उनका पीछा करता रहा। लगभग एक साल बाद महावीर के कंधे का वह टुकड़ा गिरा तो सोम शर्मा उसे ले भागा और एक लाख स्वर्ण मुद्राओं में बेच दिया।

## सत्य का पालन

महात्मा गांधी के बाल्य जीवन की एक घटना है। कक्षा में स्कूल इंस्पेक्टर जाँच के लिए आए। शिक्षक अंग्रेजी पढ़ा रहे थे। इंस्पेक्टर सभी छात्रों से एक-एक कर पूछते। मोहनदास से उन्होंने 'केटल' शब्द का हिज्जे लिखने को कहा। शिक्षक इशारा कर रहे थे, लेकिन उन्होंने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इन्हें शिक्षक के इंगित पर लिखना असत्य का आचरण लगा। उन्हें जो आता था वह लिख दिया जो गलत था। इंस्पेक्टर के जाने के बाद शिक्षक ने उन्हें डाँट लगाई, लेकिन इन्हें कोई अन्तर नहीं पड़ा। इन्हें शिक्षक का झूठा व्यवहार अच्छा नहीं लगा।

# परिषद प्रांगण से

## पुण्य सम्राट के पुण्योत्सव पर नवयुवक परिषद द्वारा पाँच प्रकल्पों का शुभारम्भ

**मंदसौर।** पुण्य सम्राट आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चतुर्थ पुण्योत्सव पर अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद-राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा पंच प्रकल्पों का भव्य शुभारंभ किया गया।

**पंच प्रकल्प में - 1.** राजेन्द्रसूरि जयन्तसेन अल्पबचत योजना, **2. We Together** हम साथ-साथ हैं (बीमा योजना), **3.** पुण्य सम्राट साधार्मिक वात्सल्य निधि, **4.** कोविड-19 के मरीजों के लिए पुण्य सम्राट चिकित्सकीय सहायता योजना व वेक्सिनेशन से पहले रक्तदान जागरूकता अभियान। **5.** 81 दिवसीय आराधना शामिल है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरु ने बताया कि We Together (हम साथ-साथ हैं) योजना के अंतर्गत पाँच सौ-पाँच सौ साथियों का एक समूह बनाया जावेगा व किसी भी सदस्य के परिवार में अनहोनी होने पर उसे सभी सदस्यों द्वारा पाँच सौ रुपये की राशि एकत्र कर करीब 2 लाख 50 हजार की आर्थिक भेंट प्रदान की जावेगी।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा ने बताया कि पुण्य सम्राट साधर्मिक वात्सल्य निधि योजना के अंतर्गत समाज के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की मदद की जाएगी व उन्हें परिषद द्वारा आर्थिक सहयोग दिया जाएगा।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री राजेश वागरेचा ने अल्पबचत योजना के बारे में बताया कि इस योजना को प्रत्येक शाखा में क्रियान्वित किया जाएगा व स्थानीय स्तर के साथ केन्द्रीय परिषद भी इसका संचालन करेगी। योजना का मुख्य उद्देश्य स्थानीय स्तर पर राजेन्द्र सूरि ईजी मनी कार्यक्रम के तहत योजना से जुड़े सदस्यों को लघु ऋण प्रदान किया जाना है।

राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी श्री ब्रजेश बोहरा ने बताया कि 81 दिवसीय आराधना में प्रतिदिन जयंतसेन इक्कीसा का पाठ करना, जयन्तसेन सूरीश्वरजी द्वारा रचित 11

स्तवन को याद करना, गुरु मंत्र की एक माला का जाप करना, पुण्य सम्राट को प्रतिदिन गुरुवंदन, पुण्य सम्राट के जीवन चरित्र व उनके द्वारा रचित ग्रंथों का प्रतिदिन स्वाध्याय आदि धार्मिक गतिविधियों को पूर्ण करना होगा। राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री प्रफुल्ल जैन ने बताया कि पूर्व में संचालित पुण्य सम्राट चिकित्सकीय सहायता योजना में कोविड 19 के मरीजों को भी शामिल किया गया है ताकि इस विकट परिस्थिति में परिवार को आर्थिक सहायता मिल सके।

पंच प्रकल्पों को लेकर ऑनलाइन वर्चुअल बैठक जूम के माध्यम से की गई जिसमें सभी पदाधिकारियों ने अपने – अपने सुझाव दिए। सभी ने सर्वानुमति से पाँच प्रकल्पों को मूर्त रूप देने हेतु सहमति प्रदान की व इसका शुभारंभ हुआ। बैठक में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीनभाई बल्लू, सुशील गिरिया, कोषाध्यक्ष धरमचंद्र बोहरा, राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री अनिल दसेड़ा, अल्प बचत मंत्री प्रकाश तलेसरा, मंत्री शांतिलाल गोखरू, अतुल अदाणी, मुकेश जैन (नाकोडा), भरत भाई लाड़, मंत्री राजकमल जैन, शैलेश ओरा, दर्शन सेठ, प्रवीण डूंगरवाल, सहशिक्षा मंत्री भाविक माजनी आदि उपस्थित थे। बैठक संचालन राष्ट्रीय महामंत्री सुधीर लोढ़ा ने किया। आभार राष्ट्रीय मंत्री संजय कोठारी ने माना।

---

**रानापुर (ललित जैन)।** पुण्य सम्राट की चतुर्थ वार्षिक पुण्य सप्तमी के पावन अवसर पर साध्वीश्री चारित्रकला श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से महिला परिषद अहमदाबाद शाखा मीठा खली के सहयोग से नवयुवक परिषद मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय राणापुर के द्वारा 6 गायों को खरीदकर कत्लखाने जाने से रोककर श्री राज राजेन्द्र गौपाल गोशाला राणापुर में भेजा।

इस कार्य में परिषद अध्यक्ष पवन नाहर, दिलीप सालेचा, हितेश जैन आदि का सहयोग रहा। गौरतलब है कि मिठाखली अहमदाबाद की महिला परिषद के माध्यम से अब तक कुल 27 जीवों को खरीदकर कत्लखाने जाने से बचाया गया है।

---

## दक्षिण महिला परिषद द्वारा पांजरापोल को 7 लाख 7 हजार का दान

**मैसूर।** पुण्य सम्राट गुरुदेव की असीम कृपा से वर्तमान कोरोना काल में अ.भा. श्री राजेन्द्र दक्षिण प्रांत महिला परिषद के द्वारा मैसूर पांजरापोल सोसायटी को गौ माता एवं अन्य पशु-पक्षियों के आहार हेतु 7 लाख 7 हजार 700 रुपए की सहयोग राशि प्रदान की गई।

यह प्रोजेक्ट हमारे 4 वर्षों में किए गए

कार्यों का सबसे बडा प्रोजेक्ट है।

दक्षिण प्रांत महिला परिषद ने जो गायों के आहार हेतु इतनी अच्छी सहयोग धन राशि एकत्रित करने का लक्ष्य प्राप्त किया इस हेतु सभी बहनों की तहेदिल से अनुमोदना की गई एवं धन्यवाद दिया गया।

---

**हुबली।** अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की आमसभा कोरोना महामारी की वजह से 'वर्चुअल' रखी गई जो महिला परिषद की राष्ट्रीय संगठन मंत्री बबिता सालेचा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष प्रेमा गांधीमुथा, दक्षिण प्रांतीय अध्यक्ष उषा बेन, प्रांतीय मंत्री मिंटू जैन के नेतृत्व में हुई। जिसमें पदाधिकारियों ने परिषद के उद्देश्य के बारे में विस्तार से समझाया। साथ ही हुबली शाखा की नयी कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसमें सर्वसम्मति से पूनम जैन को अध्यक्ष, रेखा गांधी मुथा को उपाध्यक्ष, शोभा जैन को महामंत्री, शिकीता जैन को सहमंत्री, ललिता जैन कोषाध्यक्ष एवं शीला सेठ को प्रचार मंत्री की जिम्मेदारी दी गई। पूर्व अध्यक्ष मिंटू जैन ने अपने कार्यकाल में हुए कार्यों की जानकारी दी साथ ही नूतन कार्यकारिणी को बधाई दी।

**– संजय सेठ**

---

# ओलीजी में 9 दिन 9 टास्क

**रतलाम ।** महिला परिषद की अध्यक्ष श्री मंजु मेहता के नेतृत्व में सचिव श्री लेखनी पोरवाल तथा ममता तलेरा ने ओलीजी के समय 9 दिन 9 टास्क का आयोजन किया। जिसमें प्रथम दिन नमो अरिहंताणं की सामायिक के साथ 9 माला गिननी व नवपद जाप किया।

द्वितीय दिन नमो सिद्धाणं की 9 माला सामायिक के साथ तथा रात्रि भोजन, जमीकंद, लिलोत्री के त्याग के साथ कोई व्रत या तप। तीसरे दिन नमो आयरियाणं की 9 माला सामायिक के साथ, 27 बार गुरुजाप, गुरु गुणजयंत इक्कीसा व थाली धोकर पीना। चौथे दिन नमो उवज्झायाणं की 9 माला सामायिक के साथ, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ का जाप, एक विगई का त्याग। पाँचवे दिन नमो लोए सव्वसाहूणं की 9 माला। सामायिक के साथ तथा गुरुवंदन ।

छठे दिन ॐ नमो दंसणस्स की 9 माला सामायिक के साथ व श्री महावीर भक्ति। सातवें दिन नमो ज्ञानस्स सामायिक में 9 माला। आठवें दिन नमो चारितस्स की 9 माला सामायिक में तथा 27 उवस्सग्गहरं का जाप। नवें दिन नमो तपस्स की 9 माला सामायिक में।

महामारी की शांति के लिये भगवान शांतिनाथजी का 27 बार जाप व बड़ी शांति का पाठ अंतिम दिन धन्यवाद माना गया।

# श्री संघ सौरभ

## अनोप मंडल की खतरनाक गतिविधियाँ जैन समाज एक होकर प्रतिकार करें

राजस्थान में बालोतरा मुख्यालय पर विगत एक सौ वर्षों पूर्व अनोपदास नामक साधु ने जैनों के विरुद्ध अनोप मंडल गठित कर जैनों के विरुद्ध विषवमन प्रारंभ किया था। अनोप मंडल की पूर्व में गतिविधियाँ राजस्थान के जालोर, सिरोही, पाली जिलों तक सीमित थी लेकिन, अभी विगत महिनों से इसने अपनी गतिविधियों में खतरनाक तेजी ला दी है। इसने जुलूस निकाल तथा धरने देकर जैनों के विरुद्ध आपत्तिजनक वातावरण तैयार किया है। इसका देशभर में जैनों द्वारा विरोध किया जा रहा है। भारत सरकार व अपने प्रांत के मुख्यमंत्री को ज्ञापन भी भेजे जा रहे हैं। नई दिल्ली में सम्पूर्ण जैन समाज के संगठन, राष्ट्रीय जैन संगठन को गठित कर प्रतिकार की तैयारी की जा रही है। पूरे देश में प्रत्येक स्थान की जैन समाज को इस तरह हो रही घटनाओं पर ध्यान देकर जैन समाज की सुदृढ़ एकत्रता का परिचय देना चाहिए।

## अनोप मंडल के विरुद्ध ज्ञापन का प्रारूप

**सेवा में,**

**श्री नरेन्द्रजी मोदी**

**माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार**

**नई दिल्ली**

**विषयः–** अनोप मंडल के सदस्यों के द्वारा जैन धर्म के विरुद्ध किये जा रहे दुष्प्रचार व मंडल की असामाजिक गतिविधियों की जाँच करवाकर कठोर कार्यवाही की माँग।

**महोदय,**

अनोप मंडल एक जैन विरोधी संगठन है जो राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, कर्नाटक और उत्तरप्रदेश के ग्रामीण इलाकों में जैन धर्म, जैन साधु व साध्वियों के

खिलाफ लोगों के दिमाग में जहर घोलने का काम कर रहा है।

इन राज्यों में यह संगठन गाँव-गाँव जाकर प्रचार कर रहा है कि विश्व व भारत में आने वाली हर मानव निर्मित संकट व प्राकृतिक आपदा का एकमात्र कारण जैन लोग हैं।

जैनों के कारण ही भूकंप आते हैं, जैनों के कारण ही बाढ़ आती है, जैनों के कारण ही आतंकवादी हमले होते हैं, ग्लोबल वार्मिंग के पीछे भी जैन धर्मावलंबियों का हाथ है। यद्यपि इसकी कल्पना करना भी अटपटी बात है पर अनोप मंडल लगातार ऐसा प्रचार करके गाँव-गाँव में जैनों के विरुद्ध विद्रोह व हिंसा को उकसाने का कार्य कर रहा है। अनोप मंडल के लोग भोले-भाले ग्रामीण को भय, लालच व प्रलोभन देकर अपने संगठन में शामिल करते जा रहे हैं और जैन लोगों व जैन धर्म के खिलाफ दुष्प्रचार को निरंतर बढ़ावा दे रहे हैं। उनका कहना है कि जैन लोग, जैन साधु और जैनों के भगवान काला जादू करके अकाल लाते हैं, बाढ़ लाते हैं, बीमारी फैलाते हैं, स्वाइन फ्लू,एड्स, मलेरिया, लकवा, टाइफाइड आदि की उत्पत्ति जैनों ने की है और अब उनका दावा है कि कोरोना विषाणु जैसी वैश्विक महामारी भी जैनों द्वारा लाई गई है।

अनोप मंडल के मुकनराम का कहना है कि जैन समाज अपनी राक्षसी गतिविधियों को बरमूडा ट्राएंगल के 1000 फुट नीचे से संचालित करता है। यद्यपि उनके पास ऐसा सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण होंगे, ऐसा नहीं कहा जा सकता है।

अनोप मंडल का इतिहास व साहित्य पढ़ने से पता चलता है कि यह लोग जैनों की आर्थिक सम्पन्नता से ईर्ष्या करते हैं।

देखने में आया है कि अनोप मंडल ने कई स्थानों पर जैनों के खिलाफ हिंसा भड़काने की मुख्य भूमिका निभाई है। गत् 30-40 सालों में राजस्थान राज्य में इस संगठन के विरुद्ध अनेक मामले दर्ज हो चुके हैं, हाईकोर्ट के आदेश भी हुए हैं पर आज तक इस संगठन के विरुद्ध कोई ठोस कार्यवाही न होने से यह अपना विस्तार देश के अन्य राज्यों में कर रहा है। जैसा कि आप जानते हैं जैन मुनिगण व साध्वियाँ सदैव पैदल चलते हैं और गत् 5-10 वर्षों में गुजरात, राजस्थान व महाराष्ट्र आदि राज्यों में हुई सड़क दुर्घटनाओं में 150 से अधिक जैन साधु-साध्वियों की मृत्यु भी हुई है, इन दुर्घटनाओं में अनोप मंडल का हाथ होने से इंकार नहीं किया जा सकता है, इसकी जाँच करवाई जाए ताकि, सच्चाई दुनिया के सामने लाई जा सके। अनोप मंडल को कौन संचालित करता है, कौन

इनकी जैन समाज विरोधी गतिविधियों को चलाने के लिए इनको धन उपलब्ध करवाता है और कौन इनको राजनीतिक संरक्षण देता है। भारत सरकार को इसकी सीबीआई जाँच करवानी चाहिए।

**जैन समाज की मुख्य मांगें :-**

1. सीबीआई द्वारा अनोप मंडल की जाँच और जैन समाज के विरुद्ध भ्रामक प्रचार करने और सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने के लिए अनोप मंडल के मुकनराम को गिरफ्तार कर कठोर कानूनी कार्यवाही की जाए।
2. अनोप मंडल द्वारा संचालित वेबसाइटों, सोश्यल मीडिया खातों, ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्युब व किताब जगत हितकरणी को प्रतिबंधित किया जाए।
3. अनोप मंडल पर संपूर्ण भारत में पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।
4. भारत सरकार पद्विहारी जैन साधु-साध्वियों की सुरक्षा व जीवनरक्षा की व्यवस्था करे, इस संबंध में सभी राज्यों की पुलिस को निर्देश जारी करें।

आपके द्वारा त्वरित संज्ञान लेकर कार्यवाही किए जाने की अपेक्षा है।

धन्यवाद सहित,

**प्रतिलिपि :-** श्री अमितजी शाह, माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

## अनोप मंडल के अध्यक्ष जवाब दें

**जालोर/ पाली/सिरोही (बाड़मेर)।** जोधपुर के जैन जागरण मंच के श्री जयंतिलालजी हस्तीमलजी ओस्वाल ने कहा है कि हिन्दू संस्कृति में आप कौन से भगवान को मानते हो ? अनोप मंडल के संत मुकनराम माली बालोतरा की झोपड़ी में सनातन धर्म के एक भी भगवान की तस्वीर नहीं है। अनोपदासजी की जैन वाहिनी में ब्राह्मणों तथा राजपूतों के खिलाफ भी वर्णन किया गया है। छत्तीस कौम के हिन्दु भाइयों से हाथ जोड़कर विनती है कि अनोपदास के भक्तों से दूरी बनाये रखें। जैन समाज हर मुश्किल की घड़ी में आप सभी के साथ खड़ा रहा है। चाहे अकाल हो या कोरोना महामारी, जैन समाज जनता की भलाई के लिये ही है ?

वक्तव्य में पूछा गया कि यदि जैन साधु व बनिये कोरोना लाये तब इतने जैन लोगों की कोरोना में मौत कैसे हुई ? यदि हमारे पास मंत्र विद्या होती तो हम जैन भाइयों की इतनी मौतों को रोक सकते थे? ये पागलों जैसी बातें कर रहे हैं।

राणापुर। राजस्थान के कुछ इलाकों में जैन समाज के आचार्य, साधु, साध्वी महाराज के साथ अभद्र एवं हिंसक कार्यवाही करने के खिलाफ एवं कोरोना को जैन समाज की उपज बताने पर राजस्थान के मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन स्थानीय तहसीलदार रविन्द्र चौहान को सौंपा।

जैन समाज, ओसवाल समाज, मुनि सुव्रत संघ, अग्रवाल समाज के प्रमुख क्रमशः दिलीप सकलेचा, चन्द्रसेन कटारिया, पवन एम. अग्रवाल एवं जैन पत्रकार सुरेश समीर, मनोहर नाहर, प्रकाश

अग्रवाल तथा उपस्थित सदस्यों ने ज्ञापन दिया। कार्यक्रम का संचालन कमलेश नाहर ने किया तथा ज्ञापन का वाचन महेश जैन ने किया। इस अवसर पर पवन नाहर, दिलीप सालेचा, धर्मेन्द्र कटारिया, विश्वास जैन, कल्पेश नाहर आदि उपस्थित थे। – अवि सकलेचा

## श्रीमती सरोज जैन का निधन

इंदौर। अत्यंत जागरूक, कर्मठ, दानवीर, कर्त्तव्यनिष्ठ श्रीमती सरोज बहिन जैन का विगत 27 अप्रेल को दुःखद निधन हो गया। उनमें परिवार धर्म तथा स्वधर्मियों के प्रति तो वात्सल्य भाव था ही, जीव मात्र के प्रति करुणा भी व्याप्त थी। उनमें धार्मिक तथा सामाजिक सरोकारों का अनुपम संगम था। उनने अपने पति श्री चन्द्रसेनजी जैन के साथ श्री राजेन्द्रसूरि चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की एवं उसके माध्यम से एम्बुलेंस, सोलर कूलर, पानी की टंकी तथा बच्चों के लिये कम्प्युटर लेब, शौचालय आदि का निर्माण किया। बच्चों के लिये मेडिकल केम्प का आयोजन, पाठ्य सामग्री का वितरण आपकी देन रहे।

राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत आदि प्रदेशों से आपके पास सहायता की सूचना व मांग आती थी जिसे आप प्रसन्नता के साथ पूरी करती थीं। इंदौर में श्री राज राजेन्द्र जयंतधाम में आपने श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर निर्माण का लाभ लिया तथा पेढ़ी का निर्माण करवाया। भोजन शाला निर्माण में भी अच्छा

योगदान दिया। श्री मोहनखेड़ा, नाकोड़ाजी स्थित धर्मशालाओं में कमरों का निर्माण करवाया तथा धरमपुरी (इंदौर) में साधु-साध्वियों के ठहरने के लिये हाल का निर्माण करवाया। श्री राजेन्द्र जैन उपाश्रय में जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा में कायमी ध्वजा का लाभ लेकर परिवार व भावी पीढ़ियों को आराधना की विरासत दी। आपको पंच प्रतिक्रमण व स्नात्र पूजा कंठस्थ थे। उन्होंने बीस स्थानक तप, 45 वर्षों से मोक्षतप, रात्रि भोजन त्याग, जमीकंद त्याग आदि तप किये। श्रीमती सरोज जैन उच्च शिक्षित थीं। आपने वनस्पति शास्त्र में एम.एस.सी. की थी। आपने देश-विदेश में भ्रमण किया था। उन्होंने श्री कुमारपाल भाई के सहयोग से बच्चों के लिये संस्कार शिविर का आयोजन किया। श्रीमती सरोज जैन जैसी बहुमुखी प्रतिभावाली सक्रिय महिला के निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। 'शाश्वत धर्म' द्वारा श्रद्धांजलि।

**– अशोक श्रीश्रीमाल, इंदौर**

## श्रीमती सगरावत का निधन

**मंदसौर।** प्रसिद्ध लेखक तथा समाजसेवी पूर्व प्राचार्य श्री शांतिलालजी सगरावत की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी सगरावत का स्वर्गवास दि. 6 मई 2021 को हो गया। जिनका अंतिम संस्कार मुक्तिधाम पर किया गया। श्रीमती पुष्पादेवी सगरावत मिलनसार, धर्मनिष्ठ, सक्रिय महिला थीं। पूरे मौहल्ले में किसी के भी कोई कार्य आता वे पहुंच कर पूरा सहयोग करती थीं। घर-घर में उनकी लोकप्रियता थी। उनके निधन से शोक छा गया। वे अपने पीछे पति, पुत्र, पौत्रादि भरापूरा परिवार छोड़ कर गई हैं। त्रिस्तुतिक समाज तथा इसकी इकाइयों द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 'शाश्वत धर्म' द्वारा श्रद्धांजलि।

## श्री बाफनाजी नहीं रहे

**राजगढ़।** परम गुरुभक्त श्री मोहनलालजी बाफना का देहावसान हो गया। परम गुरुभक्त बाफनाजी का राजगढ़ बस स्टैंड पर स्थित परिषद भवन (पुराने) में महावीर टेंट हाउस था। आप दानमलजी बाफना के अनुज व स्व. हीरालालजी तातेड़ (बंगाली) टांडा के दामाद थे।

कुक्षी(स्वस्तिक जैन)। तीर्थंकर भगवान महावीर प्रभु के जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रातः से नगर में महात्मा गांधी मार्ग पर स्थित महावीर स्वामी मंदिर में पक्षाल व पूजन के लिए भक्तजन पधारे जिन्होंने कोरोना गाइडलाइन का पालन करते हुए प्रतीकात्मक पूजन किया। पश्चात् सीमंधर स्वामी मंदिरजी से शांति पूर्वक कतार में लगकर भगवान महावीर प्रभु का समाजजन द्वारा प्रतीकात्मक वरघोड़ा शा. गुलाबचंदजी की स्मृति में निकाला गया। समाजजन ने आपके घर के सामने गहुंली कर प्रतिमा को अक्षतों से वधाया। पश्चात् स्नात्र पूजन व पंचकल्याणक पूजन पढ़ायी गये। रात्रि में आरती की गई। रविवार को कोरोना निवारणार्थ नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया।

## डांगी परिवार सरसी द्वारा विशिष्ट धार्मिक आयोजन

जावरा। नगर में समकित परिवार के माध्यम से 125 तपस्वी वर्षीतप की सामूहिक आराधना कर रहे हैं और बहुत ही सुन्दर व्यवस्था एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम के साथ तपस्वियों के पारणे कराए गए हैं। जिसकी सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है।

इसी श्रृंखला में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ सरसी के वरिष्ठ श्री बाबूलालजी, श्रीमती मोहनदेवी डांगी ने अपने पुत्र श्री संजय डांगी एवं पुत्रवुध श्रीमती सपना डांगी के प्रथम वर्षी तप के उपलक्ष्य में चैत्रवदी अष्टमी श्री आदिनाथ भगवान के जन्म एवं दीक्षाकल्याणक के शुभदिवस तपस्वियों को संघ के रूप में जावरा से प्राचीन जिनमंदिर रोजाना, श्री पार्श्व पद्मावती धाम एवं श्री नेमिनाथ जिनमंदिर रिंगनोद ले जाया गया।

लाभार्थी परिवार द्वारा ग्राम रिंगनोद पार्श्व पद्मावती धाम पर श्री नव्वाणु प्रकार की पूजन आयोजित की गई। पूजन जावरा के संगीतकार आशीष जैन एंड पार्टी द्वारा पढ़ाई गई। सभी तपस्वी इस माहौल में झूम उठे एवं प्रभु के सामने नृत्यकर अपने

आनंद को प्रकट किया।

सायं 4 बजे मंदिरजी प्रांगण पर ट्रस्ट मण्डल व अन्य द्वारा श्री बाबुलालजी, संजयजी, मोहनदेवी, सपनाजी एवं जय, विधि डांगी का बहुमान किया गया। तत्पश्चात सभी तपस्वियों का सामूहिक बिआसना सम्पन्न हुआ। डांगी परिवार द्वारा आयोजित स्वामी वात्सल्य में पधारे आमंत्रित मेहमानों ने भाग लिया। रात्रि का आयोजन डांगी परिवार द्वारा किया गया एवं अंत में समकित सदस्य संजय डांगी ने आभार माना।

## सरोजजी गोखरू नहीं रहीं

इंदौर। एक उदारमना, धर्म के प्रति सम्पूर्ण निष्ठा, सामाजिक कार्यों में अग्रणी, गुरुदेव के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से युक्त श्रीमती सरोज बेन का देहावसान, परिवार, संघ व समाज के लिए अपूर्णनीय क्षति है।

धार रोड़ स्थित श्री राजेन्द्र जयंत धाम तीर्थ विकास विशेषकर गुरु मंदिर निर्माण, प्राण प्रतिष्ठा, गुरु मूर्ति भरवाना, वेदीजी निर्माण सभी में आपका अविस्मरणीय सहयोग रहा। पेढ़ी, भोजनशाला और भी अन्य स्थानों पर अमूल्य योगदान रहा। पूज्य पुण्य सम्राट का आप व आपके परिवार पर वरद हस्त था। गुरुदेव की प्रेरणा से धार्मिक कार्यों में लाभ लेते रहते थे। इंदौर राजेन्द्र उपाश्रय जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा अवसर पर कायमी ध्वजा का लाभ भी आपके परिवार को मिला है। लक्ष्मी का सद्कार्यों में भरपूर उपयोग करती थीं। नवयुवक परिषद ने श्रद्धांजलि अर्पित की। है।

+ अशोकश्रीश्रीमाल, इंदौर

## राजेन्द्र सूरी शोध संस्थान ने चार हफ्ते में किया 113 लोगों को क्वारेनटाईन

उज्जैन। सेवा का पर्याय जैन समाज का गौरव बन चुका है। उज्जैन का श्री राजेन्द्र शोध संस्थान जिसे उज्जैन प्रशासन द्वारा कोरोना का क्वारेनटाईन सेंटर बनाया गया था। और अब तक 113 व्यक्तियों को यहाँ पर क्वारेनटाईन किया जा चुका है। कुछ लोगों की कोरोना रिपोर्ट पोजेटिव आने पर उनको यहाँ से चिकित्सालय शिफ्ट किया गया है।

पुण्य सम्राट श्रीमद् जयंतसेन सूरिश्वरजी द्वारा स्थापित राजेन्द्र शोध संस्थान, उज्जैन ने इस महामारी के कठिन समय में योगदान दिया है और सही मायनों में मानव सेवा का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस संस्थान के 36 कमरों में उन

लोगों के परिवार को रखा जा रहा है जो कोरोना पोजेटिव पाए गए। उन परिवारों को संक्रमण का खतरा अधिक होने की वजह से उन्हें यहाँ क्वारेनटाईन करके अन्य लोगों को संक्रमित होने से बचाया जा रहा है। उन परिवारों को यहाँ पौष्टिक आहार, गर्म पानी व चिकित्सा सेवा दी गई है। जिससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़े। चिकित्सक और मेडिकल टीम भी यहाँ तैनात है।

---

**बालोतरा।** लम्बे समय से अनूप मण्डल द्वारा जो भ्रामक प्रचार जैन साधु संतों के विरुद्ध किया जा रहा है उसकी कड़ी निंदा एवं कार्यवाही की मांग करते हुए जैन समाज की प्रमुख संस्थाएँ- जैन नवयुवक मण्डल, महावीर युवक संघ, जैन सोश्यल ग्रुप, श्री जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक युवक संघ, तेरापंथ युवक परिषद् एवं जैन राइजिंग ग्रुप ने रोष व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री के नाम से श्रीमान उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन दिया। जिसमें मुख्यमंत्रीजी एवं जिला कलेक्टर एवं उपखण्ड अधिकारी से निवेदन किया कि जल्द से जल्द ऐसे भ्रामक प्रचार फैलाकर समाज में हिंसा पैदा करने वाले संगठनों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही हो और साथ ही ऐसे भडकाऊ संगठनों के पीछे किसका हाथ है और कौन इनको फंड मुहय्या करवाता है इसकी भी उच्च स्तरीय जांच करवाने की मांग रखी।

---

**राणापुर।** श्री सुविधिनाथजी श्री सीमंधर स्वामीजी जैन मंदिर पर संघ स्थापना दिवस के अवसर पर ध्वजा रोहण किया गया। प्रातः प्रभु पक्षाल, पूजन एवं आरती कर संघ प्रमुख दिलीप सकलेचा द्वारा ध्वज वन्दन किया गया।

---

## श्रीमती चौधरी का निधन

**राणापुर।** पुण्य सम्राट श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराजा के परम उपासक, ओसवाल समाज के पंच श्री प्यारचन्दजी चौधरी की धर्म पत्नी श्रीमती गुलाबबाई का लम्बी उम्र में निधन हो गया।

श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी एवं श्रीमद् जयंतसेन सूरिजी के चातुर्मास में अपना अहम दायित्व निभाने वाले चौधरी परिवार की श्राविका गुलाबबाई को पुण्य सम्राट गुलिजिजी के नाम से सम्बोधित करते थे। प्रारम्भ से ही धार्मिक आयोजन और जप-तप में हमेशा अग्रसर रहती थीं। सरल स्वभावी गुलाबबाई के निधन से समाज ने

एक धर्मनिष्ट महिला को खो दिया है।

श्रीमती गुलाबबाई के निधन पर श्री सुविधिनाथजी, श्री सीमंधर स्वामीजी, श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी मंदिर के वहीवटकर्ताओं, समाज प्रमुखों ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पुत्र ऋषभ, मुकेश, सुदर्शन को श्रीमती चौधरी की तरह धार्मिक आयोजनों में सक्रिय रहने का निवेदन किया।

## कांतिलालजी जैन का निधन

**बड़नगर।** समाज के अग्रणीय तथा प्रतिष्ठित श्री कांतिलालजी जैन का विगत 10 मई 2021 को स्वर्गवास हो गया। उनका अंतिम संस्कार रतलाम में कोरोना प्रोटोकॉल के अनुसार किया गया।

आप विधायक श्री चेतन्यजी काश्यप के श्वसुर तथा श्री नीताजी काश्यप के पिताजी थे।

आप स्व. श्री सेवारामजी के सुपुत्र तथा श्री मनोहरलालजी के बड़े भाई व स्व. शांतिलालजी के छोटे भाई थे। रीताजी जेनावत तथा मीताजी जैन भी आपकी सुपुत्रियाँ हैं। 'शाश्वत धर्म ' द्वारा श्रद्धांजलि।

## दो सौ जलकुंडी का वितरण

**चैन्नई।** तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक दिवस पर वेपेरी बैंटैक स्कूल की अध्यापिकाओं ने पक्षियों को जल पिलाने के 200 जलकुंडी विभिन्न इलाकों में वितरित किये।

एक्सनोरा अहिंसा के सचिव श्री फतेहराज जैन ने जीवदया के महत्व पर प्रकाश डाला।

## साध्वीजी पर हमला

**रतनपुर।** विगत 8 जून को गुजरात-राजस्थान बॉर्डर पर रतनपुर से लगभग 8 किलोमीटर दूर रात करीब 11.30 बजे 15-20 आदमियों के एक टोले ने स्कूल में रात्रि विश्राम हेतु जहाँ साध्वीजी म.सा. विराज रहे थे उन पर धारदार हथियारों से हमला करने की कोशिश की। लेकिन स्कूल का दरवाजा महासतीजी म.सा. ने अंदर से बंद कर दिया था। उन लोगों ने दरवाजा तोड़ने का काफी प्रयास किया। लेकिन दरवाजा नहीं टूट सका। महासतीजी म.सा. के साथ में सेवक, ड्राइवर को बहुत पीटा। बहुत बुरी तरह मारा। रात को एक म.सा. के साथ एक लेडीज सेवा में थी उन्होंने नज़दीकी श्रावकों को व उदयपुर फोन कर दिया था। श्रावक उनकी सेवा में रात को 2.30 बजे उदयपुर से पहुँच गये। बाकी श्रावक भी घटना स्थल पर पहुँच गये थे। पुलिस भी रात 1 बजे तक पहुँच गई थी। अगर दरवाजा टूट जाता तो बहुत बड़ी घटना हो जाती ।

# जैन विश्व

* जैन समाज के वरिष्ठ आचार्य श्री महाश्रमणजी का भीलवाड़ा, आचार्य श्री शिवमुनिजी का सूरत तथा आचार्य श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म. का सूरत में चातुर्मास होगा।
* कर्नाटक में जामखंडी के निकट हलिंगली में भगवान आदिनाथ तथा भगवान श्री महावीर स्वामी की एक संयुक्त अर्ध सांड व अर्धसिंह लेखन की प्राचीन प्रतीमा मिली है। यह ईसा की दूसरी या तीसरी शताब्दी की है। इसे आदिवीर भगवान की प्रतिमा कहा जाता है।
* आर.के. मार्बल के स्वामी श्री अशोक पाटनी ने किशनगढ़ (राजस्थान) में बहुत विशाल ऑक्सीजन प्लान्ट का निर्माण प्रारंभ करवा दिया है। इस पर सैकड़ों करोड़ रुपये व्यय होंगे।
* टाईम्स ग्रुप की चेयरपर्सन श्रीमती इंदु जैन का 84 वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया है। यह भारत का सबसे बड़ा मीडिया ग्रुप है।
* मद्रास विश्वविद्यालय ने अपने दीक्षांत समारोह में तीन जैन विद्वानों डॉ. सुभाष जैन, डॉ. एच. कुशलचंद छाजेड़ व डॉ. राजल बरूडिया को जैन विषयों में शोध करने पर पी.एच.डी. की उपाधी दी।
* केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग ने एक नोटिफिकेशन जारी कर आदेशित किया है कि जैन साधु-साध्वियों को बिना आई.डी. प्रूफ के वैक्सीन लगाई जाय।
* राजस्थान में सांचोरी पट्टी के जैनों के लिये दो योजनाएँ चालू की गई हैं। पहली जरूरतमंद जैन को 2 से 5 लाख का लोन पाँच वर्षों तक बिना ब्याज दिया जायेगा। दूसरी प्रति जरूरतमंद परिवार को दैनिक सामान व दवा के लिये 29 हजार तक का सहयोग दिया जायेगा।
* नाकोड़ा तीर्थ ट्रस्ट ने कोरोना महामारी में बाड़मेर, सिणधरी, सिवाणा, मोकलसर, बालोतरा, समदड़ी, सुमेदपुर आदि स्थानों पर 50 आक्सीजन मशीनें भेजीं।

# शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
  भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सरत

# अनोप मंडल के विरूद्ध पूरे देश के जैन समाज में आक्रोश

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२००७

बालोतरा (राजस्थान) से आश्रम चलाकर अनोप मंडल ने दूर–दूर तक जैनों के विरूद्ध हिंसा तथा नफरत फैलाने का कार्य किया है। उसने सोश्यल मिडिया विशेषतः ट्विटर, फेस बुक, वाट्सअप, यू–टयूब पर भी जैन साधु–साध्वियों के लिये गंदा तथा भ्रामक प्रचार किया है। इसके कृत्यों की सम्पूर्ण जैन समाज में तीव्र निन्दा है। अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए पूरे देश में सकल जैन समाज के बेनर तले एकजुट होकर विरोध किया जा रहा है तथा सम्बन्धित जिला प्रशासन को ज्ञापन देकर अनोप मंडल पर प्रतिबंध लगाने, उसका साहित्य जब्त करने एवं उसके पदाधिकारियों को गिरफ्तार करने की मांग की जा रही है। राष्ट्रीय जैन संगठन के आह्वान पर पूरे देश में 23 जून को ज्ञापन देने का क्रम हुआ।

- अहमदाबाद में सम्पूर्ण जैन समाज ने अनोप मंडल की भर्त्सना की है तथा शासन से कठोर कदम उठाने का आह्वान किया है।
- जैसलमेर में सभी जैन संस्थाओं तथा मंडलों द्वारा जिला कलेक्टर श्री आशीष मोदी को ज्ञापन दिया गया जिसमें अनोप मंडल पर प्रतिबंध लगाने, उसके पदाधिकारियों को गिरफ्तार करने व उसका साहित्य जब्त करने की मांग की गई।
- चित्तौड़गढ़ में वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ द्वारा जिला कलेक्टर श्री ताराचंद मीणा को अनोप मंडल के विरोध में ज्ञापन दिया गया।
- मंदसौर में सकल जैन समाज के प्रतिनिधियों ने संयुक्त कलेक्टर श्री बी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सकल जैन समाज के अध्यक्ष श्री मंगेश भाचावत एडवोकेट ने दिया, जिसका वाचन संयोजक श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने किया।
- नागदा में जैन सकल श्रीसंघ ने एसडीएम तथा सीएसपी को अनोप मंडल के विरूद्ध ज्ञापन दिया।
- इंदौर में कई जैन संस्थाओं ने अनोप मंडल के विरूद्ध जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया।
- रतलाम में सकल जैन संघ द्वारा अनोप मंडल के विरुद्ध एस.डी.एम. को ज्ञापन दिया गया।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
ए/RNP/MP/MANDSAUR/113/ 2021-23
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष - 68, अंक 6 कुल पृष्ठ कवर सहित - 96

|| श्री महावीर स्वामीन नमः ||
|| प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ||

## गच्छाधिपति नित्यसेन सूरि

श्री

**श्री पेपराल तीर्थ**

दि. 4.05.2021

धर्म श्रद्धान्वंत परम गुरुभक्त, दानवीरों, भामाशाहों
धर्मलाभ !
दान से दीनता नष्ट होती है।
दान से दुआओं की गंगा प्रवाहित होती है ।
दान से भगवान महावीर के वचनों की पूजा होती है।

आज इस कोरोना की वैश्विक महामारी में जो भी भाग्यशाली अपनी पुण्यानुबंधी पुण्य राशि का सदउपयोग कर जरूरतमंदों के लिये साहस तथा हिम्मत कर दान गंगा को अपने हाथों से प्रवाहित कर रहे हैं । मुझे रोज समाचार मिल रहे हैं कि पुण्य सम्राटश्री के वचनों को जिसने भी स्वीकार किया है दान के रूप में सहायता के रूप में, सेवा समर्पण के रूप में आत्मसात किया जैसे कोई आक्सीजन की व्यवस्था में धन दे रहा है, कोई कोविड सेण्टर खुलवा रहा है, कोई राशन और भोजन, पानी की व्यवस्था कर रहा है। नाम किसका लिखूँ सब भामाशाहों को खूब अन्तर से धर्मलाभ एवं आशीर्वाद । इस तरह अपनी पूण्य लक्ष्मी का सद्उपयोग कर गुरु, गच्छ, संघ, समाज तथा जिन शासन की गरीमा को बढ़ाने, शासन प्रभावना करें।

मन खूब प्रसन्न और भावुक है, धन्य है गुरुभक्तों को ।

वि. नित्यसेन सूरि का
धर्मलाभ

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001